



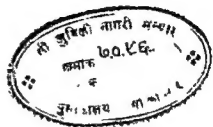
२१८  
कहानी



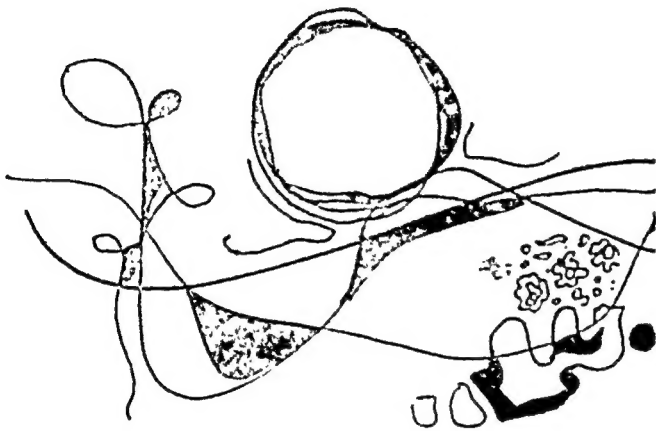
११/१०/५६  
११



२१८  
महाजी



पेपावेट



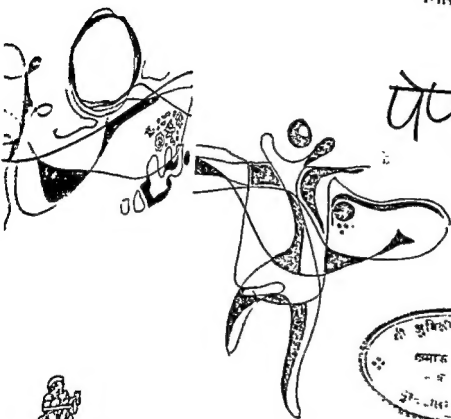
राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६

पटना-६

२१८  
कहानी

गिरिराज किशोर



# पेपरवेट



ममल प्रकाशन

पृष्ठ १-६

© १९६७, गिरिराज किशोर, कानपुर

प्रथम संस्करण : १९६७

प्रकाशक :

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

८, फ्रैंच वाजार, दिल्ली-६

मूल्य : ३.५०

मुद्रक :

नवीन प्रेस

नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

‘पेपरबैट’ में १९६२ और १९६६ के बीच की ही कहानियाँ हैं। १९६६ के उत्तरार्ध के बाद की कहानियाँ अगले कहानी संग्रह में देने की मान है।

१९६६ के उत्तरार्ध के बाद जो कहानियाँ लिखी गई हैं उनकी लिखते समय में बराबर महसूस करता रहा हूँ कि कहानियाँ लिखना धीरे-धीरे कठिनतर होता जा रहा है। इसका कारण जीवन के उलझाव और कंठाएँ तो हैं ही, साथ ही अपनी दृष्टि भी है जो अपनी ही अन्वेषक बनती जाती है और निरममता के साथ सदा घोरकाड़ करती रहती है। जब व्यक्ति यह जानता रहता है कि उसके अपने ही अन्दर एक ऐसा काँटा लगा हुआ है, जो कुछ भी वह करता है उसका लेखा-जोखा उस कटि पर आता रहता है, तो समस्याओं का कोई ओर-छोर नहीं रहता।

इस संग्रह की कहानियों के बारे में कुछ कहना उचित नहीं लगता क्योंकि जब कहानियाँ ही सामने हैं तो उनके बारे में केसक का कुछ कहना कितना निरर्थक होगा।

कानपुर विश्वविद्यालय,  
कानपुर

गिरिराज विश्वा







मीरा को

## क्रम

चूहे	६
पगडंडियाँ	२५
नया चश्मा	३७
अलग-अलग कद के दो आदमी	४५
परछाइयाँ	५८
तिलिस्म	६६
संगत	७६
निमंत्रण	८४
फाँक वाला घोड़ा, निकर वाला साईस	९५
पेपरवेट	१०४

## चूहे

आमा बीने से बी । लड़िका बन्दे के  
 हावाले में हटकर चुन्नी पर जा बैठी ।  
 घुटने मोड़कर बैठ में गला गिरा ।  
 हिल-हिलकर चुन्नी आवाज में पड़ने  
 लगी, "मिमावर्दे का डण है कि लकाव  
 दाकी लोलापरी..." लखने वाली  
 मिडकी का हावाला बोला-गा गिरा  
 बाने लख लोला । आमा लगी के  
 बन्दे की ओर का गूरी बी । लखने  
 आवाज और मेड कर दी ".....लका-  
 मिड आमा का लोलापरी लख  
 लोलापरी लकावरी का लका-लका  
 है..." लगी लोलापरी लखने लोलापरी  
 लका लोलापरी । लका-लका लख लका  
 लोलापरी लगी बी ।

आमा लोलापरी के बी । लोलापरी के  
 लका-लका लगी बी । लखने-लका है  
 लोलापरी के का लगी बी — लोलापरी  
 लका लका लकावरी है लकावरी के लगी,  
 लोलापरी लका है लोलापरी के लोलापरी

चूहे  
पगडंडियाँ  
नया चश्मा  
अलग-अलग कद के दो आदमी  
परछाइयाँ  
तिलिस्म  
संगत  
निमंत्रण  
फ्रॉक वाला घोड़ा, निकर वाला  
पेपरवेट

लिए बिमने कहा, जाइए यहाँ से ।' लेकिन उसने कुछ धीमी आवाज में कहा, "किसने कहा था इतने पैदा करने के लिए ?"

अम्मा उसकी बात का जवाब देने के बजाय सविता की कुरसी के पास आ सहो हुईं। शण-अर के लिए सविता का चेहरा हिले हुए पानी की सनह-सा हो गया। अम्मा ने उसकी ओर एक नजर देखा और फिर बोली, "चल, ऊपर चल। पढ़ना ही है तो ऊपर चलकर पढ़ना। इस समय यहाँ नहीं बैठने दूंगी। यहाँ अकेली..." बोलती-बोलती वे रुक गईं।

उमकी नाक की दुस्ती मुखें हो गई थी। दुडू के नीचे का भाग काँप रहा था। रुककर बोली, "अम्मा, जिस तरह की बातें आप कर रही हैं, इस मयका क्या उन छोटी-छोटों पर अच्छा असर पड़ेगा ? पूरे साल तो घर का ही काम किया है, फरवरी का महीना आ गया... पढ़ूँ या न पढ़ूँ ! कहिए किताबों में आग लगा दूँ..." अम्मा का पारा चढ़ता जा रहा था। सविता बिना रुके बोलती रही, "मैं तो बुरी हूँ ही, इन छोटियों को देखिएगा, क्या आसमान के तारे तोड़-तोड़कर लाती हैं ! वह बेचारा रंजी नोट्स-नोट्स लाकर दे देता है, बही आँसो में खटकता है !"

"अच्छा, क्यादा चबड़-चबड़ मत कर, बड़ा आमा बेचारा। धुरु मे सब बेचारे ही होते हैं। मैं अब जानती हूँ, तुम दोनों कैसे बेचारे हो ! हमने भी दुनिया देखी है।"

सविता जोर से हँस दी। हँसती हुई ही बोली, "अच्छा बाबा, हम सबसे बुरे हैं, अब तो पीछा छोड़िए।"

अम्मा के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव आ गया था कि सविता के गाल पर बिना चपत बड़े नहीं मानेंगी। बड़े जोर से दाँत चिचकिचाए। गविना ने तुरन्त गम्भीर होकर कहा, "मैंने कब कहा था, मुझे कॉलेज में पढ़ने भेजिए, अपने-आप ही तो पढ़ने भेजा। मुझे कुछ करना होगा तो कॉलेज में नहीं कर सकती, पता भी नहीं चलेगा।"

"यहाँ पाढ़े जो करती घूम, यहाँ नहीं हो सकता। यहाँ मैं जैसा

आठ चलते-फिरते नजर आते हैं। सबको पलंग पर ही बैठे-बैठे पानी का गिलास चाहिए, मैं ही नौकरानी की तरह घूमती रहती हूँ..." उन्होंने जोर से रानी को पुकारा—"ऐ रानीॐ, तू ही मर जा आकर..." कमरे की ओर तिरछी नजरों से देखकर कहा, "तुझे तो इसी समय एम्मए पास नहीं करना—जब एम्मए करेगी तभी इतने नखरे दिखाइयो।"

सविता दांत भींचकर हलके-से मुसकरा दी।

पन्ना पलटकर उसने 'ग्रुप्स' पढ़ने शुरू किए—"ग्रुप्स या समूह दो तरह के होते हैं, एक वे जो सीधे सम्बन्ध यानी 'डाइरेक्ट कॉण्टैक्ट' के आधार पर बनते हैं, जैसे परिवार, पड़ोसी..." पढ़कर उसने फिर बाहर की ओर झाँका, अम्मा शायद उसके कमरे से बिल्कुल सटी खड़ी थीं। किसी से बात करने का प्रभाव उत्पन्न करते हुए धीमे से कहा, "जैसे प्रेमी-प्रेमिका अम्मा-बाबूजी।" होंठ जरूरत से ज्यादा फैल गए।

आगे पढ़ना शुरू किया—"दूसरी तरह का ग्रुप वह होता है जिसका आधार परोक्ष-सम्बन्ध या इन-डाइरेक्ट कॉण्टैक्ट होता है, जैसे नगर, राष्ट्र आदि।" अन्तिम वाक्य कहते-कहते वह फुसफुसाने लगी थी।

अम्मा ने ढुके हुए दरवाजे को ढकेलते हुए पूछा, "ए सविता, कौन है ? रंजी ?" सविता ने झुंझलाने के स्वर में कहा, "यहाँ कहीं है रंजी, हर वक्त मेरे ही पास बैठा रहता है न।"

"नाक पर मक्खी नहीं बैठने देती, पूछा ही तो था। माँ-बाप हैं तो पूछेंगे ही, हमारा भी तो फरज है बेटा-बेटी को ऊँच-नीच से रोकें..."

सविता ने अपनी गम्भीरता बनाए रखते हुए कहा, "अच्छा, मुझे लेक्चर न पिलाइये, पढ़ने दीजिए।"

"ऐ बेटा, पढ़ना ही पढ़ना तो है नहीं। घर का काम-काज भी देखना है... तू कमवस्ती के घर में पैदा नहीं हुई, छोटे बहन-भाई भी तुझे ही देखकर रंग बदलेंगे। शाम का समय हो गया, चलकर ऊपर बैठ। तू अकेली होती तो कुछ करती-घूमती, मैं रोकती तो कहती।"

सविता के चेहरे से लगा, चिल्लाकर कहेगी—"आपको यहाँ आने के

लिए किसने कहा, जाइए यहाँ से।' लेकिन उसने कुछ धीमी आवाज में कहा, "किसने कहा या इतने पैदा करने के लिए?"

अम्मा उसकी बात का जवाब देने के बजाय सविता की कुरसी के पास आ खड़ी हुई। लण-अर के लिए सविता का चेहरा हिले हुए पानी की सतह-सा हो गया। अम्मा ने उसकी ओर एक नजर देखा और फिर बोली, "चल, ऊपर चल! पढ़ना ही है तो ऊपर चलकर पढ़ना। इस समय यहाँ नहीं बैठने दूँगी। यहाँ अकेली..." बोलती-बोलती वे रुक गई।

उसकी नाक की दुस्ती मुख हो गई थी। ठुड़ी के नीचे का भाग काँप रहा था। रुककर बोली, "अम्मा, जिस तरह की बातें आप कर रही हैं, इस सबका क्या उन छोटों-छोटों पर अच्छा असर पड़ेगा? पूरे साल तो घर का ही काम किया है, फ़रवरी का महीना आ गया... पढ़ूँ या न पढ़ूँ! कहिए किताबों में आग लया दूँ..." अम्मा का पारा चढ़ता जा रहा था। सविता बिना रुके बोलती रही, "मैं तो बुरी हूँ ही, इन छोटियों को देखिएगा, क्या आसमान के तारे तोड़-तोड़कर लाती हूँ। वह बेचारा रंजी मोद्म-बोद्म लाकर दे देता है, वही आँखों में खटकता है!"

"अच्छा, यपादा चवड़-चवड़ मत कर, बड़ा आया बेचारा। शुरू में सब बेचारे ही होते हैं। मैं मक्ख जानती हूँ, तुम दोनों कैसे बेचारे हो! हमने भी दुनिया देसी है।"

गविता जोर से हँस दी। हँसती हुई ही बोली, "अच्छा बाबा, हम सबसे बुरे हैं, अब तो पोछा छोड़िए।"

अम्मा के चेहरे पर कुछ ऐसा भाव आ गया था कि सविता के गान पर बिना थपत जड़े नहीं मानेंगी। बड़े जोर में दौत रिचकिचाए। सविता ने तुरन्त गम्भीर होकर कहा, "मैंने कब कहा था, मुझे कनिज में पढ़ने भेजिए, अपने-आप ही तो पढ़ने भेजा। मुझे कुछ करना होगा तो कनिज में नहीं कर सकती, पता भी नहीं चलेगा।"

"यहाँ चाहे जो करती घूम, यहाँ नहीं हो सकता। यहाँ मैं..."



पाहुँगी यँगा ही होगा, यह बतलाए देनी हूँ। अपनी ओर बच्चों की हिम्मती सराव नहीं होने दूँगी।" सविता फिर हँसने को हुई, लेकिन अपने-आपको गम्भीर बनाए रखते हुए कहा, "आपके बच्चों को क्या हुआ जा रहा है, मुझसे ऐसा ही बनग है नां मेरा गला घोट दीजिए।" उनमें अपनी गरदन अम्मा के नामने झुका दी। कमकियों से उनकी ओर देरती रही।

अम्मा स्तब्ध-सी खड़ी रह गई थी। फिर रोनी आवाज में बोलीं, "तू क्या कहती है बेटी, मेरा भाग ही सराव है। मुझे गला ही घोटना होता तो पैदा करते ही अँगूठा रख देती। पैदा किया है तो घर-बाहर सबकी सुनूँगी। मैं तेरे बीच में बोलूँ तो तू जूते मारना..." वे बड़बड़ाती हुई बाहर निकल गई।

सविता फिर अपनी कुरसी पर जा बैठी। पलकों बन्द करके दिमाग को आराम देने का प्रयत्न किया। आँखें बन्द किए-ही-किए, उसके चेहरे पर उलझन का-सा भाव आ गया। अम्मा बाहर सहन में ही मौजूद थीं। इधर-से-उधर चक्कर काट रही थीं। सविता चुपचाप बैठी रही, सुली किताब बन्द कर दी। कुछ देर बाद अम्मा ने पुकारकर कहा, "मैं चल रही हूँ, कुछ शर्म-लिहाज हो तो ऊपर आ जाना।" जीने तक जाकर वे लौट आई और कमरे की खिड़की के सामने खड़े होकर बोलीं, "किसी दिन तेरे उस चहेते को घर से बाहर न कर दिया तो मेरा भी नाम नहीं..." फिर कहती फिरेगी, मेरी बेइज्जती कर दी।" अम्मा फिर धम्म-धम्म करती जीने पर चढ़ गई।

सविता ने खिड़की का दरवाजा और खोल दिया। अपने तनाव को कुछ कम करने के लिए वह बार-बार आँखें बन्द कर लेती थी। कभी-कभी पलकों के कस जाने पर, छोटी-छोटी लहरें उभर आती थीं। थोड़ी देर बाद पुस्तक पढ़ने का प्रयत्न किया। उसका वह प्रयत्न बनावट-सा लगा। लाचार होकर किताब एक ओर रख दी। दोनों हाथ खड़े करके, नथेलियों पर ठुड्डी रख ली और दरवाजे की ओर देखने लगी। उसके

चेहरे की ऊब और अन्दर का तनाव, दोनों ही काफ़ी स्पष्ट थे ।

दस-मन्द्रह मिनट तक उसी तरह बैठे रहने के बाद वह उठ खड़ी हुई । दरवाज़ा खोलकर ऊपर-नीचे, इधर-उधर झाँका, और बाहर वाले दरवाज़े पर जा खड़ी हुई । सड़क पर काफ़ी लोग आ-जा रहे थे । हर राहगीर की नज़र उस पर पड़ती थी । कुछ लोग उसे दूर ही से देखते हुए आते थे, कुछ की नज़र उसके सामने से गुज़रते समय पड़ती थी और कुछ लोग काफ़ी आगे तक जाकर भी मुड़-मुड़कर देखते रहते थे । वह डीठ बनी खड़ी रही । दो-तीन छोकरों ने दूर से ही देखकर सीटी बजाई । सीटी की आवाज़ से उसका तनाव कुछ कम हुआ । वह होंठों-ही-होंठों में मुसकरा दी । लड़के उसके सामने से गुज़रे तो वह बड़े गौर से उनकी ओर देखती रही । पहले तो उनमें से एक लड़का भोंडी तरह से मुसकराया फिर अपने-आप ही गम्भीर होकर तेज़ी में चलने लगा । दोनों माधियों ने भी अपनी चाल तेज़ कर दी । थोड़ी दूर तक जाने के बाद उन्होंने मुड़कर देखा, वह बराबर उनकी ओर देख रही थी । तीनों लड़कों के आँखों में ओसल हाँ जाने पर वह हल्का-सा मुसकराई । धीरे से कहा—  
“बेचारे !”

अम्मा ने उसे कमरे में निकलते हुए देख लिया था । छज्जे पर खड़ी कुछ देर तक इन्तज़ार करती रही । शायद ऊपर ही आ रही हो । वे नीचे उतर आई । पहले तो आहट सुनकर सविता भुड़ी, लेकिन तुरन्त ही अपनी ग़ाह पर जा खड़ी हुई । उसके कान अम्मा की ओर लगे थे । वह कनखियों से पीठ-पीछे की हर हरकत के साथ जुड़ी हुई थी । नीचे आकर अम्मा ने ख़ोर से पुकारा, “ऐ सविताऽऽ, सविताऽऽ ! वहाँ खड़ी क्या कर रही है ? क्यों मेरा जनम खराब करने पर लगी है, चल इधर !”

सविता हल्का-सा मुसकराई । उसी मुसकराहट को चेहरे पर और अधिक फैलाकर अम्मा की ओर देखा । क्षण-भर के लिए अम्मा की समझ नहीं आया, वे क्या करें । सविता धीमे-धीमे उनकी ओर बढ़ती रही । अम्मा की साँस फूलती-सी लगी । चिल्लाकर बोली, “वहाँ खड़ी क्या कर

रही थी ?" सविता खामोश रही। अम्मा के शोध का ठिकाना न रहा, उनके चेहरे से लग रहा था, वे उसका चेहरा नॉन लेंगी।

"पता है, इस तरह शाम को दरवाजे पर कौन राखी होती हैं, तूने मेरी कुली उजाल दी। सारे महल्लेवाले कहेंगे..." अम्मा की बात का तुरन्त जवाब न देकर सविता ने सहज भाव से उनकी ओर देखा। आवाज को सहज बनाये हुए कहा, "मैं कहीं भाग थोड़े ही गई थी?"

"भागने का मन है तो भाग जा, हमें तो दिखलाई दे रहा है, तू भागे बिना थोड़े ही मानेगी। सबके चेहरों पर कालिय पोतकर जाएगी।"

सविता का चेहरा तमतमा आया। लेकिन अपने-आपको दान्त बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए कहा, "रंजी का इन्तजार ही तो कर रही थी..." अम्मा के चेहरे पर एक नजर डालकर फिर कहा, "उससे नोट्स दे जाने के लिए कहा था, अभी तक नहीं लाया। बड़ा ही लापरवाह लड़का है..." उसके चेहरे से लगा, 'लापरवाह' कहते समय सविता की आँखों का भाव बदल गया है।

अम्मा बदहवास-सी हो रही थीं—"किसी और को चलाना, मैं सब जानती हूँ, नोट्स-वोट्स के बहाने क्या होता है...सही शाम से नीचे आकर बैठ जाती है। ऊपर बैठकर नहीं पढ़ा जाता, आने दे आज उसे।"

"क्या करेंगी आप उसका! आप हमेशा यही समझती हैं, लड़का-लड़की मिलते ही वही सब-कुछ करने लगते हैं।" आवाज को थोड़ा और धीमा करते हुए कहा, "लड़के-लड़कियों के पास सिवाय उस सबके कुछ और होता ही नहीं।"

अम्मा ने सुन लिया था। दाँत भींचकर चिल्लाई, "अरी वेशर्म, कुछ तो जवान को लगाम लगा। कैंची-सी चलाए जा रही है। तुझे इसीलिए पढ़ाया था, माँ से ऐसी-वैसी बातें करे..."

"आपने भी तो मुझे सब-कुछ कह लिया..." दूसरी ओर मुँह करके कहा, "रण्डी-वण्डी..." उसके होंठ फैल गए थे।

अम्मा शायद थक गई थीं। दुहाई-सी देती हुई बोली, "हाय राम,

मेरी जवान कटकर गिर जाए, जो मैंने ऐसी बात कही हो। माँ पर ऐसे-ऐसे लाछन लगाएंगी ! जाने दे अपने बाबूजी को, आज साफ-साफ कह दूंगी। घर में या तो आपकी बेटी रहेगी या...। अपने-आप तो साहब-बहादुर दफ्तर में जाकर बैठ जाते हैं। मुझे इन कमबस्तों के जूते छाने को छोड़ जाते हैं।”

सविता ने अपने कमरे में धुसते हुए कहा, “तो साय ही चली जाया करिए।”

उसने दरवाजा बन्द कर लिया। अम्मा दरवाजे को धूरती रही। कमरे की लिङ्की के पास जाकर बोली, “हाँ, हाँ, मैं भी चली जाया कहूँगी। ये सब बातें उनसे ही कहूँगी...आज फैसला होकर रहेगा, तेरी जवान न कतरवाई। इस घर में रहेगी तो मेरी मर्जी से रहना पड़ेगा, नहीं तो चली जा अपने रजी-मंजी के पास।”

सविता अन्दर जाकर अम्मा की बातों के प्रति एकदम ठण्डी हो गई थी।

●

अम्मा ऊपर नहीं गई थी। वही सहन में खट-खट करती घूम रही थी। रंजी आ गया।

“नमस्कार माताजी !”

अम्मा ने रंजी की ओर देखने के लिए गरदन और बाँधें दोनों एक साथ घुमाई। खींचकर कहा, “नमस्कार।” तुरन्त ही उसकी तरफ से गरदन घुमाकर दूसरी ओर देखने लगी। रंजी एक कदम पीछे हट गया था। लड़का, लड़की के घर में जैसे ही सहमा रहता है। माताजी का झूठ देकर वह और अधिक सहम गया।

अम्मा ने जोर से कहा, “अब तो दरवाजा खोलो...” दरवाजा खोलने की बात कहने के साथ ही उन्होंने रंजी पर भी नज़र डाली। रंजी के माथे पर पसीने की बूँदें थी। वह अपनी टाई की नॉट हिला रहा था। अपनी तरफ देखने पर उमने सँसारते हुए अम्मा से पूछा, “क्या

वात है माताजी ?”

“उसी से पूछना...” सरसरी तौर पर जवाब देकर, दरवाजा खट-खटाती रहीं।

सविता ने झटके के साथ दरवाजा खोला। विना अम्मा की ओर देते मुसकराते हुए रंजी से कहा, “आओ...”

“आप शायद सो गई थीं, माताजी काफ़ी देर से खटखटा रही हैं।” रंजी कनखियों से अम्मा की ओर देख रहा था।

अम्मा बीच ही में बोलीं, “वस, माता-वाताजी को रहने दो, अपना काम करो।”

सविता का चेहरा तन आया। लेकिन तुरन्त ही रंजी से हँसकर कहा, “अन्दर तो आओ, मैं तो बहुत देर से तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हूँ, ज़रा जल्दी आना चाहिए था।”

अम्मा खड़ी-खड़ी घूम गई। जीने के पास जाकर जोर से कहा, “जल्दी से ऊपर आ जाना। काम पड़ा है। कभी दरवाजा बन्द करके...” कुछ रुककर बोलीं, “वातें मिलाने लगे।”

सविता ने रंजी का हाथ पकड़कर अन्दर खींच लिया। अम्मा पाँव पटकती हुई जीने पर चढ़ गई।

सविता के एकाएक हाथ पकड़कर खींच लेने के कारण मिनट-भर तो रंजी के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला, फिर कहा, “लीजिए नोट्स...”

सविता ने मुसकराते हुए माफ़ी माँगने की मुद्रा में कहा, “मैंने आपका हाथ पकड़कर अन्दर खींच लिया था, आपने बुरा तो नहीं माना ?”

“अरे नहीं, नहीं, कोई बात नहीं।” रंजी का चेहरा थोड़ा फँस गया।

छोटा मुन्ना हाथ में स्लेट लिए उसके कमरे में आ गया था। सविता ने उसकी ओर देखकर पूछा, “कहिए !” गुस्से से आँखें ऊपर चढ़ गई।

“जीज्जी, हम तो तुम्हारे कमरे में बैठकर पढ़ेंगे।”

सविता ने अपना चेहरा और सल्ल बनाते हुए कहा, “क्यों...ऊपर जगह नहीं है?” वह बेचारा सहम-सा गया।

छोटा मुन्ना वहीं खड़ा रहा। सविता ने बाहर झाँककर देखा, अम्मा छज्जे पर झुकी हुई थी।

रंजी ने फिर कहा, “अच्छा मैं अब चलूँ। मोट्स कलिज में लेती आइए, वही ले लूंगा।”

अम्मा धूमकर उस कमरे के सामने वाले बटहरे पर आ गई थी। सविता ने जोर से कहा, “कुछ देर तो बैठो, कलिज में तो बात ही नहीं होती...” इस बार रंजी ने भी गरदन झुकाकर छज्जे की ओर देखा। अम्मा पीछे की ओर हट गई।

“मुझे भी जाकर पढ़ना है,” रंजी का गला खरखरा आया था। उसने धीमे से कहा, “आपको भाताजी बुला रही हैं।” मुन्ना आँखें गोल किए अपनी जीजी की ओर देख रहा था।

शायद अम्मा छज्जे पर से चली गई थीं। सविता ने हाथ जोड़कर रंजी से क्षमा-याचना की मुद्रा में कहा, “धैर्य, आपको बहुत तकलीफ हुई। इट यू डोण्ट माइण्ड ऑल दैट...”

रंजी ने जाते-जाते बककर कहा, “आप कलिज में ही मोट्स ले लिया करें।”

सविता ने घोड़ा मुँह बनाया, “नहीं, लड़के बड़े बदमाश होने हैं।” ‘बदमाश’ कहते हुए वह उसकी तरफ़ देखकर मुनकरा दी। बन्द हॉटों के कारण रंजी के गाल फूल आए। आँखों में हल्ला-सा चिंगनी का भाव आ गया। सविता उसके चेहरे को उत्सुकता से देखने लगी।

वह बिना कुछ बहे जाने लगा तो सविता ने आपह से पूछा, “आप कुछ कह रहे थे?” उसने टालना चाहा। लेकिन सविता के बार-बार बहने पर उसने धीमे से कहा, “जो शान आर लड़कों के बारे में कह रही थी...मैं लड़कियों के घरवालों के बारे में सोच रहा था।” सविता को एवाएक झटका-सा लगा। फिर ओर से हँस दी। रंजी क्षमा माँदकर

चला गया। अम्मा जीने से उतर रही थीं। सविता ने जोर से पुकारकर कहा, “कल आना...”

वह दरवाजे से बाहर निकल गया था।

अम्मा नीचे आकर बोलीं, “जाने ही क्यों दिया...”?

सविता ने तुरन्त जवाब दिया, “इतने पर तो यह हाल है, रस लेती तो...”

अम्मा बीच में ही बोलीं, “ओफ़फ़ो, जवान है या हनुमानजी की पूँछ... मैं हारी, तुम जीती ! अब तो चलो ऊपर या अभी... कोई क्या मेरे जनम-करम में थूकेगा ! पढ़ाई हमारे जमाने में भी होती थी, लीण्डे-लपाड़ों को बुला-बुलाकर कोई घरों में नहीं बैठाता था... इन कमबस्तों को भी तो शरम नहीं आती, ऊँट की तरह मुँह उठाए लड़कियों के घर में घुसे चले आते हैं। बदतमीज़ कहीं के।”

सविता की आँखें फैल गईं। उसने अपनी मुसकराहट दबाकर कहा, “लड़कियों के घर वाले भी तो...”।

अम्मा की दोनों मुट्ठियाँ भिच गईं। उनकी समझ में नहीं आया, क्या जवाब दें। कुछ देर बाद बोलीं, “खड़ी क्या मुसकरा रही हो देवी, अब तो छाती जुड़ा गई... भेंट-मुलाकात हो गई...” अम्मा बुरी तरह से वीखला गई थीं।

“चलो, ऊपर चलकर मेरा अचार डालना !” मुड़कर सविता ने छोटे मुन्ने से कहा, “चलिए दूत महाराज, अब तो डचूटी खत्म हो गई।” अम्मा ने आँखें तरेरकर उसकी ओर देखा। सविता दूसरी ओर देखने लगी।

कमरे के बाहर वाली छत पर रानी, मुन्नी, राजू, बड़ा मुन्ना और नीता सहमे-से खड़े थे। बवलू पलंग पर लटा था। अम्मा को देखकर राजू, बड़ा मुन्ना और नीता सहमे-से पीछे को हट गए। रानी, मुन्नी ढीठ बनी खड़ी रहीं। अम्मा ने तुरन्त ललकारा—“यहाँ क्या तमाशा हो रहा है, गोल बाँधकर खड़ी हो गई... जाओ काम करो।”

सविता बबलू के गाल पर डेंगमी लगाकर उसे तिलाने लगी—  
 “मेरा राजा बेटा बँठे-कँठे हँडना है—” दुदुदु-दुदुदु, भीना-भीना किया।”  
 बबलू मुँह में गुँ-गुँ करने लगा। सविता दबी नजरों से अम्मा की तरफ  
 देग रही थी। अम्मा के बेहरे का भाव कुछ हलका होता-भा नजर  
 आया। सविता ने बबलू को गोद में उठा लिया और ‘मेरा राजा बेटा,  
 मेरा राजा बेटा!’ बहकर चूमने लगी। अम्मा हल्के मूँड में घोली,  
 “बँगा पमाना आ गया, भाई को बेटा कहती है। हमारे उमाने में माँ-  
 बार के नामने अपने बेटे को भी बेटा नहीं कहते थे।”

सविता थोड़ा-भा मुगकराई और पूरी तरह से अम्मा की तरफ  
 देगकर कहा, “इनगे तेईग ताल बड़ी हैं, इनना छोटा भाई बेटे के बरा-  
 बर ही होता है।”

अम्मा के बेहरे में लगा, हर बात की तरखीब उलट-गुलट हो गई  
 है। सविता की बात का जबाब उनकी समझ में नहीं आया। शण-भर  
 रुककर उसके मुँह में निकला—“हे राम, ऐसी बेशर्मी!”

सविता ने देखा, अम्मा गम्भीर हो गई हैं। सुदामदाता ढग से  
 बोली, “आप तो जरा-सा मजाक भी नहीं समझती, नाराज हो जाती  
 हैं।”

“मुझे नहीं पगन्द मजाक-मजाक—” अम्मा ने बबलू को सविता  
 की गोद से ले लिया और बड़बड़ाती हुई चली गई, “उन्ही अपने लगते-  
 गगनों में मजाक किया कर।”

बबलू सविता की तरफ देखकर हँस रहा था। उसने जीभ निकाल  
 दी। बाबूजी छीने पर चढ़ रहे थे। अम्मा बबलू को फगड़े से ढँककर  
 दूध पिला रही थी। सविता कमरे में चली गई।

●

रात को सविता बराबर बाड़े कमरे में पढ़ रही थी। मेज पर टीनों फैला-  
 कर घुटनों पर पुस्तक रखी हुई थी, कान बातों की तरफ थे।

बाबूजी समझाने के अन्दाज में कह रहे थे, “यह तुम्हारी कैस-



आदत होती जा रही है, हर वक्त सविता से नाराज रहती हो ! बराबर की लड़की है । कॉलेज में पढ़ती है । यह कैसे हो सकता है, मैं लोगों के कहने से उसका गला घोट दूँ । बिना गुद देने मैं कुछ नहीं कह सकता ।”

अम्मा की आवाज तेज हो गई, “तुम तो तभी विश्वास करोगे, जब गली-महल्ले में कपड़े सूखेंगे...तब टुगटुगी बजाते घूमना ।”

“ठीक है, मुझे टुगटुगी बजानी पड़ेगी तो बजा लूँगा ।”

“मैं कहती हूँ, अगर अपनी इस लाड़ली को नहीं रोका तो सिर पर चढ़कर नंगी नाचेगी ।”

सविता का चेहरा तमतमा आया । उसने पुस्तक उठाकर मेज पर रख दी । पाँच नीचे उतार लिए, कुरसी के हथ्यों पर हाथ टिकाकर उठने की मुद्रा में बैठ गई थी ।

बाबूजी को गुस्सा आ गया था, “क्यों चक-चक कर रही हो, जो मुँह में आता है बकती जा रही हो ।” उसने पुनः अपनी पीठ कुरसी से टिका ली ।

बाबूजी ने बड़बड़ाने के स्वर में कहा, “उसे कुछ करना होगा तो न मैं रोक सकता हूँ न तुम ।”

अम्मा ने कुछ देर तक जवाब नहीं दिया, फिर बोलीं, “देखिए जी, मैं कहे देती हूँ, या तो इसके हाथ पीले करके घर से धक्का दीजिए, नहीं तो मैं कुएँ में कूदकर प्राण दे दूँगी । कच्ची पाल है, इसकी मौज के वास्ते मैं उनका गला नहीं घोट सकती...मैं पूछती हूँ, कमरा बन्द कर-करके उस रंजी से ऐसी क्या बात होती है, जो हमारे सामने नहीं हो सकती ? भले घरों की लड़कियाँ लड़कों का हाथ पकड़ती हैं ? कुछ कह देता तो क्या होता ...?”

सविता फिर सीधी हो गई । उसके पाँच की उँगलियाँ ऊपर-नीचे होने लगीं । आँखों से लगा, वह बाबूजी की प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक है ।

बाबूजी उठते हुए बोले, “नहीं समझ में आता तो दे दो कुएँ में कूद-

कर प्राण, मैं क्या कर सकता हूँ !”

अम्मा बड़बड़ाने लगी, “मैं मर जाऊँगी, तुम बाप-बेटी का तो पाप कटेगा । ये कमबख्त बच्चे ही घबके खाते फिरेंगे ।”

सविता को लगा, अम्मा सिसकने लगी है । बाबूजी उठकर सोने वाले कमरे में चले गए । सविता आँखें बन्द करके पुनः कुरसी पर लेट-सी गई । कुछ देर तक तो अम्मा बड़बड़ाती रही । फिर घर सघवाने में लग गई । दो-तीन बार सविता के कमरे में भी आई । सविता की ओर बड़ी नाराजगी के साथ देखती हुई गुजर गई । बाबूजी के सोने वाले कमरे में गई । दरवाज़ खोलकर बिस्तर की चादर निकाली । जोर से दरवाज़ बन्द किया । नौकर को पुकारा । नौकर नहीं था । बाबूजी से सदस्यता बनाए रखने का प्रयत्न करते हुए कहा, “शाम कोई आया था !”

“कौन ?”

“उसीसे पूछ लो, बिना पूछे थोड़े ही बताएंगी ।”

सविता उठकर बाबूजी के कमरे में चली गई । बाबूजी पीठ के नीचे चार तकिये लगाकर अखबार पढ़ रहे थे । मुँह में बुझा हुआ सिगार था । उन्होंने सविता की तरफ देखकर पूछा, “कौन आया था बेटी ?”

सविता के चेहरे का भाव बदल गया । उसने दबी नज़र अम्मा की तरफ देखा । उन्होंने पीठ घुमा ली ।

“वही अकल आए थे, उस दिन रामा साहब के यहाँ पार्टी में मिले थे न, ...आपके क्लास-फेलो...”

“अच्छा, वोऽऽ, तुमने रोका नहीं ?”

“कल मुबह आएंगे ।”

बाबूजी पुनः अखबार पढ़ने लगे । सविता कुछ देर तक सही रहकर चलने लगी । अम्मा ने उसकी ओर पीठ किये हुए ही कहा, “उसके लिए भी इन्ही से पूछ ले, मैं कुछ नहीं जानती ।”

बाबूजी ने अखबार की ओर से नज़र हटाकर सविता की ओर देखा । सविता चुपचाप सही थी ।

अम्मा ने अपने-आप ही कहना शुरू कर दिया, "शुबवार को कॉलेज के लड़कों के साथ बड़ी नहर पर...क्या कहते हैं उसको...पिकनिक के लिए जाने की कह रही है, आप जानें।"

बाबूजी ने पूछा, "क्या बात है सविता?"

"कुछ नहीं बाबूजी! हमारे 'सोशियोलोजी-एसोसिएशन' की तरफ से दो दिन का टूर जा रहा है, मैं उसकी सोशल सेक्रेटरी हूँ।"

बाबूजी ने क्षण-भर रुककर कहा, "तुम्हारी अम्मा तो पिकनिक कह रही थी।"

"वो तो मैंने 'जस्ट टु मेक हर अण्डरस्टैंड' कह दिया था।"

बाबूजी ने अम्मा की तरफ देखते हुए कहा, "तुम्हारी अम्मा ने क्या कहा?"

"मैं हूँ ही कौन कहने वाली!" अम्मा ने बड़ी नाराजगी के साथ उत्तर दिया। बाबूजी पुनः अखबार पढ़ने लगे। सविता अपने कमरे में जाने के लिए घूम गई। अखबार की ओर मुंह किए बाबूजी ने धीमे से कहा, "चली जाना।"

सविता ने घूमकर बाबूजी की ओर देखा। अखबार बाबूजी के चेहरे के काफ़ी पास आ गया था। अम्मा की ओर देखने की हिम्मत नहीं हुई। झपटकर दूसरे कमरे में चली गई।

अपने कमरे में जाकर काफ़ी देर तक सविता के कान उधर ही लगे रहे। उसे बार-बार लगता रहा, अम्मा बाबूजी से कुछ कह रही हैं।

थोड़ी देर बाद अम्मा ने बाबूजी से पूछा, "बत्ती बन्द कर दूँ?" बाबूजी ने 'हूँ' कर दिया।

बत्ती बन्द हो गई। सविता ने भी अपने कमरे की बत्ती बन्द कर दी और सोने के कमरे में जाने लगी। उसका सोनेवाला कमरा अम्मा-बाबूजी के कमरे की दूसरी तरफ़ था। उसे उनके कमरे के बीच से गुज़रना पड़ा। नीता अम्मा के बराबर बिछे पर सो रही थी। बवलू अम्मा के बिस्तर पर ही गोल

तकिया लगा था, बबलू अम्मा की पीठ के नीचे न लुढ़क जाए। अम्मा ने अपना पलंग बाबूजी के पास बिछा दिया, बाबूजी का मुँह दूसरी ओर था। वह तेजी से निकल गई।

उसके कमरे में रानी, मुन्नी, राजू, बड़ा मुन्ना, छोटा मुन्ना सबके बिस्तर लगे हुए थे। मुन्नी ने अपने दोनों पाँव रानी के ऊपर रख दिए थे। राजू 'सिंगल' था। बड़ा और छोटा मुन्ना एक बिस्तर पर थे। उनकी मुद्रा कुछ ऐसी थी कि दोनों बॉक्सिंग कर रहे हैं। सविता मुसकराई। मुन्नी के पाँव रानी के ऊपर से हटा दिए। झटके हुए कहा, "क्या पिल्लों की तरह लिपटी पड़ी हो?" वे दोनों कुनमुनाकर फिर सट गईं। दोनों मुन्नों को सीधा किया। वे भी ऊँ-ऊँ करके फिर एक-दूसरे के पास आ गए। सविता ने सबको कपड़ा उड़ाकर बसी बुझा दी और खीरो बल्ब जला दिया। बीच का दरवाजा बन्द करने गई। बिना बटखनी लगाए, केवल उड़काकर चली आई। वह हल्का-सा मुसकरा रही थी। पलंग पर बैठकर उसने अपने को थोड़ा 'लूज' किया। छाती में नीचे तक रज्जई ओढ़कर लेट गई। उसका मुँह दीवार की तरफ था। खीरो बल्ब का हल्का-हलका प्रकाश दीवार पर ठहरा हुआ था। उसने अपनी उँगली से एक लड़ी रेखा खींच दी। दीवार पर घूल होने के कारण उँगली फिमलने का हल्का-सा निशान बन गया। वह उसे देखती रही। पहले निशान के बराबर में ही उसने एक घेरा और बना दिया। वे दोनों निशान बहुत हलके थे। उन निशानों को मिटाने के लिए उसने हथेली उठाई, बिना मिटाए ही करबट बदल ली और आँखें बन्द करके लेट गई। आँखें बन्द कर लेने वाले उस भाव में भी उसकी व्यस्तता नज़र आ रही थी।

●

अम्मा कह रही थी, "चूहे बीड़ रहे हैं... सविता ने बाज़ बीच का दरवाजा बन्द नहीं किया।"

"आपकी नींद भी खूब है, चूहों की सटर-सटर में भी मोए जा रहे हैं।"

बाबूजी ने घामद करवाट बरल्लो हुए अलगाई आवाज में कहा, "हांSS, चूहे मुझे परेजान नहीं करते।"

अम्मा चुप हो गई। थोड़ी देर बाद बोली, "कहें तो बीच का दरवाजा बन्द कर दें?"

"कर भी दो, भई..." बाबूजी की आवाज फिर दृढ़ गई। सविता के होंठों पर हँसी फैल गई। अम्मा ने दरवाजा बन्द करके चटखनी चढ़ा ली। सविता फ्लॉग पर उठकर बैठ गई। वह आप-ही-आप मुसकराती रही।

थोड़ी देर बाद वह फिर लेट गई। दीवार पर उनके बनाये हुए दोनों निशान थे। हथेली से साफ़ कर दिए। उन निशानों के स्थान पर हथेली के घस्से का निशान बाक़ी रह गया। उधर कुछ बातें हो रही थीं। वह कोहनियों के बल अघउठी-सी हो गई। बाबूजी कुछ कह रहे थे, "हाथ तो रखने दो।"

सविता ने कसकर आँखें बन्द कर लीं।

थोड़ी देर बाद अम्मा ने घुलती-सी आवाज में फिर कहा, "यह ठीक नहीं है, जवान लड़की को इस तरह भेजना..." 'भेजना' के बाद शब्द सुनाई नहीं पड़े। सविता ने उचककर बत्ती जला दी।

वह बत्ती जलते ही चिल्लाई—“उईSS, चूहे...!” चिल्लाकर दो-चार क्षण टोह लेती रही। दूसरे कमरे में एकदम सन्नाटा था। उसने फिर हल्के-से मुसकराकर बत्ती बन्द कर दी और लेट गई। बत्ती बन्द हो जाने पर भी उसके दाँत काफ़ी देर तक खुले रहे।

## पगडंडियाँ

मि० सेन ने मुँह से सिगार निकालकर हाथ में ले लिया। कुछ याद करने की मुद्रा में आँखें बन्द करके पुकारा, "राजीव!" मिगार का धुआँ बार-बार उनकी गर्दन के ऊपरी भाग को घेर लेता था, उसके छँटे-छँटे वे फिर उगना ही धुआँ छोड़ देते थे। दो बार कश लगा लेने के बाद मि० सेन ने आँखें खोली और सिगार को राखदानी पर रखकर चारों ओर नज़र डाली। उन्होंने एक बार और पुकारा "राजीव, राजीव बेटे!"

बराबर वाले कमरे में नौकर था। मि० सेन की आवाज़ सुनकर बाहर निकल आया, "भैया दूसरी तरफ बरामदे में पड़ रहे हैं, बुला लाऊँ?" बड़े अनमनेपन से मि० सेन ने दोहराया— "पड़ रहे हैं।" उसी अनमनेपन की बनाए रखते हुए कहा, "अच्छा तो ठीक है, पड़ने दो। इन्तहान नजदीक

है। इन फ़ाइनल, नो डिस्टर्बेन्स...! एज एंट एट ?" गर्दन घुमाकर देखा, नोकर चला गया था।

राखदानी पर रखे सिगार को उठाकर उन्होंने फिर मुँह में लगा लिया। दम लगाने पर ज़रा-सा भी धुआँ मुँह में नहीं आया। आघे से ज्यादा बचे सिगार को इतनी ज़ोर से फेंका कि पूरा लॉन पार करके सामने वाली चहारदीवारी से टकराकर गिर पड़ा। उसी झटके के साथ मि० सेन भी उठ खड़े हुए और लॉन की तरफ़ चल दिए।

लॉन के किनारे-किनारे माली याँवले खोद रहा था। खुदी हुई मिट्टी नई-नकोर, नम और मुलायम थी। कुछ ढेले थे जो हाथ लगाते भुर जाते थे। बीच-बीच में माली का फावड़ा कंकड़ या टूटे हुए ठीकरे से टकरा जाता था। माली उसे उठाकर दूर 'बगा' (फेंक) देता था। थोड़ी देर मिट्टी खोदने की क्रिया देखते रहे। फिर मिट्टी का ढेला उठाकर उसे भुरभुराते हुए बरांडे की ओर लौट पड़े। कुछ दूर तक हरी-हरी घास पर पीली मिट्टी की पतली-सी रेखा बन गई।

मि० सेन बरांडे में पड़ी कुर्सी के पास फिर आ खड़े हुए। खड़े-खड़े ही उन्होंने डिव्चे से एक सिगार निकाला, दियासलाई उठाई। व्यस्तता के अन्दाज़ में दोनों को अलग-अलग हाथों में ही लिए अन्दर की ओर चल दिए। घुला-पुंछा ड्राइंग-रूम सुस्ता रहा था। बाहर चढ़ती हुई धूप के हल्के-हल्के बिम्ब दीवारों पर कांपते हुए-से टिके थे। मि० सेन के चलते रहने से वे सब उनके शरीर पर आ-आकर टिकते, फिसलते और पुनः दीवारों पर अपनी-अपनी जगहों पर चिपक जाते थे।

दूसरे बरांडे में राजीव 'थमले' से पांव टिकाए, कुर्सी को पीछे की ओर झुकाए, आँखें बन्द किए बैठा था। घुटनों पर किताब उल्टी रखी हुई थी। मि० सेन ने पास जाकर पूछा, "पढ़ चुके?"

"यस पापा!"

"रिलेक्सिंग!"

राजीव ने गर्दन हिला दी। मि० सेन कुर्सी खिसकाकर बैठ गए। कुछ

सोचते हुए बोले, "तुम्हारी 'प्रिंसेस' पूरी हो गई ?"

"हैंड, लेकिन पापा, नीना इज बेरी मच सीयार ।"

मि० सेन ने हँसकर पूछा, "तो इसीलिए तुम परमों से उसके माथ पड़ने नहीं गए...डर गए हो !"

"स्टाट डरना...अब तो 'एक्जाम्स' ही बताएंगे कौन किसके गिर पर से फाँद जाता है ।"

मि० सेन ने मुस्कराते हुए पूछा, "कहाँ ऐसा न हो दूर से दीड़ते हुए आओ...भामने-सामने भाते ही, हॉल्ट ।" देखते-देखते एक छोटा-सा बिम्ब राजीव के चेहरे पर से चिमल गया ।

"नो पापा, आई बिल फ्रॉम हर ।"

मि० सेन की मज्जरों में एक चमक उभरकर खूब गई । उन्होंने अपने को गम्भीर बनाने का प्रयत्न करते हुए प्रतिवाद किया, "नीना एक्सट्रा आर्बोरी ब्रिलियन्ट माँ की बेटी है, जानते हो ।"

राजीव ने किलककर तपाक से उत्तर दिया, "हैंड, आप जानते हैं, राजीव इज सन ऑफ़ रेकर्ड ब्रेकर ।" उसने अपना सीना ऊपर को चबकाया ।

मि० सेन प्यार से सिझकते हुए बोले, "तुम बहुत घीमान हो गए ।" चेहरे पर मुस्कराहट हँसने की सीमा तक फैल गई ।

"पापा, यू नो, आन्टी को आपकी रॉटरी-क्लब वाली स्प्रीच बहुत पसन्द आई ।"

मि० सेन सारमोश हो गए । उनके व्यवहार ने ऐसा आभास दिया कि इस बात में उनकी विशेष दिलचस्पी नहीं । लेकिन कनसो धाँसो से राजीव की तरफ देखते रहे । राजीव बताता रहा, "सीटने पर ममी से पूछना ईपा, मैंने उनको बताया था । आन्टी इतना पढ-लिखकर भी एक्जम 'मारपोइक्व' हैं । दट इज थोन्ली ड्यू टू यू कि वे मुझे अपनी बेटी के माथ 'कम्पाइन्ड-स्टडी' के लिए एलाऊ कर देती हैं । वी ऑलवेज कोप्प ऐन आई ।" अन्तिम वाक्य उसने बड़े धीरे से कहा ।



“इसका मतलब यी इज ए गुड मय्दर ।” मि० सेन एकाएक अनमने हो गए । लेकिन तुरन्त सँभलकर बोले, “मैं गुद तुम्हें फ्राइजल में किसी और लड़की के साथ पढ़ने की इजाजत न देता । मुझे अपनी बात याद है—आ’ वाज जरट टु लूज मार्ड पोजीशन इन एम० ए०, बाल-बाल बच गया, खैर वह सब तो था ही ! जब तुमने मुझसे कहा था—मैं मिसेज जोशी से सलाह करने गया था । अब भी पूछ-ताछ खाता हूँ ।”

“यू आर डेन्जरस पापा ! आपको क्या पता चलता है...” धण-भर को राजीव का चेहरा तन गया, उसकी आँखें आशंका से भर गई ।

“पढ़ते कम हो, बातें ज्यादा करते हो ।” कहकर मि० सेन हँस दिए । राजीव के चेहरे पर फिर खुलापन आ गया । उसने गर्दन को झटका देते हुए प्रतिवाद किया, “नो पापा, आप मज़ाक कर रहे हैं—वी आर टू सीरियस ।” ‘टू’ को ज़रा खींचकर बोला ।

“प्रूव इट ।”

“ठीक है, आई विल...”

राजीव उठ खड़ा हुआ । मि० सेन ने एक बार उसे उठते हुए देखा, फिर अपनी घड़ी की ओर देखकर कहा, “अब तो लंच के बाद ही पढ़ोगे ?”

राजीव ने गर्दन हिला दी ।

“तो बैठो !”

राजीव पुनः बैठ गया । मि० सेन की नज़र अपनी उँगलियों में दबे सिगार पर चली गई । उन्होंने तुरन्त जलाकर जोर का एक कश लगाया ।

धूप सहन से सरककर बरांडे में आ गई थी और उन दोनों के पाँव धूप की उस चादर के नीचे दब गए थे ।

राजीव ने मि० सेन की ओर देखकर पूछा, “पापा, डोन्ट यू थिंक—हिन्दुस्तानी औरतें कितनी भी ‘एडवान्स’ हों, पर अपनी ग़ोन-अप लड़कियों के बारे में भी एक्सट्रा-काँशस रहती हैं, एज़ इफ़ दे आर शुगर क्यून्स ।”

मि० सेन ने राजीव की ओर बड़े ग़ौर से देखा, ‘हूँ’ करके रह गए । बात आते-आते होंठों से लौट गई । फिर मूड बदलकर बोले, “इसमें क्या

दान है, मदनं सब देयर डॉटर्म मोर ।”

राजीव के चेहरे पर संतानी-भरा भाव चमका । मदनं नीची करके हल्का-सा मुस्कराया । बेटे को मुस्कराता हुआ देख मि० सेन थोड़ा गभीर हो गए ।

“तुम ममअते हो मिसेज जोशी वैकवडं हैं—शी इज डेफिनेटली डिपनिग्राइड एण्ड रिफ्राइड लेडी । तुम्हारे क्लास में इतने लड़के थे, बट शी एलाइड यू बोनली टू स्टडी बिद हर डाटर—उनमे आदमी को पहचानने को अइमुन शकिन है ।”

पिता के एकाएक गम्भीर हो जाने से राजीव के चेहरे पर असंतुलन आ गया । सज़ाई देने की मुद्रा में बोला, “पापा, मैं आन्टी को ग्लेम थोड़े ही कर रहा हूँ । वे मुझे भी उतना ही मानती हैं, कई लोगो ने हम दोनों को लेकर उनके कुछ कहा-सुना भी, उन्होंने उन लोगों को बहुत सही जबाब दिया । राजीव इज ए सन ऑफ़ ए बेरी डिसिप्लिण्ड फादर ।”

आविरोध काय मुनकर मि० सेन मुस्करा दिए । अपने पापा की मुस्कराहट देखकर राजीव का चेहरा भी निखर आया ।

मि० सेन उठ लड़े हुए और धुआँ छोड़ते हुए उसके बीच से चहल-चरनी करने लगे ।

राजीव ने धीरे से कहा, “पापा, फाइण्ड टाइम टु कॉल ऑन नीनाउ फादर ।” वे अथर्वीच में ही राजीव की ओर धूमकर उसके चेहरे का भाव बाँटने का प्रयत्न करने लगे । फिर बोले, “कई बार मैं तुम्हें डाँप करने एला हूँ, लेकिन ही इज आलवेज आउट । इस बार मैं उनसे टाइम लेकर निम्ने बाऊँगा ।”

“आन देनगे, हो ओनली स्माइल्ल ।” मुनकर सेन साहब की मुस्कराहट ।

“एक रोज आन्टी चाय पर आपकी बड़ी थारीऊ कर रही बी, ओ भी बंडल मुनरा रहे थे ।”

“मुनरा रहे थे !” मि० सेन ने झटके के साथ पूछा ।

“हाँ, दरअसल उनकी दो आदतें हैं—मुस्कराते रहना और हिन्दी में बोलना।” अंतिम शब्दों के साथ उसके चेहरे पर हँसी भी आ गई।

मि० सेन ने प्रतिवाद के रूप में कहा, “मुस्कराता तो मैं भी हूँ... तुम मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें करते होगे?”

“नो पापा, मुस्कराती तो आन्टी भी हैं, बट दौ इज मच मॉर फ़ार-बर्ड। ऐसे ही आप भी—आप स्मोक करते हैं, हार्ड सोसाइटीज में मूव करते हैं। अंकल दफ़्तर से लीटते हैं और बस...। आन्टी इज सो स्मार्ट कि उनका लेज़ी होना अखर जाता है। आन्टी आपकी मिसाल दे-देकर अंकल को हमेशा प्रोवोक करती हैं, ही इज इम्यून।” मि० सेन के चेहरे पर खिला-खिलापन आ गया था।

थोड़ा सोचने की मुद्रा बनाकर उन्होंने कहा “इसमें कोई शक नहीं, लेडीज हैव इम्मेन्स पावर ऑफ़ एडजेस्टमेंट विद मेन...” तुरन्त अपनी बात बीच में तोड़कर बोले, “हाँ, तुम्हें शाम-वाम को तो उधर नहीं जाना?” यह पूछते समय उनके चेहरे से लगा, अब वे गम्भीर बात करना चाहते हैं।

राजीव ने भी सोचते हुए जवाब दिया, “एक-दो टॉपिक्स डिस्कस तो करना चाहता हूँ, लेकिन...”

“लेकिन क्या? अगर करने हैं तो कर लेने चाहिए, फिर क्या इम्तहान के दिनों में करोगे? शाम को जाना है, तो जाकर अब नहा-धो लो, लंच लेकर थोड़ा आराम करना, फिर पढ़-पढ़ाकर शाम को वहीं चले जाना।” रुककर फिर बोले, “हो सका तो मैं भी चला चलूंगा, नीना के फ़ादर से मिलना हो जाएगा।” राजीव ने तिरछी नज़र से पापा को देखा। धीमा-सा मुस्करा दिया।

मि० सेन के चेहरे पर काफ़ी खुलापन था। उठते समय उन्होंने अधपिए सिगार को ऐसा उछाला कि दूर जाकर गिरा। उनके कमरे में चले जाने पर राजीव किताबें इकट्ठी करने लगा था। साथ-साथ हल्की-सी सीटी भी बजाता जा रहा था। किताबें इकट्ठी करके क्षण-भर के

लिए उमने कुछ सोचा, फिर मि० सेन के दफ्तर में फोन करने के लिए चला गया ।

“इट इज टू, मन, क्राइव, श्री—राजीव हियर ?”

.....

“हैलो आन्टोनी, नीना है ?”

.....

“महा रही है ।”

.....

“मैं तो बहुत नरबस हूँ, दिमाग से सब-कुछ उड़ गया, आप ही बताइए क्या करें ? पापा कहते रहते हैं, नीना इज डॉक्टर-ऑफ-ए-बिलियन्ट मदर ।”

.....

“हूँसी की बात नहीं आन्टी ! मैं भी पापा से मही कहता हूँ, आई एम ऑलगे ए सन ऑफ ए टॉपर, रिकाइं तोड़ने वाले का बेटा हूँ । बट पापा हैज डेबलपूड इन्फोरियारिटी ।”

.....

“कम-मे-कम आप उस पर अपनी ‘बिलियन्सी’ का और पापा के रेकाइं ब्रेक करने का रोय गारन्ड तो नहीं करती ।”

.....

“मम्मी तो अपनी फ्रेण्ड की डॉक्टर की शादी में गई हैं ।”

.....

“कल लौटंगी ।”

.....

“खाना तो नौकर बनाएगा ही ।”

.....

“आप पापा से बात कर लीजिए, ही इज बेरी पर्टिकुलर एमाउट ऑल दैट ।”

.....

“होल्ड कीजिए, मैं बुलाता हूँ ।”

राजीव ने वहीं से चिल्लाकर कहा, “पापा, योर फोन ।”

मि० सेन आये बेहरे पर ताबुन लगाए चले आए । थोड़ा झुंझलाते हुए पूछा, “किसका फोन है ?”

“आन्टीज फोन...मैं दे रहा हूँ ।”

मि० सेन ने रिसीवर हाथ में ले लिया “सेन स्पीकिंग, कहिए क्या आज्ञा है ?”

.....

“अरे आप किस तकल्लुफ़ में पड़ गईं, नौकर तो बनाएगा ही, कल वाइफ़ आ जाएँगी ।”

.....

“अच्छा, भाई साहब भी नहीं हैं । इट इज़ काल्ड लक मिसेज जोशी, मैं राजीव से कह रहा था शाम को जोशी साहब से मिलने मैं भी चलूँगा । किसी ऐसे रोज़ रखिए जब भाई साहब भी हों ।”

.....

‘हा, हा, हा...’ कुछ देर तक मि० सेन हँसते रहे फिर बोले, “यह अच्छा कहा, मेरी ‘वाइफ़’ नहीं, आपके ‘हस्वेंड’ नहीं, आप भी खूब ‘विटी’ हैं !”

.....

“ऑल राइट, जैसा आपका हुक्म ! वच्ची का थोड़ा नुकसान होगा ।”

.....

‘हा हा हा’ मि० सेन फिर हँसने लगे ।

.....

“अच्छा तो शाम को मुलाकात होगी, चियर्स ।”

मि० सेन रिसीवर रखने लगे तो राजीव ने उनके हाथ से रिसीवर ले लिया ।

“आन्टी, जरा नीना को बुला दीजिए, ‘टॉपिक’ के बारे में पूछना है।

.....

“हलो नीना, क्या हाल है, फोट डाला ?”

.....

“क्लॉट ! मैंने फोन नहीं किया, तुम तो कर सकती थी। उस रोज आन्टी ने कुछ कहा तो नहीं।”

.....

“मैं तो कर रहा था, इसीलिए फोन नहीं किया था।”

.....

“बोलती क्यों नहीं ?”

.....

“पढ़ लिया ! क्या पढ़ लिया ? मैं पूछ कुछ रहा हूँ, तुम जवाब कुछ दे रही हो। आन्टी लड़ी है। ओह, योर ममी हैज इनवाइटेड माई पापा ! आज शाम को मजा रहेगा।” अन्तिम वाक्य उसने आवाज को धीमा करके कहा।

.....

“शेक्सपियर भी।” दोहराकर वह जोर से हँसा। ‘डरपोक’ कहकर रितीवर रक्त दिया। मुँह चिड़ाकर लौटी बजाता हुआ अपने कमरे में चला गया।

●

दि० सेन काला सूट पहने ड्राइंग-रूम में बहलकदमी कर रहे थे। रोसानी का प्रत्येक उपकरण दीवार के बन्दर बा, आभाम-स्वरूप हल्का-हल्का प्रकाश कमरे में फैला था। शायद सर्दी के कारण सिगार का धुआँ धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था, रंग भी अधिक सफ़ेद था।

टहलते-टहलते उन्होंने पुछा, “राजीव मेक हेन्ट, आठ बज रहे हैं। मिनेज ओगी का फोन भी एक बार का चुका है।”

राजीव कोट की ऊपर वाली जेब में स्माल लगाता हुआ

निकल आया “रेडी पापा, लाटए ‘की’, मोटर निकाल दूँ।”

मि० सेन ने राजीव को ऊपर से नीचे तक देखा। चेहरे पर आया ठहराव हिल गया। हँसते हुए बोले, “लुकिंग स्मार्ट...”

राजीव ने थोड़े बचपने के साथ हँसकर तुरन्त कहा, “वट नाट मोर दैन यू।”

मि० सेन क्षण-भर को अस्थिर हो गए, पर तुरन्त ही हँसने लगे। “आई एम ओल्ड मैन नाउ।” उनके चेहरे का पालिशपन उभर आया।

राजीव कार चला रहा था। मि० सेन सिगार पी रहे थे। धुआँ शीशे के अन्दर से गुजर रहा था।

नीना के घर पहुँचकर राजीव ने जोर से हॉर्न बजाया। मिसेज जोशी और नीना बाहर निकल आईं। राजीव ने उतरते ही कहा, “आन्टी जी! योर गैस्ट इज हियर।” और नीना की ओर पकड़ती तज़रों से देखा। चारों ड्राइंग-रूम में जाकर बैठ गए।

मि० सेन ने कहा, “देखिए मिसेज जोशी, भाई साहब की कमी कितनी अखर रही है, आज भी नहीं हैं...”

“अरे तो क्या हुआ—भाई साहब के आने पर दोबारा सही। मैंने तो आपको फ़ोन पर सब समझा दिया था।” सेन साहब और मिसेज जोशी दोनों एक साथ हँस दिए। राजीव नीची गर्दन करके मुस्कराता रहा।

“आप जानते नहीं, माई हस्वेंड इज आफ़ुली लेज़ी लाइक सरपेंट, वे हिलना-डुलना पसन्द नहीं करते।” इस बात पर सब लोगों ने कहकहा लगाया।

नीना तुरन्त बोली, “मम्मी, आप पिताजी के लिए ऐसी ही बातें करती हैं। आखिर दिन-भर काम करने के बाद, ही इज टायर्ड।”

मिसेज जोशी हँसी, “देखा आपने, अपने पापा की कैसी तरफ़दारी करती है। अंकल दफ़्तर नहीं जाते, फिर भी इतने क्लब्स के मेम्बर हैं—पब्लिक वर्क करते हैं। तुम्हारे पिताजी...” कहकर मिसेज जोशी ने होंठ दिए।

मि० सेन ने नीना की तरफ देखा, वह भी मुस्करा रही थी। सब लोग खाने के लिए उठ गए।

खाना खाने के बाद ड्राइंग रूम में लौटने पर राजीव ने दबी नजर से नीना की तरफ देखा। नीना के होंठ हल्के-से फँस गए। लेकिन उन्हें पुनः बैठने देव मिसेज जोशी ने टोक दिया, “उस वक्त तो फोन पर ही दोषमपियर, मिल्टन बग्याने जा रहे थे...” मि० सेन की ओर देखकर बोली, “बोय आर फॉन्ड ऑफ टॉक्स।”

राजीव के चेहरे पर खिचाव आ गया। मि० सेन ने भी मिसेज जोशी की हँस-मँसली मिला दी, “आन्टी ठीक तो कह रही हैं—जो कुछ डिस्कस करना हो, कर लो। लौटना भी तो है।” बाहर निकलते समय मिसेज जोशी को कहते हुए सुना, “राजीव इज टू सेन्सिटिव—बट ए गुड ब्वॉय।” दोनों एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्करा दिए और कमरे में जाकर जोर-जोर से हँसते रहे।

कुछ देर शान्ति का खाना बातावरण रहा। मि० सेन अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को एक के आगे एक रखकर फूँक मारने लगे। उनकी नजर मिसेज जोशी के कंधों पर से फिमलकर खमीन में लोप हो गई। कुर्सी पर रने मिसेज जोशी के हाथों की उँगलियाँ बारी-बारी से हिलकर बातावरण में छोटी-छोटी लकीरें खींच रही थी।

मिसेज जोशी एकाएक उठ खड़ी हुई, “यहाँ काफ़ी ठंड है—माइए ‘वेड-रूम’ में बैठें, वहाँ हीटर भी है।”

मि० सेन के चेहरे पर शिक्षक का हल्का-सा भाव आया, पर वे उनके पीछे-पीछे चल दिए। उन दोनों के उठकर चलने से कमरे में ध्वान्त प्रकाश का पूरा सम्मोहन छिन्न-भिन्न हो गया। दूसरे कमरे की ओर बढ़ते हुए मि० सेन ने गौर किया, मिसेज जोशी की परछाईं उनकी परछाईं से लम्बी और अधिक गहरी है।

मि० सेन पलंग के बराबर पड़ी आरामकुर्सी पर बैठ गए। मिसेज जोशी ने पलंग के तकिये का सहारा ले लिया। सेन का चेहरा नरम था



दो-तीन अलग-अलग भाव आँगों के कोथों, होंठों की कोर और माँच की सलबटों में थे। मिसेज जोशी ने उनके चेहरे पर से नजर हटाना चाही।

राजीव एकाएक कमरे में दागिल हुआ। मेन माह्रब के अधकैले पाँव एकाएक सिमट गए और मिसेज जोशी की तनिये से टिकी पीठ सीधी हो गई। वे जेब से सिगार निकालकर जलाने लगे। राजीव जल्दी से बोल गया, “पापा, अभी आप बैठेंगे या चलेंगे—बैठें तो मैं एक टॉपिक और निबटा लूँ।”

मि० सेन हकला-से गए। मिसेज जोशी ने उनके चेहरे पर नजर डालते हुए कहा, “पापा से तो जब तुम कहोगे, चल देंगे—मगर डिसकस करना ही तो कर डालो। इम्तहान की रात तक तुम लोग इसी तरह भागते-दौड़ते रहोगे, हाई टाइम नाउ।”

“इट विल टेक एट लीस्ट हाफ़ एन आवर मोर...”

“ठीक है,” सुनकर राजीव उसी झटके के साथ बाहर हो गया।

नीना के कमरे में पहुँचकर उसने जोर से कहा, “अपनी किताब निकालो—आधा घण्टा है। पापा इज बेटिंग, हम लोग जल्दी-जल्दी डिसकस कर डालें।” कहते समय वह मुस्करा रहा था।

“मैंने तो अभी ठीक तरह पढ़ा भी नहीं।” नीना ने भी ज़रा जोर से जवाब दिया। वह होंठ दबाकर मुस्करा रही थी।

“अच्छा तो लाओ मैं प्वाइंट नोट किए देता हूँ—फिर डिसक्स कर दूंगा।” राजीव दाँत भींचकर हँसता, बिना आवाज़ किए लम्बे-लम्बे क़दम रखता, नीना के पास जा खड़ा हुआ।

राजीव की आँख की पुतलियाँ पिघलती गईं। वह नीना को अपने बहुत निकट ले आया।

वह फुसफुसाई, “मम्मी !”

होंठों में हल्के-से कम्पन के साथ, राजीव ने कहा, “दे दू आर विजी...!”

## नया चश्मा

मीड़ियो पर चढ़ने हुए सिवनी भाई ने  
अपनी जेबें टटोलीं ।

“ओह ! ” अनापान मुँह में निबलाना ।

“अगर किसी ने टोक दिया ? ”

पीने आउ बज चुके थे । आउ बजे  
मुस्य बच्ची ने चाय पर बुलावा था ।  
टीकपी द्वारा भी विमान-निवास तथा  
अने और बिट लेबर आने से आपें घरे  
में बस लदने वाला नहीं था । वे  
मीड़ियो पर चढ़ने गए । बरामदे से  
सिवनी बुगियाँ थीं, सब बगी हुई थी ।  
उपने ही लोग लहे हुए, नजर आ गये  
थे । अधिबन्धन लहे लोदी से बहे-बहे  
अधिकारी थे । बैठे हुए विमान का  
अस्य लोह, लघावमेंही और नैग थे ।  
वे लोग मुस्य बच्ची के बरामदे में बैठ-  
कर अपने को लाकरी और वैभवमें  
बर्धवादिने से लोह लघा गये थे ।

सिवनी भाई के एक बड़ा बड़ा

उदा हाथी और अपने को एक



अजीब-सी घबराहट की स्थिति में महमूस किया। चिट न लेकर आने की बात अपनी सबसे बड़ी भूल नजर आने लगी। मुख्यमंत्री का पी० ए०, जो कई बार मुख्यमंत्री से मिलने में बाधक बन चुका था (बल्कि उनके साथ अशिष्टतापूर्ण बरताव किया था) उनकी ही दिशा में आ रहा था। क्षण-भर के लिए वे सोच गए—मुख्यमंत्री से मिलने पर अवश्य ही वह उसकी शिकायत करेंगे। लेकिन एक दूसरे विचार ने उन्हें तुरन्त ही समझा दिया, यह पी० ए० नाम का जीव आज भी उन्हें अन्दर जाने से रोक देगा।

उन्होंने अपने कान कमजोर कुत्ते की तरह दबा लेना उचित समझा, लेकिन उनके जनता द्वारा चुने गए 'विधायक' ने उन्हें उसी क्षण फटकार दिया। उन्हें अपने ऊपर आश्चर्य हुआ—जो आदमी विधान सभा में बड़े-बड़े नेताओं की सिट्टी-पिट्टी गुम कर सकता है वह एक अदना पी० ए० से क्यों दब रहा है? पी० ए० के निकट आ जाने पर शिवजी भाई अपनी गरदन ज़रा सीधी करके खड़े हो गए और कनखियों से देखने लगे—'वह क्या करता है!' पी० ए० बड़ी नम्रता और आज्ञाकारिता का भाव लिए उन्हीं के पास आ रहा था। पी० ए० के चेहरे पर इस अपरिचित भाव को देखकर शिवजी भाई आश्चर्यचकित थे। अनन्त चेहरे...! पी० ए० ने निकट आकर बड़े विनीत स्वर में कहा, "मुख्य मंत्रीजी आपका ही इन्तज़ार कर रहे हैं।"

शिवजी भाई ने बड़ी उदासीन दृष्टि से उसकी ओर देखा और बिना कुछ कहे उसके साथ चल दिए। हालाँकि शिवजी भाई इस बार भी यही सोचना चाहते थे कि वे उस पी० ए० की ज़रूर शिकायत करेंगे।

एक और विचार भी उन्हें अपनी ओर खींच रहा था। वे मुख्यमंत्री के पास जाने से पहले इस बात का अन्दाज़ लगा लेना चाहते थे, आखिर शिवजी भाई को चाय पर क्यों बुलाया गया है। इससे पहले मुख्यमंत्री ने उन्हें ज़रा भी 'लिफ्ट' नहीं दी थी। जहाँ तक वे सोच पा रहे थे, मुख्य-मंत्री ने सरकारी प्रस्ताव के विरुद्ध दिए गए भाषण पर फटकारने के लिए

बुलाया है, कहेंगे 'बिहतर हो, आप पाटी छोड़ दें !' इस बात का उत्तर उन्होंने सोच लिया था ।

बरामदे के बाद गैलरी थी । गैलरी में कार्पेट बिछा था । चलते समय उनके और पी० ए० के कदमों की आवाज बिलकुल नहीं हो रही थी । यह बात उन्हें पसन्द आई थी । दरअसल विधायक-निवास में उनका कमरा ऐसी जगह था, जब भी कोई आता-जाता था तो उनके कमरे के सामने जरूर ताल टोंकी जाती थी । बहुत व्यवधान होता था । उन्होंने सोचा, 'विधायक-निवास' के बरामदे और गैलरियों में भी अगर कार्पेट नहीं तो टाट ही बिछवा दिए जाने चाहिए । वे गैलरी पार कर ड्राइंग-रूम में आ गए थे । इससे पूर्व उन्हें कभी ड्राइंग-रूम में आने का मौका नहीं मिला था । एक-दो बार कभी आए भी तो ऑफिस से ही लौट गए थे । उन्होंने ड्राइंग-रूम पर तुलकर नजर डाली । सामने दो बड़े-बड़े मेतालों के 'पेंटिङ' चित्र थे । नए डिजाइन वाले हरे रंग के सोफे थे । मुख्यमंत्री के वृहद् व्यक्तित्व के अनुकूल एक कालीन सारे फर्श को ढके हुए था । एक कोने में रखी छोटी-सी मेज पर सूखे तारियल पर बना हुआ एक 'साहब' था । उसके मुंह में बज्रूद से भी लम्बी सिगरेट दबी थी । उसको देखकर शिवजी भाई के चेहरे पर मुसकराहट आ गई । "अच्छा साहब यहाँ बैठा है..." कमरा कोने में खड़े वेपर मैसी के लैम्प की मद्धिम रोशनी में पूरी तरह डूबा हुआ था । एक बरामदा था । उसमें हरे मखमल से मढ़ा एक दीवान रखा था । उस पर मुख्यमंत्री के घर की कोई महिला बैठी कुछ काम कर रही थी । विला बगह उन्हें अपनी पत्नी का खयाल हो आया । उसके बाद कुछ सीढ़ियाँ उतरकर एक लॉन था । लॉन के बीचों-बीच एक कुर्सी पर मुख्यमंत्री बैठे घूँप रहे थे । एक व्यक्ति उनके पाँव छूकर विदा हो रहा था । शिवजी भाई ने पैर छूते हुए मादमी को देखकर कटु-वा-सा मुँह बनाया ।

पी० ए० ने थोड़ा दग आगे बढ़कर मुख्यमंत्री के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से कुछ कहा । मुख्यमंत्री खड़े हो गए, 'आइए, आइए' कहते

हुए एक कदम आगे बढ़। हाथ मिलाते हुए बोले, “मैं आप द्रो का इन्त-  
जार कर रहा था। आपकी कल वाली स्पीन सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई।  
कोई तो मिला स्पष्ट कहने वाला ! बाकी सब तो हाथ उठाने वाले हैं।”

शिवजी भाई ने अपनी आंखों को छोटी करके, नजर को मुकीली  
बनाने की कोशिश करते हुए, उगली तरफ देगा। मुख्यमंत्री की सफेद  
और घनी मूंछों के नीचे बड़ी नरल ओर निश्छल मुसकान दिगलाई  
पड़ी। वे उत्तर में ‘धन्यवाद’ ही कर पाए। उन्होंने एक बार फिर सोचना  
चाहा, ‘कल वाली बात की तो मुख्यमंत्री तारीफ ही कर रहे हैं, इसके  
अतिरिक्त और क्या बात हो सकती है?’ लेकिन उस बात की गहराई  
तक पहुँचने का उन्हें अवसर नहीं मिला। चलते-चलते मुख्यमंत्री कह  
रहे थे, “मैंने अपने आठ वर्षों के मुख्यमंत्री-काल में देखा है ज्यादा-  
तर विधायक, विधान-भवन में स्वप्न लेकर आते हैं। आप तो जानते ही  
हैं, स्वप्न सँजोने वाला आदमी बड़ा ही कायर होता है। सत्यता से अधिक  
अपने स्वप्नों से मोह होता है न ! आप जैसे व्यक्ति को न कोई लालच  
है न स्वप्न है, आप सचाई के अधिक निकट हैं।” और हैं-हैं करके जोर  
से हँस दिए।

“मैंने कभी आपको किसी काम के लिए कहते हुए नहीं सुना। और  
लोग मेरी जान खाए रहते हैं। ये परमिट, वो एजेन्सी...और न जाने  
क्या-क्या ! रात में यही सोच रहा था कि आप कितने सच्चे व्यक्ति हैं।”

डाइनिंग रूम आ गया था। वदी से लैस वीरे ने दरवाजा खोल दिया।  
शिवजी भाई की नजर उस समय डाइनिंग रूम की मेज, कुर्सियों और  
सजावट की ओर नहीं थी। फिज का दरवाजा बन्द होने की आवाज से  
वे चौंक गए। न जाने उन्हें कैसे खयाल हुआ—कमरे में कार आ गई  
है।

मुख्यमंत्री के बीच वाली कुर्सी पर बैठ जाने पर शिवजी भाई दो-  
तीन कुर्सी छोड़कर बैठे। बड़ी बेतकल्लुफी से मुख्यमंत्री ने कहा,  
‘ऐसेम्बली में तो आप हमसे दूर रहते ही हैं, यहाँ तो नज़दीक आकर

बैठिए ।" शिवजी भाई और निबट सरक आए ।

बैरे ने घाय बनाने के लिए बेतन्नी उठाई तो मुख्यमंत्री ने उसके हाथ में से मो, स्वयं शिवजी भाई के प्याले में उड़ेलने लगे । शिवजी भाई ने यह कहकर विरोध करना चाहा, "आप इतना धर्मिन्दा क्यों कर रहे हैं ?" मुख्यमंत्री की मुरक-राहट में वह सब-कुछ दूब गया । वे सब चीखें अपने हाथ में उठा-उठाकर शिवजी भाई की प्लेट में रख रहे थे । शिवजी भाई को लग रहा था, उनके हाथ-पाँव जम गए हैं । एक नया विश्वास और उनके मन में जन्म ले रहा था, मुख्यमंत्री अपने प्रति मन्ने और ईमानदार हैं । जो कुछ भी उनके बारे में भला-बुरा बाहर है, वह अपने का लोल है ।

मुख्यमंत्री ने अपने लिए दूसरा प्याला बनाते हुए कहा, "मैं आपसे कुछ प्रकृति धारें भी करना चाहता था ।" शिवजी भाई की आँखों में एक प्रसन्नता उभर आया । उन्होंने मन-ही-मन एक बार और उस बात का सन्दाव लगाने का प्रयत्न किया जो न जाने किस रूप में उनके सामने आने वाली थी । मुख्यमंत्री ने 'ताल्तो' विस्तुट मुँह में रखा और घाय का घूँट भर दिया । उन्नी समय उनकी दृष्टि शिवजी भाई की प्लेट पर गई । शिवजी भाई ने अभी तक बहुत कम खाया था । वे तुरन्त बोले, "अरे, आप तो कुछ ले ही नहीं रहे हैं ।"

"नहीं, मैं तो बराबर ले रहा हूँ ।"

मुख्यमंत्री ने शिवजी भाई की बाग की बिना परवाह किए बहुत-सी गरम पनीरियाँ उनकी प्लेट में और डाल दी । शिवजी भाई बराबर उनके चेहरे की ओर उन्मुखतापूर्वक देख जा रहे थे । मुख्यमंत्री ने अपने मुँह में भी एक पनीरी रखने हुए उनकी ओर देखकर गम्भीरतापूर्वक कहा, "कैबिनेट में एक-दो लोग और लेना चाहता हूँ ।"

शिवजी भाई ने खुले शब्दों में इस बात का समर्थन किया, "यह तो आपने ठीक ही सोचा । आप पर काफी जोर पड़ रहा है—कई विभाग देखने पड़ते हैं ।" उस बात का बिना कोई उत्तर दिए

काटने लगे और शिवजी भाई चुप होकर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे। एक फौक उनकी देखकर और दूसरी अपने मुँह में रगते हुए बोले, "आप ही किर्गीका नाम बताइए। मैं चाहता हूँ, कोई स्वतंत्र आदमी हो। 'हाँ' में 'हाँ' मिलाने वाले तो बहुत हैं।"

शिवजी भाई इस बात की गलतफहमी देने के लिए तैयार होकर नहीं आए थे। वैसे भी उन गवाह ने उन्हें ऐसा कर दिया था, जोराहे पर पहुँचकर जैसे रास्ता भूल गए हों। क्षण-भर में वह सोच गए—मुख्यमंत्री के विश्वास को वह ठेस पहुँचाना ठीक नहीं। उन्होंने दो ऐसे व्यक्तियों के नाम तुरन्त ले दिये जो मुख्यमंत्री की 'गुट-बुक' में थे। उनके इस प्रस्ताव से मुख्यमंत्री कुछ इस तरह गम्भीर हो गए, जैसे शिवजी भाई के मुँह से यह सब सुनने की आशा न हो। शिवजी भाई को लगा किसीकी नई कार का दरवाजा खोलते हुए उनके हाथ से हैंडल टूट गया है। एक बार उन्होंने उस परिस्थिति से समझौता करने की कोशिश की, लेकिन मुख्यमंत्री की इस हल्की-सी प्रतिक्रिया ने उनके दिमाग को अव्यवस्थित-सा कर दिया—“मैं आपसे यह आशा नहीं रखता था कि आप मुझे ये नाम गिना देंगे। आप जैसे व्यक्ति से तो मुझे यही आशा थी कि मेरे सहयोग के लिए आप स्वयं आगे आएँगे। आप अपने को दूसरे से हीन क्यों समझते हैं?”

फिर बोले, “अच्छा, अगर मैं आपसे ही अनुरोध करूँ तो...”

शिवजी भाई को लगा, वे एक ऐसी कुर्सी पर आ बैठे हैं जो उनके बैठते ही तेजी से गोलाकार घूमने लगी है। क्षण-भर के लिए रुककर उन्होंने मुख्यमंत्री के सम्बन्ध में सोचना चाहा, 'महान्' से भी कुछ अधिक है। लेकिन मुख्यमंत्री के इस प्रश्न ने—‘आपने जवाब नहीं दिया’—उनके विचारों की शृंखला को बीच ही में रोक दिया।

“जी, मैं क्या कह सकता हूँ!” उनके मुँह से एकाएक निकल पड़ा। मुख्यमंत्री ने मुस्कराते हुए कहा, “तो ठीक है... फिर कुछ न कहिए। आप स्वतंत्र प्रकार के व्यक्ति हैं, कभी वाद में कहेँ, मैं मिनिस्ट्री वगैरह

के बरकर में नहीं पहना चाहता। मेरे ही ऊपर बांध आएंगी।”

शिवजी भाई दन्तवन्त उठ खड़े हुए। उन्होंने सोचना चाहा, ‘मुन्स-मन्नी के बरफ मूना टीक होगा।’ लेकिन कुछ भी सोच पाने के पहले ही वे गूब गए। मुन्समन्नी ने उन्हें ऊपर ही रोक दिया, मुसकान दिए। फिर मुन्समन्नी शिवजी भाई को हाईनिग-रूम के दरवाजे तक छोड़ने आए।

बिना देरी हुए मुन्समन्नी ने शिवजी भाई के बगले पर हाथ रखकर वहीं सम्भोगापूर्वक कहा, “आज थममन्नी के बिस्ब ओ ‘मेमरमोशन’ आ रहा है” मयम मिलाया, रंग में जानना है, आर त्रिमे मयमिन्ड स्थिति के लिए मटम्य मूना बटिन होगा। लेकिन...” आगिरी सार बहरार के राज-अर के लिए सब मग, फिर बोले, “मेरे लिए भी पाटी को मममना बटिन हो जाएगा।”

शिवजी भाई हाईनिग-रूम में मुड़ते तो उन्होंने ड्राइंग-रूम की ओर में देखा। उसका रंग उन्हें बहुत पसन्द आया। अपने ड्राइंग रूम में उन्होंने ऐसा ही रंग बनाने का निश्चय लिया।

बानीग और मोक्रे, अथमन्नी के ड्राइंग-रूम में अधिक सुन्दर थे। शिवजीने बताया था, रिक्वायर्ड में बनकर आए हैं। गोबकर हवा-गा मुसकान दिए।

शेगनी का इन्ड्राम मुन्समन्नी के ड्राइंग-रूम में अच्छा नहीं था। उनको ऐसा ‘आइडिंग-अरेजमेंट’ ज्यादा पसन्द था, जिसमें एर भी बाव मा द्युब बाहर नहीं दिखाई पड़ना...गब दीवार के अन्दर फिट रहने हैं।

बाहर बगमदे में और सोल भी आ गए थे। राज-अर के लिए डिडक-कर एक नजर डाली। उन्हें महसूस हुआ, गब सोल उनकी तरफ उलुबना-पूर्वक देख रहे हैं। कुछ ने उन्हें मयाकार भी दिया। शिवजी भाई को गन्देह हुआ, ‘कहीं इन लोगों को मादूम तो नहीं हो गया?’ के जल्दी-जल्दी पीड़ियों में उतरने गए।



पोटिको में मुख्यमंत्री की गाड़ी गड़ी थी। पूरी बर्षा में मुसज्जित उनका योफ़र कार पोंछ रहा था। शिवजी भाई के चेहरे पर हल्की-सी हँसी आ गई। अन्तर सदन में जब वे मन्त्रियों को लम्बकारा करते थे तो इस बात की ओर भी संकेत किया करते थे कि 'वे लोग चौतीस फीट लम्बी गाड़ी पर नड़े घूमते हैं।'।

वे स्वयं बाहरवाले दरवाजे की ओर बढ़ रहे थे और उनका मन मुख्यमंत्री की कोठी के अन्दर लौटा जा रहा था। बरामदों के लोगों में सेक्रेटरिएट के अफसर, हाथों में मालाएँ लिए प्रतीक्षा करती हुई जनता, चौराहों पर ठकाठक लगते हुए सैल्यूट, अपनी जान पर खेलकर उनकी रक्षा करने वाले 'श्रीडोज़', पी० ए०, स्टेनो और न जाने क्या-क्या...!

विधायक भवन में गरजता हुआ उनका ही एक और प्रतिरूप ! उनके गले में कुछ अटक गया।

पीछे से एक कार धूल उड़ाती हुई आगे निकल गई। आँखों में कार का इस तरह धूल डाल जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। उनका हाथ तुरन्त अपनी जेब पर गया, लेकिन धूप का चश्मा जेब से नदारद था। आगे बढ़ते हुए उनके कदम तुरन्त रुक गये। उन्हें खयाल आया, 'शुक्ते ही शायद उनका चश्मा गिर गया था।'।

'चश्मे के लिए लौटकर जाना ठीक होगा ?'

लेकिन वे लौट पड़े। सड़क पर चलती मोटरों का इस तरह उनकी आँखों पर धूल उड़ाना उन्हें एकदम सहन नहीं था।

शिवजी भाई जब ड्राइंग-रूम के दरवाजे पर पहुँचे तो मुख्यमंत्री शायद किसी से टेलीफोन पर कह रहे थे—“एक डोज़ काफी है, अब छः महीने तक नहीं बोलेगा...”

वे बाहर ही ठिठक गए, लेकिन पुराने चश्मे के लिए मुख्यमंत्री को तकलीफ देने की बात सोचकर उन्हें अपने ऊपर हँसी आने लगी।

नया चश्मा खरीदने की बात सोचकर वे दरवाजे ही से लौट पड़े।

## अलग-अलग कद के दो आदमी

लम्बा व्यक्ति बाहर से लौटकर आया था। उसका चेहरा अपने कद की ही तरह लम्बा लम रहा था। चुपचाप कुर्सी पर बैठकर अपनी दोनों हथेलियों को अपने चेहरे पर ऊपर-नीचे करने लगा। पहले से इन्तजार करते हुए छोटे व्यक्ति ने उसे गौर से देखते हुए पूछा, "लौट आए ?"

लम्बे व्यक्ति ने कोई जवाब नहीं दिया। चेहरे पर हथेलियाँ फेरना जारी रखा। उसने दोबारा पूछा, "क्या हुआ ?"

लम्बे ने चेहरे पर से हथेलियाँ हटाई नहीं, नीचे लिमका लीं। टैगलियों के बीच की छिरियाँ उसकी आँखों पर आ गई थी। वह छिरियाँ से देखता रहा, कुछ बोला नहीं। छोटे की आवाज में कुछ तेजी आ गई, "कुछ बोलोगे या मनहूसों की तरह बैठे रहोगे ?"

लम्बा व्यक्ति एकाएक उठ गया हुआ और तेज आवाज में बोला,  
“तुम्हें मेरे साथ चलना है।”

छोटे व्यक्ति के चेहरे से लगा वह एकदम झुंझा पड़ेगा। लेकिन  
बड़े संयत ढंग से पूछा, “कहाँ?”

“कहीं भी।”

“जगह का नाम तो बताओ?”

“इसका मतलब तुम्हें नहीं चलना है, तो फिर मैं जाता हूँ।”

छोटा व्यक्ति कुर्सी से उठ गया हुआ और हाथ ऊँचा करके लम्बे  
व्यक्ति के कंधे पर रख दिया। धीरे से पूछा, “आखिर बात क्या है,  
डाइरेक्टर माना नहीं?”

उसने बड़ी अजीब टोन में उत्तर दिया, “मैं कह रहा हूँ चलो, तुम  
जिरह किए जा रहे हो!”

छोटे ने उसके चेहरे की ओर देखा और गर्दन को झटका देकर  
बोला, “अच्छा चलो, कहाँ चलते हो?”

दोनों कमरे से बाहर निकले। लम्बा व्यक्ति आगे-आगे, छोटा पीछे।  
सड़क पर चलते हुए वे दोनों आपस में कुछ नहीं बोल रहे थे। अँधेरी  
गलियों से भी चुपचाप निकले चले गए। सामने से कोई आता था तो  
लम्बा व्यक्ति एक तरफ हो जाता था। कभी-कभी गली संकरी होने की  
वजह से दीवार से भी चिपक जाना पड़ता था। छोटा उसका अनुकरण  
करता हुआ आगे बढ़ रहा था। शाम का वक्त था, लोग सड़क पर टहलते  
चले जा रहे थे। लेकिन ये दोनों झपटकर चल रहे थे।

काफ़ी दूर चल लेने के बाद छोटे ने फिर पूछा, “आखिर कहाँ जा  
रहे हो, कुछ बताओगे या यों ही चलते रहोगे?”

लम्बा खामोश रहा। आगे जाकर एकाएक रुक गया और जँगली  
से दिखाकर बोला, “यहाँ।”

“वॉर में?” छोटा थोड़ा चमक गया था।

“हूँ।”

"तुम जानो हो मैं पीता नहीं।"

"हूँ।"

"फिर?"

"मैं तो पीता हूँ।"

"तो मुझे क्यों लाए?" छोटे व्यक्ति को गुमनाम आ गया।

लम्बे ने बड़े ठोकर के साथ कहा, "मैं रिजेंगा, तुम बैठे रहना।"

●

दोनों अन्दर साफ-साफ घुसे। लम्बे व्यक्ति का बेहतर बरपी छामोरा था। छोटा कुछ बड़ा हुआ था और मनोपंज में पड़ गया था। पूरे हॉल में गाना कुमिली-ही-कुमिली था। मैनेजर काउंटर पर बैठे हिमाचल-बिनायक बर रहा था। बैंग बाबर्चीगाने (पेन्टी) के दरवाजे में एक दीवार में पीठ टिकाए, दूसरी दीवार में टांगें अड़ाकर आइस मशीन, छत की ओर मिश्रीट का घुमा छोड़ रहा था। हॉल का अन्दर हिमी बड़े रोड का इतने आग-आ जगता था। गडक की तरफ लगे 'क्याम-अर्चीनी' के पर्दे अभी लगे नहीं गए थे।

लम्बे मित्र ने गामोनी अनाए रखने का प्रयत्न करने हुए पूछा, "क्या का बेडिन है?"

"जहाँ बारी।"

बड़ बेडिन की ओर बढ़ गया। पीछे-पीछे छोटेवाला भी। छोटे को पूरा ओर देख के बीच में दिखलने के लिए घुटनों की मोटा घुमाया था। लम्बे व्यक्ति 'कुत्ता' के एक कोने का बेंचवर पीछे की तरफ बढ़ा और बढ़े गया, "मैं बाहर भी बैठ सकता था, मुझे दूरी और जगह..."

छोटा लम्बे को चुन चुन फिर बोला, "हाँ मुझे ही क्या जब तक कि मैंने ही चुन ही।"

एक बार में लम्बे व्यक्ति के चेहरे की झुलझुली बरही लगी थी। वेला कर गया। कुछ दूरी बाद लम्बे व्यक्ति अन्तः-अन्तः काट गया।

आने लगी। वह दोबारा उतना ही गम्भीर हो गया था। हालाँकि उनके इस क्षणिक परिवर्तन ने गामोमी का सम्बन्ध बदलकर दूसरा कर दिया था।

लम्बे ने बैरे को बुलन्द आवाज में पुकारा। छोटे के चेहरे पर मुस्क-राहट आ गई। बैरा कुछ देर बाद दृष्टि करने के अन्दाज में आकर खड़ा हो गया। लम्बे व्यक्ति ने बैरे पर एक नजर डाली, एक पांव को थोड़ा मुड़ा और समतार्दी पीठ देगाकर पूछा, “तुम्हारे पैर में तकलीफ है?”

बैरा सीधा खड़ा हो गया। लेकिन उसके चेहरे पर झुंझलाहट आ गई। लम्बे ने दूसरे से पूछा, “क्या लोगे?”

उसके जवाब देने से पहले ही लम्बे वाले ने मुँह ही कहा, “तुम तो काँक्री लोगे, अच्छा इनके लिए काँक्री लाओ।”

“आप?”

“क्या है?”

बैरे ने सामने वाली मेज पर रखा ‘मीनू’ उठाकर उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने बिना मीनू देखे कहा, “रम डबल पैग, सोडा सोलकर न लाना।”

“खाने के लिए?”

“खाने के लिए...” लम्बे व्यक्ति ने दोहराया।

“क्या है?”

बैरा फिर मीनू के सफ़े पलटने लगा। लेकिन लम्बे व्यक्ति ने जल्दी से वृत्ता दिया, “दो अंडों का आमलेट... प्याज ज़रा ज्यादा।”

“आमलेट में देर लगती है...”

लम्बे वाला चिल्लाने को हुआ, लेकिन बैरा के चेहरे पर नजर डालकर फिसफिसाते हुए कहा, “ठीक है, ले आओ।”

बैरा चला गया।

छोटा, लम्बे व्यक्ति की ओर देख रहा था। उसके हाव-भाव बिछी हुई

सफेद चादर के नीचे रेंगते हुए कीड़ों की तरह लग रहे थे। आखिर उसने पूछा ही, "डाइरेक्टर में क्या हुई?"

"हूँ" कहकर यह झुप लगा गया। कुछ देर बाद उसने दोबारा कहा, "एक्सपर्ट तो वही है न?"

लम्बे ने फिर लम्बी "हूँ" कर दी। छोटे के हाँठ मुस्काने की स्थिति में आते-आते रह गए, "तुम्हारा लिया जाना (मिनेक्षण) तो निश्चित (श्योर) है; तुम्हारे ही डाइरेक्टर तो एक्सपर्ट हैं और क्या चाहिए।"

इस बार लम्बे व्यक्ति के हाँठों पर ये शब्द लौटते हुए-से लगे। दूसरे ने फिर बात को तोड़ा, "तुमसे डाइरेक्टर तो खुश हैं ही, तुम्हारे पिता के दोस्त टहरे। तुम ही तो बता रहे थे न सुबह!"

लम्बे व्यक्ति ने जाँचने वाली दृष्टि से उमकी ओर देखा। छोटे के चेहरे पर कोई ऐसा-बैसा भाव नहीं था। लेकिन लम्बे के चेहरे से लगा, एक-आध घोट साकर वह बिखर जाएगा।

दूसरे ने बात को घुमाकर कहा, "कमीशन का रय तो ज्यादातर 'एक्सपर्ट' की राय पर निर्भर करता है। इस बार तुम्हें रिजेक्ट नहीं करेगा।"

लम्बा वाला एकाएक बोला, "उस डाइरेक्टर की माँ की..." फिर एक-दम रुक गया। लम्बे पाँज के बाद फिर कहा, "होना होगा तो नहीं होने देगा।"

बैरा रगौन गिलाम में दो पैर बराबर रख और मोड़े की बोनट लेकर आ गया था। गिलाम में बैठ पर रखकर उसने मोड़े की बोनट मोदी। उस लम्बे आदमी ने आधे से कम सोडा अपने गिलाम में डबल किया और मिला होने हुए देखने लगा।

"आमनेट?"

बैरा थोड़ी दूर खड़ा गया। उसे बुलन्द आवाज के साथ कहता रहा, "प्याज ज्यादा लाना... नमक-निर्ब भी।" बैरा सीधा चला गया था।

लम्बे व्यक्ति ने गिलास उठाकर घूंट भरा। जवान को थोड़ी पतली करके होंठों पर फेरते हुए सिगरेट मुगलाने लगा। दियागलार्ड की रोगनी में उसका सिगरेट जलता हुआ नेहरा थोड़ा और बिगड़ गया। सिगरेट में दम लगा लेने के बाद उसके नेहरे पर छनी हुई मुस्कराहट आ गई थी। उसने छोटे से कहा, “तुम तो सिगरेट भी नहीं पीते...” और मुस्करा दिया।

छोटे ने भी अपनी हंसी को संयत करते हुए कहा, “तुमने डाइरेक्टर वाली बात फिर गोल कर दी।”

बैरा आमलेट, प्याज, नमक, मिर्च ले आया। लम्बे व्यक्ति ने प्याज का टुकड़ा मुंह में रखते हुए पूछा, “और कॉफ़ी...”

“लाता हूँ सा’ब। इस समय कॉफ़ी बनने में थोड़ी देर लगती है... काम का वक़्त है।”

लम्बे वाला बड़ी मुरचि से आमलेट को बराबर-बराबर टुकड़ों में काट रहा था। आमलेट के कटे हुए टुकड़ों पर सॉस लगाकर एक-एक टुकड़ा मुंह में रखता जा रहा था।

छोटा अपनी बात उकेरने के चक्कर में था। अपनी बात को घुमा-फिराकर फिर लाइन पर लाया—“लगता है डाइरेक्टर से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई।” लम्बे मित्र का पूरा चेहरा एक उत्तर नज़र आने लगा। छोटे की आँखों में शैतानी आ गई, लेकिन बहुत धीमे और सहानुभूति-पूर्ण स्वर में बोला, “तुम ऐसे क्यों हो गए, कोई खास बात?”

“वह स्साला...” कहकर आमलेट का टुकड़ा मुंह में रखा और एक बड़ा घूंट भरकर नाराज़गी के साथ बोला, “पूछता था... मैं नैनीताल गया था, तुम कहाँ थे... उस हरामजादे की लुगाई के पास... उस स्साले को यह बताता मैं कहाँ था!”

अन्तिम घूंट भरकर उसने जोर से पुकारा, “बैराप् !”

बराबर के केविन से बातें करने की आवाज़ आने लगी थी। सामने की मेज़ पर भी एक सज्जन आ गए थे। वियर का गिलास सुड़क रहे

थे। लम्बे व्यक्ति के चिल्लाने से सामने वाले सज्जन ने झुककर उन लोगों की ओर देखा। उन सज्जन के चेहरे से लगा, उसके जवाब में वे चिल्लाकर कहेंगे 'चीप्प...बे'। लेकिन उन्होंने कुछ कहने के बजाय अपनी बियर और जोर से मुहक ली। बराबर वाले केविन में कुछ क्षणों तक चुप्पी रही, फिर बड़ी जोर से कहकहा लगा।

बैरा आ गया था। लम्बे व्यक्ति ने एक पैग और लाने के लिए कहा, "जल्दी में।"

मटन कटलेट भी मंगाए। कॉफी अभी तक नहीं आई थी। इस बार छोटे वाले ने ही बैरा को मदद दिलाया, "कॉफी भी।"

"हाँ, हाँ कॉफी भी आती है," कहता हुआ बैरा चला गया।

लम्बा व्यक्ति अपनी बात पूरी करता हुआ बोला, "हालाँकि मैंने उसे बता दिया कि छुट्टी लेकर लखनऊ गया था, पर वह पागलों की तरह गर्दन हिला रहा था तो...नो...बैठने तक के लिए नहीं कहा!"

छोटे ने गम्भीरतापूर्वक अपनी राय जाहिर की, "तो कोई खास बात नहीं हो सकी।"

"बात! मैं उस साले से बात करता। वो बात करने लायक आदमी है...हूँह। मैं थोड़ी देर खड़ा रहकर चला आया, सिलेक्शन नहीं होने देना तो न होने दे। मैं परवाह करता हूँ।" उसके चेहरे पर सिमटन उभर आई। आँखें छोटी-छोटी और ताजी नजर आने लगी।

पैग आ गया था। इस बार बचे हुए सोडे में से भी आधा मिलाया। प्लेट में बचे आमलेट के एक-दो टुकड़ों के सहारे गूरा पैग गटागट पी गया।

बराबर वाले केविन के लोग जोर-जोर से बातें कर रहे थे। किसीका सरकार के त्रिस्ट 'रिट' मजूर हुआ था। उसीकी ओर से पार्टी थी। वह आदमी आवेग में था, "सरकार क्या समझती है अपने को...बाबू सिवयोहन के साथ मावका पड़ा है...ठंडा कर देवे...इस साले मिनिस्टर



लम्बे व्यक्ति ने गिलास उठाकर घूंट भरा। जवान को थोड़ी पतली करके होंठों पर फेरते हुए सिगरेट गुलगाने लगा। दियासलाई की रोशनी में उसका सिगरेट जलाता हुआ चेहरा थोड़ा और बिगड़ गया। सिगरेट में दम लगा लेने के बाद उसके चेहरे पर छनी हुई मुस्कराहट आ गई थी। उसने छोटे से कहा, “तुम तो सिगरेट भी नहीं पीते...” और मुस्करा दिया।

छोटे ने भी अपनी हँसी को संयत करते हुए कहा, “तुमने डाइरेक्टर वाली बात फिर गोल कर दी।”

वैरा आमलेट, प्याज, नमक, मिचं ले आया। लम्बे व्यक्ति ने प्याज का टुकड़ा मुंह में रखते हुए पूछा, “और कॉफ़ी...”

“लाता हूँ साँव। इस समय कॉफ़ी बनने में थोड़ी देर लगती है... काम का वक्त है।”

लम्बे वाला बड़ी सुरुचि से आमलेट को बराबर-बराबर टुकड़ों में काट रहा था। आमलेट के कटे हुए टुकड़ों पर सॉस लगाकर एक-एक टुकड़ा मुंह में रखता जा रहा था।

छोटा अपनी बात उकेरने के चक्कर में था। अपनी बात को घुमा-फिराकर फिर लाइन पर लाया—“लगता है डाइरेक्टर से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई।” लम्बे मित्र का पूरा चेहरा एक उत्तर नज़र आने लगा। छोटे की आँखों में शैतानी आ गई, लेकिन बहुत धीमे और सहानुभूति-पूर्ण स्वर में बोला, “तुम ऐसे क्यों हो गए, कोई खास बात?”

“वह स्ताल...” कहकर आमलेट का टुकड़ा मुंह में रखा और एक बड़ा घूंट भरकर नाराज़गी के साथ बोला, “पूछता था... मैं नैनीताल गया था, तुम कहाँ थे... उस हरामजादे की लुगई के पास... उस स्ताल को यह बताता मैं कहाँ था!”

अन्तिम घूंट भरकर उसने जोर से पुकारा, “वैराप् !”

बराबर के केविन से बातें करने की आवाज़ आने लगी थी। सामने की मेज़ पर भी एक सज्जन आ गए थे। बियर का गिलास सुड़क रहे

थे। लम्बे व्यक्ति के चिल्लाने से सामने वाले सज्जन ने झुककर उन लोगों की ओर देखा। उन सज्जन के चेहरे से लगा, उसके जवाब में वे चिल्लाकर कहेंगे 'चौप्प...वे'। लेकिन उन्होंने कुछ कहने के बजाय अपनी विषर और जोर से मुड़क ली। बराबर वाले केविन ने कुछ क्षणों तक धुप्पी रही, फिर बड़ी जोर से कहकहा लगा।

बैरा आ गया था। लम्बे व्यक्ति ने एक पैग और लाने के लिए कहा, "जल्दी से।"

मदन कटलेट भी भँगाए। कॉफी अभी तक नहीं आई थी। इस बार छोटे वाले ने ही पैग को याद दिलाया, "कॉफी भी।"

"हाँ, हाँ कॉफी भी आनी है," कहता हुआ बैरा खला गया।

लम्बा व्यक्ति अपनी बात पूरी करता हुआ बोला, "हालाँकि मैंने उसे बता दिया कि छुट्टी लेकर लखनऊ गया था, पर वह पागलों की तरह गर्दन हिला रहा था नो...नो...बैठने तक के लिए नहीं कहा।"

छोटे ने गम्भीरतापूर्वक अपनी राय जाहिर की, "तो कोई खास बात नहीं हो सकी।"

"बात! मैं उस साल से बात करता। वो बात करने लायक आदमी है...हूँ। मैं थोड़ी देर खड़ा रहकर खला आया, मिलेकशन नहीं होने देगा तो न होने दे। मैं परवाह करता हूँ।" उसके चेहरे पर सिमटन उभर आई। अखिरे छोटी-छोटी और ताजी नजर आने लगी।

पैग आ गया था। इस बार बचे हुए सोबे में से भी आया मिलाया। प्लेट में बचे आमलेट के एक-दो टुकड़ों के सहारे पूरा पैग गटागट पी गया।

●  
बराबर वाले केविन के लोग जोर-जोर से बातें कर रहे थे। किसीका सरकार के विरुद्ध 'रिट' मंजूर हुआ था। उगीकी ओर से पार्टी थी। वह आदमी आवेश में था, "सरकार क्या समझती है अपने को...बाबू सिवमोहन के साथ साबका पड़ा है...ठंडा कर दें...इस साले मिनिस्टर

की ऐसी की तैसी भावें । गाले हमें ही मोअत्तल करेंगे ।”

“कानून साथ देगा, कभी-कभी पैसा का पैसा गानं हो और ब्रैक्कूक बनो ।” शायद यह बात कहने वाला आदमी उसका कानूनी दोस्त नहीं था ।

“अबे तुम मुझे 'तिया नमजते हो । गालो अफसरी की है...घात नहीं खोदी । जितनी इन मिनिस्ट्रों को तनखाह मिलती है मेरा बाप हाली ग्वालों में बांट देता है । माअ्दर...”

लम्बा व्यक्ति चुप हो गया था, छोटे से बोला, “ठीक कहता है... मेरा बाप भी इन सालों की...” वह कुछ बोल नहीं पाया, गर्दन झुक-सी गई ।

बैरा कटलेट ले आया था । लम्बे वाले ने शटके के साथ गर्दन उठा-कर उसे देखा “अबेऽ पेग नहीं लाया ?”

“जी, अभी लाता हूँ, डबल पैग साहब ?”

“अबे हमने कभी सिगल पिया है ?”

बैरे के चेहरे पर प्रसन्नता नजर आ रही थी ।

उसने धीरे से पूछा, “सोडा भी ?”

“नोव् सोडा ।”

बैरे के जाने पर वह छोटे व्यक्ति के नजदीक मुँह ले जाकर बोला, “सोचता था कुछ दिन और रह जाता...” वदबू के कारण छोटे वाले ने मुँह घुमा लिया था । लेकिन उसे लगा लम्बे वाला पिघलता जा रहा है ।

“बच्चे...बीबी, सब कहाँ...” बोलते-बोलते वह एकाएक रुक गया । चेहरा सख्त होने लगा और तमतमा आया, “साले नहीं सिलेक्शन करेंगे तो कद्दू से...मैं कौन सालों से नौकरी माँगने जाता हूँ ?”

छोटा थोड़ा सहमा-सहमा हो गया था । उसने तपाक से कहा, “ठीक तो है, तुम नौकरी क्यों करोगे ।”

लम्बे व्यक्ति ने लम्बी ‘हूँऽऽ’ भरी । ‘हूँ’ के माध्यम से शायद उसने बराबर के केविन में बैठे उस मोअत्तल अफसर की बात दोहरानी चाही



लोगों को भी अपने साथ मिलाऊंगा...." एक लम्बा घूंट भरा, थोड़ा-सा आगे झुककर छोटे वाले के कान के पास मुँह ले जाने का प्रयत्न करते हुए बोला, "मैंने तैयारी कर ली है....मिर्फ तुम्हें ही बता रहा हूँ.... किसीसे.... कहना मत । ये आइरेक्टर्वा जेल काटेगा ।" और हो-हो करके हँसने लगा ।

एक घूंट और भरा और अपने साथी की ओर टकटकी बाँधकर देखता रहा । पहले छोटे व्यक्ति ने हँसना चाहा, फिर चेहरे पर असुविधा-सी दिखलाई पड़ने लगी ।

एकाएक विजली चली गई । लम्बा व्यक्ति चिल्लाया, "जलाओप्" और एक गंदी-सी गाली दे दी । बराबर वाले केविन से एक कड़कहा सुनाई दिया । फिर वे लोग भी गालियाँ देने लगे, "अबे, विजली बन्द की है तो अपनी बहन को ले आ ।"

लम्बा व्यक्ति दुखी हो उठा था । बड़ी मुश्किल से कह पाया, "....फूहड़ हैं !"

सड़क की तरफ वाले शीशों पर जो पदें खिच गए थे, विजली चली जाने के कारण हटा दिये गए । सड़क की रोशनी के गोले, त्रिकोण, चतुर्भुज अनेक ज्यामितीय आकार हॉल में बिखर गए ।

एक गोले का चौथाई भाग उनकी मेज पर भी था । वह घूंट भरकर अपना गिलास उस कटे हुए गोले के बीचोंबीच रख देता था । गिलास में रोशनी घुल जाने के कारण शराब का रंग थोड़ा खुल गया था ।

लम्बे व्यक्ति ने अपने साथी को गिलास दिखाकर कहा, "देखाSS, हमने रोशनी को गिलास में भर लिया....हम रोशनी पीते हैं, तुम भी पियो ।" वह अपना गिलास उसके मुँह से लगाने लगा ।

छोटे ने उसका हाथ अलग हटाते हुए पूछा, "तुम अभी किस तैयारी की बात कर रहे थे ?"

वैरा मोम टपकाकर मोमवत्ती का टुकड़ा मेज पर जमा रहा था । लम्बे व्यक्ति ने उसकी बात को नज़र-अन्दाज़ करके वैरा से कहा, "इसे

यहाँ क्यों टपकाते हो...कहीं और ले जाओ। भले आदमियों के सामने ऐसा मजाक नहीं करना चाहिए। गन्दी बात..." बैरा ने धीरे से कहना चाहा, "मा'ब रोशनी..."।

छोटा व्यक्ति बीच ही में बोला, "ठीक है, लगा दो।"

लम्बा मान उसे देखता रहा। दूसरी मेजों पर मोमबत्तियाँ जला दी गईं। मोमबत्तियों की लौ के काँपने से चारों दीवारें भी काँपने लगती थीं। मेजों पर रखी मोमबत्तियों के नीचे अँधेरे के गोले इधर-उधर लुढ़कने लगे थे। लम्बे व्यक्ति ने इधर-उधर देखकर पूछा, "यह सब कैसा लग रहा है?" उसने अपना गिलाम मोमबत्ती के आगे रख दिया था।

दूसरे ने अपने सवाल को फिर दोहराया, "तो जिम तरह की तैयारी का तुम जिक्र कर रहे थे, पूरी हो गई?"

"तुम जानते हो। उँह, नाऽ ही जानते—मैं कुमार्पू लंड बना रहा हूँ।" कहकर वह फिर दूब-सा गया। छोटे वाला उसकी ओर घौर से देखता रहा। जब उसने गर्दन उठाई तो फिर पूछा, "अकेले हो?"

"नाऽ ही, बड़े बान्ना—दफ्तर के साऽ व लोग। अतरिम जिला परिषद् वालों से भी बात हो गई—वहाँ भी साऽ तैयार हैं। मध्यक्ष को राष्ट्रपति के लिए बह दिया है।"

हॉल में आवाजें दूबती-सी जा रही थीं। बराबर वाले केविन के सौग भी एकदम खामोश थे। गिलासों के मेजों पर रखे जाने या काँटा-छुरी के प्लेटों से टकराने की आवाजें समयान्तर से सुनाई पड़ रही थीं। मेजों पर जलती मोमबत्तियों के कारण सामने की दीवार पर ढापू-ढापू-सी आकृतियाँ बन गई थीं। उनमें से एक के चस्मे में सुराख नजर आ रहा था। उस परछाई का बही प्रकाशविन्दु था।

बाहर वियरवाला आदमी बिल चुका रहा था। आँखों से सुईयाँ उभर आई थीं। उसका मुँह हुआ सिर दीवार पर कई गुना दिखलाई पड़ रहा था। छोटे व्यक्ति को दिखाकर उसने कहा, "ये, हमारे राष्ट्रपति का निर है।"

छोटे ने पूछा, “तुम देश को टुकड़ों में क्यों बांटना चाहते हो ?”

लम्बे व्यक्ति ने बड़ी मुश्किल से उनकी ओर धमक कर फूहड़-सी गाली दी, “ 'निया की घोड़ी—तुम ना ऽ हीं नमसोंगे । मैं उमरतो बेन—बनाना चा'ता हूँ ।” अन्तिम बात उसने गोपनीयता बनाये रखते हुए कही थी ।

कुछ रक्तकर बोला था, “इट इज पालिटिक्स...सू आर चाइल्ड ।”

“किसीसे कहना मत—तुमा' रा भी सायाल रगूंगा...।”

बची हुई मुँह में उँड़ेलकर छोटे वाले की ओर देगता हुआ बुदबुदाया । “अगर मिलेकशन नहीं हुआ...तो...तुम सरकार के पास जाकर कह देना...मुझे पकड़कर ले जाएगी...मिनिस्टर...बना देगी ।” उसके चेहरे पर कई रेखाएँ एक साथ एकट्ठी हो गई । होंठ निकुड़ गए ।

धीरे-धीरे चेहरे की रेखाओं को कम करता हुआ बोला, “मेरी कुंडली में डिकटेटर का योग है,—हिटलर—मुनोलिनी...। इन सालों को तो बान्द कर दूंगा—हाथ जोड़ेंगे, माफी माँगेगे ।” हा-हा...हँसने लगा ।

“तब इनका बाप सिलेकशन करेगा—नई तो सालों को डिसमिस—डिसमिस—डिस...।” छोटा उसके हर व्यवहार को बड़े गौर से देख रहा था ।

उसने अपनी केतली का ढक्कन उठाकर देखा । कॉफ़ी बाकी थी । वह एक प्याला और बनाकर पीने लगा ।

लम्बे व्यक्ति की गर्दन एक ओर लुढ़की हुई थी । कुछ देर बाद फिर उसने आँखें खोलیں । उसे कॉफ़ी पीते हुए देखकर बोला, “देखो, मजा आया—। हाँ, प्याले में ही पियो—किसीको शक नाई होगा—।”

“आज, तुम मेरी केबिनेट में लिये जा सकते हो—माई मिनिस्टर,” उसने पीठ पीछे टिका ली ।

बराबर वाले केबिन में बैठे हुए लोग उठने लगे थे । खटपट की आवाज़ हो रही थी । छोटे व्यक्ति ने धीरे से कहा, “चलो दस वज गए ।”

“नाऽ हीं, मुझे इंटरव्यू में बैठना है—आई विल सी—दैट वगर

डाइरेक्टर इस नाट मिलेबटेड ।" लम्बा व्यक्ति एकाएक नाराज हो गया था ।

बिजली आ गई । दीवार पर बनी ढापू-ढापू आकृतियाँ गायब हो गई । लम्बे ने चारों तरफ देखा और धीरे से बोला, "बलोऽऽ ।"

रास्ते में लम्बा व्यक्ति धीरे से बोला, "शायद मैं बहुत पी गया हूँ—अब इटरभ्यू कैसे दूँगा—तुम साथ चलना ।"

घोड़ी देर बाद फिर कहा, "मेरी तरफ़ में माफी माँग लेना—डाइरेक्टर कहना या तुम इर्रेसपोसिबल हो—"

छोटे व्यक्ति के कंधे से सिर टिकाकर लम्बा व्यक्ति सिसकने लगा ।



## परछाइयाँ

वह बाजार गई हुई थी। आंगन में बैठकर मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

हमेशा की तरह आज भी लग रहा था मेरा घर किसी पहाड़ी पर है। ऊँट की काठी-सी सामने वाले होटल की छत के सिचाय वाकी सब-कुछ अन-हुआ-सा था।

अँधेरा भगोड़े विद्यार्थियों की तरह पीछे के दरवाजे से दवे-पाँव कलास में घुस जाने का प्रयत्न कर रहा था। उसके लौटने में अभी आधा घण्टा शेष था। सात बजे तक लौट आने के लिए कह गई थी।

मैंने आकाश की ओर देखा। शाम अब अपने असली रंगों में प्रकट होने लगी थी। इस बीच 'उसका' आना मुझे इस तरह महसूस होता रहा था, कोई पन्द्रह-सोलह साल का लड़का पहली बार बन्दूक चलाने के बहुत पहले से ही उसका घड़का महसूस

करता है। कुडी का लटक जाना, पदचाप और हुमकती साँसें, जाने समय वह इन सबको मेरे पास छोड़ गई थी।

सुबह गाड़ी से उतरकर जब वह आई थी, मैं बाहर आंगन में ही बैठा सुबह के आने और रात के जाने का मिलान कर रहा था। पीपल का एक नया पत्ता किरण के साथ नेलने में बेखबर था, कभी-कभी उसका अङ्ग मेरी आँखों में भी गड़ जाता था। उन समय भी मेरे दिमाग में उसके आने की मान थी।

●  
उसके आने में देर होनी जा रही थी। सुने में बैठे-बैठे मुझे टह लगने लगी थी। मैं कुर्मी से उठा और नये तलवाँ को मोड़कर हिलना-डुलना अन्दर कमरे में चला आया। कमरे में अभी भी भँबेरा था। वहाँ पर रंगे शीशे, पीतल और चाँदी के 'घो-पीन' इस्के-डुस्के प्रतिक्रियावाधियों की तरह भँबेरे की सत्ता का विरोध कर रहे थे। बत्ती जला दी। कमरे में रसी अग्न्यकारमयी वस्तुएँ तो गिल ही उठी, उन घो-पीनों को भी प्रकाश के धोड़े-धोड़े कण मिल गए। भबभे अधिक ने ही चमकने लगे। मैं वही कुर्मी पर बैठ गया और पाँव फैलाकर दिमाग की आराम देने की कोशिश करने लगा। दिमाग पूरी वर्षे चाली छोड़कर कोने में निमुड़कर बैठा वही सोचने में लगा था—'सफ़र में आराम कहाँ !'

'क्या उमका रात में यहाँ रहना टीर होगा ?' इस प्रश्न ने मेरे हृदय को छू दिया। मुझे डर था, वही सब भाषावेगों को इकट्ठा करके वह मुझसे शायङ्गना न शुरू कर दे। लेकिन यह जानकर आश्चर्य हुआ, कभी-कभी हृदय भी दिमाग की तरह ही व्यस्त रहता है।

मैंने दिमाग के इस बचकाने सवाल को अननुना कर दिया था। इस रोज पहले जब उसका खन आया था, अमुक तागेश की पट्टेब रही हूँ, तो दिमाग ने इस भवात पर बहुत ठप्पी तरह नोका था। जैसे वह मयान सहक पर पड़ो लाचारिय लगन हो। लेकिन अब उनके आ जाने पर इस तरह के सवाल टपार आने की मैंने सम्भवता टपन करने

दुर्भावनापूर्ण प्रयत्न ही गमना ।



दरवाजे पर खिशा मका । रक्तों का झटका मेरे पूरे शरीर को महसूस हुआ । रिंगों में उतरते हुए उमनी गिड़गिड़ी दूध-गड्ढ-नी रिसलाई पड़ती हैं । मुझे लगा जैसे झूठी हुई समीकरण का मून मिल गया है । लेकिन उस समीकरण को इस समय दोहराना उचित न समझकर, मन को विरलता में भटकने के लिए छोड़ दिया ।

फँसे हुए पाँच सिकोड़ लिये, लेकिन गड़े होने पर महसूस किया कि पैरों में जूता नहीं है । इस बार तालवों को मिनोड़कर अपाहिजों की तरह चलना मुझे रुचिकर नहीं लगा । गुण्डी लगातार सटपटाई जाती रही । मेरा नौकर पीछे रसोई में खाना बना रहा था । मैंने उसे पुकारा, “देतो, कौन है ?” सिकुड़े हुए तलवे पुनः फँसा दिए । उस समय कुर्सी पर बैठे रहना ठीक वैसा ही लग रहा था, जैसे हवाई जहाज में पहली बार बैठने पर उड़ान से पहले लगता है । गुण्डी गुलने की आवाज आई, वहीं बैठे-बैठे मैंने महसूस किया गुण्डी खुलकर निर्जीव-सी लटक गई है और लगातार हिल रही है ।

वह बाहर से ही चहकती हुई अन्दर आई, “मुझे थोड़ी देर हो गई—उन्हें उन्नावी रंग पसन्द है न—इस रंग की ऊन बड़ी मुश्किल से मिली ।” वह मेरे विलकुल सामने आ खड़ी हुई, पूछा, “तुम अकेले बैठे क्या कर रहे हो ?” मुंह से अनायास निकल पड़ा, “इन्तजार ।”

मैंने देखा उसके होंठों पर छलकती हुई हँसी सहमकर ठिठक गई है । अपने उन शब्दों को मन-ही-मन दोहराकर देखा भी, ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया था, जिससे उसकी मुस्कराहट सहम जाए ।

यह सब ठीक इसी तरह हुआ, जैसे मशीन की गड़बड़ी के कारण सिनेमा का कोई दृश्य पर्दे पर कुछ अधिक देर ठहर जाता है । वह फिर हँसने और चहकने लगी, “दरअसल मुझे रुक जाना पड़ा—वैसे मैं जल्दी भी आ सकती थी । सोचा, तुम इतनी देर में नहा-धोकर ताजा हो लोगे ।”

‘ताजा’ शब्द के साथ ही उसके होठों पर एक विस्तृत मुस्कराहट फैल गई थी।

जब वह यह सब कहती जा रही थी, मैं उसके चेहरे को बड़े धैर्य के साथ देख रहा था। उसके चेहरे पर एक परछाईं थी जिसे मैं पहचान नहीं पा रहा था। बीच-बीच में उसने कई बार अपने ‘उन’ का भी उल्लेख किया। उसका ‘उन’ कहना धूप की भाँति ही मुझे सूर्य की उपस्थिति का अहसास करा रहा था। मैं उसके हिलते हुए होठों को बड़े गौर से देख रहा था, एक सुख कागज का गुलाब कटा हुआ था। मेरे मन में एक सवाल उठा, सोचा पूछूँ, ‘इन रँगों से रँगकर उसने मुस्कराहट की वास्तविकता क्यों नष्ट कर दी?’ यह मेरा विषय नहीं था। अब तो मैं सिर्फ इतना ही कह सकता था, तुम्हारी साँझ अच्छी है, या जो सामान वह खरीदकर लाई थी, तटस्थ भाष से उसकी प्रशंसा कर सकता था। वह अपने पति के लिए लाई हुई उन का बण्डल खोल रही थी। वह चाहती थी, उसके पति की उन के बारे में मैं अपनी भी राय दूँ। लेकिन उसके पति और अपने बीच के भेद को मैं उतना ही समझ रहा था, जितना यह जानता था कि उन्नाबी रंग मैं जीवन-पर्यन्त पसन्द नहीं कर सकता। बण्डल के खुल जाने के बाद मेरे लिए दो बातें कहनी आवश्यक थी—एक, बड़ा अच्छा रंग है और दूसरी—बनकर मुन्दर लगेगा।

उन की कई गुच्छियाँ उसने मेरे सामने रख दी। मैंने बिना छुए ही पहली बात कह दी, “बड़ा अच्छा रंग है।”

“तुम्हें भी अब यह रंग पसन्द आने लगा,” कहकर घेरी ओर उसने गौर से देखा। मैंने अपनी नज़रें दूसरी तरफ घुमा दी। वह फिर बोली, “लगता है अन्दर से सब मर्द एक ही रंग पसन्द करते हैं।”

मैंने जवाब देने की बात सोची। उस धवावी हमले का कोई फायदा न समझकर चुप हो गया। मुझे सयाल आया, उन को छूकर देखने के बाद दूसरी बात भी कह दी जाए। एक गुच्छी छूकर कह दिया, “बनकर अच्छा लगेगा।” उसने उन की उन गुच्छियों को एक के ऊपर एक

गगनकर बांधना शुरू कर दिया। गाँठ बांधती हुई उसकी पतली और लम्बी उँगलियों को मैं देखता रहा, वे अच्छी लग रही थीं। एक बण्डल और गोला। उस बण्डल का एक गोला मेरे हाथ में पकड़ाने पर पूछा, "यह ऊन कैसा है?" वह मेरे जवाब की आँखों से प्रतीक्षा करने लगी।

"यह ऊन...!" मैंने थोड़ा साँचकर कहा। कुछ देर तक उलटता-पलटता रहा। प्रश्नवाचक रूप में ही अपनी राय दी, "उन्नाची रंग के सामने यह रंग 'एक्स' यानी अवकाश-प्राप्त-ता नहीं लगता?" उसकी आँखें छोटी-छोटी मछलियों की तरह डुबकी लगाकर गहरे चली गई थीं। समझ नहीं सका, मेरे इस उत्तर की उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई। बिना निगाह देते किसी आदमी के चेहरे से कुछ जानना, मात्र शरीर के स्पर्श से तापमान (टेम्परेचर) की डिग्री का अन्दाजा लगाना है। एक उसाँस मैंने जरूर सुनी। उसे सुनकर मुझे भय हो गया। मेरे इस कमरे में अब यह उसाँस सदा-सदा के लिए बस जाएगी।

कुछ रुककर उसने सीधा सवाल किया, "पहले तो यह रंग तुम्हें पसन्द था।"

मैं हँस दिया। जाने क्यों मेरे मुँह से भी एक साँस निकल गई। लेकिन मेरी उसाँस का अर्थ केवल इतना ही था, जैसे कई छोटी-छोटी उसाँसों के बाद एक लम्बी साँस लेकर छोड़ देने से कुछ आराम मिलता है। उसने मशीनों पर सँवारे गए उन गोलों को फिर से बाँध दिया और कपड़े बदलने चली गई। मैंने अपने दोनों फँले हुए पाँवों को सिकोड़कर कुर्सी पर रख लिया और पैरों की उँगलियों को मलकर खून का दौरा तेज करने लगा।

●  
कपड़े बदलकर जब बाहर आई तो उसने बिना बाँह के ब्लाउज की जगह बाँह वाला ब्लाउज पहना हुआ था। उसकी ढकी हुई बाँहें देखकर मुझे एक तरह की असुविधा का-सा आभास हो रहा था। उसने मेरी नज़रों और अपने अन्तस् के बीच ब्लाउज की बाँहों को ला खड़ा किया था।

हालांकि पहले मैंने ही कई बार उसके बिना बाई का ब्लाउज पहनने पर आपत्ति की थी।

अन्दर कमरे से निकलकर बाहर आते हुए क्षण-भर के लिए वह उस कमरे में ठिठकी, फिर मुझ पर उबटती हुई नज़र डालकर बाहर चली गई। उसके जाने के लगभग दस मिनट बाद तक गुमलझाने का मात गुला रहा। पानी की धार मेरे मन में जिना बजह एक ईर्ष्या का-या भाव उत्पन्न करती रही। लौटकर आईं तो उसका चेहरा कासी साफ धुला हुआ था। होंठों पर बना बाग़ज का मुँह गुलाब भी अब नहीं रहा था, लेकिन वहाँ पर एक अनपहचाने रंग की परछाईं अभी दोष थी। उसके होंठों के कोने थोड़े-से गह गये थे। वह तल पर आकर बैठ गई और बागी सामान भी तल पर सजाने लगी। बग़लों में बंधा बहून-सा सामान दिसाना अभी दोष था।

मुझे अचानक ध्यान आया, ऑफिस में लौटने के बाद मैं ही मैं अपनी पेंट की बेल्ट पेंट पर से खोली लिए कुर्मी पर बैठा हूँ। पाँच तक मंगे हूँ। मौकर को पुकारा। फिर याद आया—बाग़ी देर पहुँच मौकर बाय लगाने के लिए पूछने आया था। मैंने यही कहा था, "बोबीबी को आ जान दो।"

मौकर फिर आकर पड़ा हो गया। फिर बाय के लिए तबाज़ा करने आ गया। लेकिन मुझे ध्यान आया कि मैंने ही उसे बप्पल लाने के लिए पुकारा है, बप्पल लाने के लिए बहने समय देने उनसे बाय लगा देने के लिए भी कह दिया। वह बप्पल मत गया और मेरे पाँच, जो कुर्मी पर मिट्टे हुए ही रहे थे, बप्पल में आकर बैठ गए।

बप्पल पहनकर उठते हुए देखा, दर तल पर सामान पं-शकन मेरी तरफ़ देत रही है। रसायनर भर्तना सामान था। हर चीज़ के दो-दो अदर थे। नाइट सूट के लिए दो टुकड़े, देखिबल सूटिंग के दो पीस, टाई और शिन दो-दो। मैंने जाने-जाने टॉर्जिल टकर देखा। वह बयल्लम रहा था, उनके पीछे की बड़ी बारी मुक़्तो दो।

“बड़ा गुस्सा है,” कहकर पिन गग दिया और दोनों पैरों से लंगड़ाता हुआ-गा बाहर पला गया ।

मैं भी गल के नीचे गड़ा काफ़ी देर तक हाथ-पांव धोता रहा । मैंने सोचा—इस समय चायद वह भी कमरे में बैठी मेरी ही तरह पानी का गिरना महसूस कर रही होगी । पानी की धार जमीन से टकरा-टकराकर फुलझड़ियाँ छोड़ रही थी । गुसलगाने से निकलने पर माहसूस हुआ मरीर पर सत्ता थकन का पहलू कुछ घुला है । कमरे में लौटकर मैंने बातों को दूसरे ढंग से शुरू करने का प्रयत्न किया । उससे मजाक किया, “वाह भाई, यह तो बिलकुल उल्टी रीति है । दुनिया में पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए पति तोहफ़े लाते हैं, और यहाँ...” बात मैंने मुस्कराकर अधूरी छोड़ दी ।

वह हँस दी । उसकी यह हँसी मुझे किसी पहली हँसी की प्रतिध्वनि-सी लगी । वह सामान को दो वण्डलों में बाँध रही थी । मैंने फिर अपने पाँव ऊपर रख लिए और उसके पति के बारे में पूछने लगा, “एक्जी-क्यूटिव इंजीनियर होने में कितने साल लग जाएंगे ?”

“मालूम नहीं,” कहकर उसने बात समाप्त कर दी ।

मैंने दूसरा सवाल किया, “उनको भी साथ ले आती तो मिलना हो जाता । तुम्हारी शादी में आना चाहकर भी न आ सका ।” बात का अन्तिम अंश सुनकर उसने मेरी तरफ़ कुछ इस तरह देखा, जैसे मुखविर के ग़लत बयान देने पर पुलिस वाले देखते हैं । मुझे विश्वास हो गया, अब फूँक मारने से राख अपने ऊपर ही आएगी ।

●

नौकर आकर चाय रख गया था । साबूदाने की गरम कचरियाँ अब भी चटक रही थीं । चाय उसने ही बनाई । दूध चलनी में छानकर डालने पर भी फुटकियाँ ऊपर तैर आई थीं ।

“शायद दूध फट गया,” मैंने चाय का प्याला उठाकर ध्यान से देखते हुए कहा ।

“नहीं—अभी नहीं फटा । लेकिन इसी तरह रखा रहता तो छेना बन गया होता ।” वह मुस्करा दी ।

हम दोनों चुपचाप चाय पीते रहे । बीच-बीच में न जाने मुझे क्या होता था, मैं होंठों को भीचकर जोर की आवाज के साथ सिप करता था । होंठों के बीच की जगह कम हो जाने के कारण एक घूंट में भी कम चाय मुँह में जाती थी । वह पूरे-पूरे घूंट भर रही थी । बीच में चाम निगलने की ‘गटक’ भी सुनाई पड़ जाती थी । मैंने उससे कचरो लेने का आग्रह किया । वह गला साफ करती हुई बोली, “शायद तुम मुझसे मेहमान के स्तर पर व्यवहार कर रहे हो ।” वह हँस दी, “क्या खाना खिलाने का इरादा नहीं ?”

मैंने मझी में देता, लगभग साढ़े आठ हो रहे थे । एक प्याला खत्म करके दोबारा चाय नहीं बनाई । नौकर की आवाज दी, वह आकर वर्तन ले गया । मेज खाली हो गई ।

उमने एक वण्डल उठाकर, धीरे से पूछा, “इसे कहाँ रखूँ ?”

“क्या तुम्हारे कमरे में नहीं आ रहा—मेरी अटैची ले जाओ ।”

क्षण-भर की वह ठिठक गई जैसे उसकी बेइच्छाती कर दी गई हो । मैंने पूछा “क्यों ?”

“ये कपड़े तुम्हारे लिए हैं ।” कहकर उसका चेहरा फ्लैश बल्ब की तरह चमका ।

लेकिन मुझे बाली प्रतिनिध्या मेरे चेहरे पर हुई, पर मुस्कराते हुए कहा, “विवाह-वादी पर बड़े घरों में पुराने आदमियों को पाग दिया जाता है...”

बिना कुछ बोले सब सामान समेटकर वह अन्दर चली गई । बड़ी जोर से बकम का पन्ना बन्द होने की आवाज आई । उसके बाद मुझे लगता रहा, उस पूरे घर में व्याप्त शान्ति ने मुझे भी अपने में धो लिया है । कमरे की दीवारें आँखों के प्रतिबिम्बों की तरह घट-बढ़ रही थी ।



“बड़ा सुन्दर है,” कहकर तिन गल दिया और दोनों पैरों से लंगड़ाता हुआ-न्ना बाहर चला गया ।

मैं भी नल के नीचे गड़ा कात्ती देर तक शाय-नाच भोंता रहा । मैंने सोचा—इस समय शायद वह भी कमरे में बैठी भेरी ही तरह पानी का गिरना महसूस कर रही होगी । पानी की भार जमीन में टकरा-टकराकर फुलझड़ियाँ छोड़ रही थी । मुगलमाने में निकलने पर महसूस हुआ बरौत पर रखा शकन का पताह कुछ पुनः है । कमरे में लौटकर मैंने बातों के दूसरे ढंग में शुरू करने का प्रयत्न किया । उससे मजाक किया, “याद भाई, यह तो बिल्कुल उल्टी रीति है । दुनिया में पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए पति तोहफे लाते हैं, और यहाँ—” बात मैंने मुकदसावर अचूर छोड़ दी ।

वह हँस दी । उसकी यह हँसी मुझे किसी पहली हँसी की प्रतिध्वनि सी लगी । वह सामान को दो बफ्दलों में बाँध रही थी । मैंने फिर अपंग पाँव ऊपर रखा लिए और उसके पति के बारे में पूछने लगा, “एक्जीक्यूटिव इंजीनियर होने में कितने साल लग जाएंगे ?”

“मालूम नहीं,” कहकर उसने बात मगाम्त कर दी ।

मैंने दूसरा सवाल किया, “उन्को भी साव ले आती तो मिलना हँ जाता । तुम्हारी शादी में आना चाहकर भी न आ सका ।” बात व अन्तिम बंश सुनकर उसने मेरी तरफ कुछ इस तरह देखा, जैसे मुखवि के शलत बयान देने पर पुलिस वाले देगते हैं । मुझे विश्वास हो गया अब फूँक मारने से राख अपने ऊपर ही आएगी ।

●

नौकर आकर चाय रखा गया था । साबूदाने की गरम कचरियाँ अब चटक रही थीं । चाय उमने ही बनाई । दूध चलनी में छानकर डाल पर भी फुटकियाँ ऊपर तैर आई थीं ।

“शायद दूध फट गया,” मैंने चाय का प्याला उठाकर ध्यान से देखते हुए कहा ।

“नहीं—अभी नहीं फटा। लेकिन इसी तरह रखा रहता तो छेता बन गया होता।” वह मुस्करा दी।

हम दोनों चुपचाप चाय पीते रहे। बीच-बीच में न जाने मुझे क्या होता था, मैं होंठों को भीचकर खोर की आवाज के साथ सिप करता था। होंठों के बीच की जगह कम हो जाने के कारण एक घूंट से भी कम चाय मुँह में जाती थी। वह पूरे-पूरे घूंट भर रही थी। बीच में चाय निगलने की ‘गटक’ भी सुनाई पड़ जाती थी। मैंने उसने कचरी लेने का आग्रह किया। वह गला साफ करती हुई बोली, “शायद तुम मुझसे मेहमान के स्तर पर व्यवहार कर रहे हो।” वह हँस दी, “क्या खाना निगलने का इरादा नहीं?”

मैंने घड़ी में देखा, लगभग साढ़े आठ हो रहे थे। एक प्याला खत्म करके दोबारा चाय नहीं बनाई। नौकर को आवाज दी, वह आकर बर्तन ले गया। मेज खाली हो गई।

उसने एक बण्डल उठाकर, धीरे से पूछा, “इसे कहाँ रखूँ?”

“क्या तुम्हारे वक्स में नहीं आ रहा—मेरी अटची ले जाओ।”

क्षण-भर को वह ठिठक गई जैसे उसकी बेइस्वती कर दी गई हो। मैंने पूछा “क्यों?”

“ये कपडे तुम्हारे लिए हैं।” कहकर उसका चेहरा पलंग बल्ल की तरह चमका।

लेकिन बुझने वाली प्रतिक्रिया मेरे चेहरे पर हुई, पर मुस्कराते हुए कहा, “विवाह-शादी पर बड़े घरों में पुराने आदमियों को पाग दिया जाता है...”

बिना कुछ बोले सब सामान समेटकर वह खन्दर चली गई। बड़ी खोर से वक्स का फल्ला चन्द होने की आवाज आई। उसके बाद मुझे लगता रहा, उस पूरे घर में व्याप्त धान्ति ने मुझे भी अपने में धोल लिया है। कमरे की दीवारें आईने के प्रतिबिम्बों की तरह घट-बढ़ रही हैं।

घण्टे-भट बाद जब हम लोग गाने पर बैठे, यह अधिक ताजा हो गई।  
 उगती आंगों में साग सगर की मरमला थी। आंगों के नीचे एक सगर का  
 भराव नजर आ रहा था, जैसे 'खुशी-खुशी' लेकर उठी हो। उगती वस्त्र  
 चटकीले थे, होंसी में पताइयों की मुताबिक नकशों मूंगा देने की सामर्थ्य  
 थी। बीच-बीच में अपने गति की कुछ आसनों के बारे में उगी तरह  
 मजाक करती थी, जैसे किसी अगले 'चांग' की आसनों के बारे में मातहत  
 किया करते हैं। मैं देग रहा था, गति की बातें करने समय कभी वह  
 पैर बढ़ाकर उनके पास पहुँच जाती है और कभी सम्मन और पेटों की  
 तरह गाने की मेज पर आ नजनी है। बीच-बीच में मुझे सामने बैठा  
 देखकर वह मुझ पर भी व्यंग्य कर देती थी, "अभी भी तुमने मिन रानी  
 शुरू नहीं की।" फिर उसे प्याज की बान याद आ जाती थी, "बैसे-के-बैसे  
 ही बने हो—प्याज भी नहीं।" ऐसे मोकों पर मेरे मुँह में निकल जाता  
 था, "हाँ, अभी तक तो वैसा ही हूँ।"

खाना खाने के बाद हम लोग नएक पर निकल आए। हम दोनों ही  
 अपने को एक अजीब भूमिका में महसूस कर रहे थे। लग रहा था, हम  
 दोनों की जगह सड़क पर दीड़ने वाली मोटरें और चलने वाले रिक्शे ही  
 बतिया रहे हैं। पेड़ों के सामे सद्यःस्नात महिलाओं के मुले सिरों की भाँति  
 झुके हुए थे। सड़कों और सहायक सड़कों का जाल निमन्त्रण देता-सा  
 महसूस हो रहा था : 'सब राहें खुली हैं।' सड़कों के बारे में अपनी यह  
 प्रतिक्रिया मैंने उससे भी कही, वह खामोश चलती रही। मैंने देखा कहीं-  
 कहीं पर उसकी परछाई उससे लम्बी हो जाती है और कहीं उसी के पैरों  
 तले दब जाती है। जहाँ से हम लौटे, वहाँ काफी सूना था। लौटने के  
 लिए घूमते समय मेरा हाथ उसके हाथ से टकरा गया। चूड़ियाँ छनक  
 गईं। फिर हम समानान्तर लौटते रहे।

घर के दरवाजे पर आकर मैंने देखा उसका चेहरा कुम्हलाया हुआ  
 है। वह कमरे में जाकर बड़ी वाली कुर्सी पर बैठ गई और अपनी साड़ी  
 को समेटकर घुटने मोड़ लिए। उसके पाँवों पर अल्ला लगा हुआ था,

चलकर आने के कारण उन पर धूल बैठ गई थी। वह पीछे को सिर लटकाकर आँख बन्द किए बैठी रही। सामने का पत्ता नीचे खिसक आया। मुझे लगा मैं फिर उसके निर्वसन अन्तम् से उभी तरह जुड़ गया हूँ, जैसे ब्लाउज को बाँहों के द्वारा अलग कर दिया गया था।

थोड़ी देर बाद उसने आँखें खोली, मेरी तरफ देखा और मुस्करा दी।

उसने अपने शरीर को तोड़ना शुरू कर दिया। मैंने मोचा उसे मोद था रही है, अतः नौकर को आवाज देकर अन्दरवाले कमरे में बिस्तर लगा देने के लिए कहा। उस समय तो वह खामोश रही, उसका चेहरा हिलकर लगा इकट्ठी की गई मुस्कराहटें एकाएक चुक गई हैं। नौकर के चले जाने के बाद उसने मुझसे पूछा, "यदि तुम्हें अगुविषा हो तो मैं किसी होटल में चली जाती हूँ।" इन शब्दों के साथ ही उसकी आँखों में द्वार मानने से पहले वाली प्रतिक्रिया उभर आई। फिर उसने बच्चों की भाँति जिद करते हुए कहा, "मैं भी इसी कमरे में रहूँगी।" मैंने उसका बिस्तर भी अपने कमरे में ही लगवा दिया।

लगभग प्यारह बजे जब लेटा तो लगा अभी भी बड़ी वाली कुर्सी पर पाँव मिकोडे ही बैठा हुआ हूँ। वह ठोड़ी के बल मेरी तरफ चेहरा किये डलटी लेटी थी। साम्य वह अब फिर बातें करने के मूड में आ गई थी।

"कभी तुम उधर आओ, तो उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगे—वे भी तुमसे मिलना चाहते हैं। उन्हें मैंने तुम्हारा परिचय दे दिया है।"

अन्तिम वाक्य से मैं चौंर उठा। मेरे मुँह से निकल गया, "पूरा?" इस बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया।

मैं फिर अपनी निगाहों के बल कमरे की दीवारों पर चहलकूदमो करने लगा। एवन्ही जगह से दीवार फूल आई थी। बचपन में इस तरह फूली हुई दीवारों पर मुक्का मारकर पटकाने में मुझे बड़ा मजा था। उसी समय उठकर दीवार के फूले हुए उन स्थलों को पटकाने मन हुआ। खयाल आया, दीवारों में अदापन आ जाएगा।

“वे मेरे बिना बिल्कुल नहीं रह सकते । अगले दिन लोट आने के लिए, कई बार वचन भरवाकर आने दिया है ।”

मैंने उगली बात पर कोई आपत्ति नहीं की बल्कि कहा, “तां फिर कल ही लोट जाना । गुवह ही रिजर्वेशन करा दूंगा ।”

वह फिर चुप हो गई । कुछ देर बाद उसने बिजली बुझाने के लिए पूछा । मैंने अनमने ढंग में ‘हूँ’ कर दिया । उसने रोगनी बन्द कर दी । मुझे लगा कमरे की दीवारें धीरे-धीरे अन्तर्धान होती जा रही हैं ।

“उनका कहना है तुम्हें अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध रगने की पूरी छूट है । जब मैंने उन्हें तुम्हारे बारे में बताया, वचन में हम लोग साथ-साथ पड़े-लिसे और बड़े हुए हैं तो वे हँसकर चुप हो गए । तुम्हारे बारे में अक्सर पूछते रहते हैं ।” वह यह सब कह रही थी, मेरी नजर आकाश पर थी ।

“वे कई बार कह चुके हैं—‘लो-नेफ’ पहना करो । इससे फिगर बनती है । बड़ी मुश्किल से बिना बांह के ब्लाउज से समझौता कर पाई हैं । वे तो चाहते हैं स्कर्ट भी पहना करे ।”

“हाँ पहनना चाहिए ।”

कुछ देर तक खामोशी खड़ की तरह खिची रही ।

“उन्होंने गैस ले दी है, काफी आराम हो गया ।”

“गैस ! अच्छी चीज है—वर्तन काले नहीं होते ।” लगा कहीं पास ही गैस का सिलिंडर खुल गया है और सू-सू की आवाज कमरे में भरती जा रही है । मैंने जल्दी से उठकर बत्ती जला दी, महसूस करना चाहा आवाज धीरे-धीरे बाहर निकल रही है ।

# तिलिस्म

छू देने भर से दरवाजा खुल गया। विश्व-नाथ को संशय होने लगा कहीं 'समसम' की तरह यह किवाड़ों की जोड़ी भी तो स्पर्श नहीं पहचानती। कमरे के अन्दर टाइप मशीन की आवाजे व्याप्त थी। दरवाजा खुलते ही उसे एकाएक महमूस हुआ अन्दर धोड़े दीड़ रहे हैं। बाद में अपनी इम कल्पना पर उसे हँसी भी आई, छ महीने तक उसने टाइप करना सीखा था। उस जमाने में सीते हुए भी उसे टाइप-मशीन की टप-टप सुनाई दिवा करती थी।

सामने ही एक व्यक्ति मेज पर झुका हुआ कुछ देख रहा था। उस व्यक्ति के ठीक सामने चार-पाँच लोग एक-दूसरे के कानों के पास मुँह किए फूँक मारने की मुद्रा में बातें कर रहे थे। अन्दर धुमने से पहले भी विश्व-नाथ ने एक बार सोचना चाहा था, कहीं अन्दर पाँव रखते ही बाहर की

घंटी न बजवाने वाले और वह जग की पट्टीवाला नपरासी अन्दर आकर उसे बाहर निकाल दे। जिसके दो-तीन घंटे के दौरान वह जग की पट्टी-वाला नपरासी उसे समझाता रहा था—किता इजाजत अन्दर जाना जुमे है, पी० ए० साहब की इजाजत लेना बन्नी होता है। वह पूछने पर कि पी० ए० कौन होता है, कहा गया था कि वैयक्तिक सहायक को ही (हिन्दी में नक्की लगी थी) पी० ए० कहते हैं। नपरासी की बात से वह उस नतीजे पर पहुँचा था, पी० ए० वैयक्तिक सहायक का पैना ही घरेलू नाम है, जैसे उसे घर पर 'फूलू' कहते हैं। नपरासी ने उसे और भी बातें बतलाई थीं—“मदियों का मामला है। कहीं जैन-नीन हो गई—अपने-आप तो फेंकोगे ही, हमें भी फेंकाओगे।”

लेकिन इतनी दूर से विश्वनाथ फँसने या किसी को फँसाने नहीं आया था। वह जग की पट्टीवाले उन नपरासी को यही समझाने का बराबर प्रयत्न करता रहा था कि वह सीता बाबू का इन्तजार कर रहा है। 'सीता बाबू हमारे जिले के विधायक हैं।' मुख्यमंत्री तक उनकी बात टालने का साहस नहीं कर सकते। वे ही उसे वहाँ बैठाकर अन्दर शिक्षा मंत्री के पास गए हैं। लेकिन शिक्षा मंत्री के चले जाने के आधे घंटे बाद भी जब सीता बाबू बाहर नहीं आए तो उसे चिन्ता हो गई थी। हिम्मत करके उसने पी० ए० के कमरे का दरवाजा छू दिया था।

अनायास पूरा दरवाजा खुल जाने पर वह डरता-डरता, छोटे-छोटे कदम रखता हुआ, कमरे के अन्दर चला गया। विश्वनाथ मेज पर झुके उस आदमी के पास न जाकर, उन फुसफुसाते लोगों के पास जा खड़ा हुआ। उन चार-पाँच फुसफुसाने वाले व्यक्तियों में से ही एक से पूछा, “पी० ए०—नहीं, नहीं वैयक्तिक सहायक कहाँ हैं?” उस आदमी ने कुछ इस तरह विश्वनाथ की तरफ देखा, जैसे किसी बाज़ारू गाय ने आकर उसके कुरसे का कोना चवाना शुरू कर दिया है। लेकिन सामने आदमी खड़ा देखकर, रेत पर पड़ी पानी की बूंद जितनी अपनी आँखों में रकर मेज पर झुके उस आदमी की ओर संकेत कर दिया। विश्व-

नाय उस आदमी की मेज के बराबर में जा सड़ा हुआ। उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ठीक वैसे ही प्रयत्न करने लगा, जैसे किमी पारसो थिएटर का 'जोरर' स्टो नायिका को मनाने में नायक की सहायता करता है। इतने पर भी पी० ए० की गर्दन झुकी रही। उसे विश्वास होने लगा कि वास्तव में यह आदमी पत्थर का बुत है।

विश्वनाथ की नजर अधानक पी० ए० के पीठ पीछे खुले दरवाजे पर घली गई। उसे समझ हुआ कि कहीं सीता बाबू कमरे में बैठे कुछ काम तो नहीं कर रहे हैं। उसके पाँव तुरन्त उधर बढ़ गए। पी० ए० उसकी ओर इस तरह घूमा, जैसे विश्वनाथ का पाँव किसी ऐसी काल पर पड़ गया है, जिसका सीधा सम्बन्ध पी० ए० से हो। धरं-धरं की तरह की आवाज भी सुनाई पड़ी, "कहिए, उधर कहीं जा रहे हैं?"

"सीता बाबू को देखने," कुछ धवराहट में उसके मुँह से निकल गया।

"कौन सीता बाबू?" पी० ए० ने सिझकते हुए पूछा।

"हमारे यहाँ के विधायक हैं।"

"यहाँ सीता-बीता बाबू कोई नहीं।"

पी० ए० द्वारा सीता बाबू का इस तरह नाम लिया जाना विश्वनाथ को अच्छा न लगा। उसका मन हुआ वह कह दे, 'जिस आदमी की बात मुख्यमंत्री तक नहीं टाल सकते, उसका नाम आप इस तरह ले रहे हैं?' लेकिन विश्वनाथ ने काम की बात करना ही उचित समझा। सिर्फ इतना ही कहा, "सीता बाबू मुझे बाहर बैठने के लिए कहकर सिंघा मंत्री से मिलने अन्दर गए थे। दो घंटे से बाहर बैठा उनका इन्तजार कर रहा हूँ।"

इस बार पी० ए० ने थोड़ी सहूलियत के साथ सवाल किया, "क्या काम है?" विश्वनाथ को लगा, जैसे लोहे के गोले में उँगली गड़ गई। थोड़ा खेंसारकर गला साफ करते हुए उसने बड़े सम्मानपूर्वक बताया, "हमारे दिले के सरकारी स्कूल में मास्टरी की जगह खाली है, उसी की सिफारिश के लिए सीता बाबू को निवाकर लाया हूँ।"

पी० ए० ने चस्मा ठीक करते हुए एक कागज का



कुछ पड़ने के बाद पूछा, "क्या नाम है ?"

"विश्वनाथ...."

लेकिन बिना जवाब दिए ही पी० ए० अपने काम में लग गया। विश्वनाथ कुछ देर तक तो उगार की प्रतीक्षा में रहा रहा, फिर हिम्मत करके कहा, "जी मेरा ही नाम विश्वनाथ है।" पी० ए० इन बार फोन्नाह का मोल्दा हो गया था। वह एकदम चिगर उठा, "मैं क्या करूँ, मेरे पास इतना वक़्त नहीं। अपने गीता बाबू में जाकर पूछो।" बड़बड़ाता हुआ अपनी फादरों उलटने-फलटने लगा। उमने देखा, उन नागों-नागों व्यक्तिओं के होंठ मुसकराने की मुद्रा में एक ही तरह से गुंथे गए हैं।

●

विश्वनाथ ने बाहर निकलने के लिए दरवाजा गोलना चाहा तो उसे लगा खुलने के स्थान पर दरवाजा बंद होता जा रहा है। फिर उसे ध्यान आ गया, वह दरवाजा बन्द होने वाली दिशा में ही रोलने का प्रयत्न कर रहा था। बाहर गैलरी में आकर उसे अनुभव हुआ कि वह रोलने लिये गए रेल के डिब्बों की एक लम्बी कतार के अन्दर दायित हो गया है। दाईं ओर कमरों पर लगे मंत्रियों और उनके वैयक्तिक सहायकों के नाम-पट अजीब शेखीखोरेपन के साथ अपना महत्व जता रहे थे। बाएँ हाथ पर पड़ी पुरानी बेंचें तीर्थस्थानों पर बैठे भिरामंगों की कतार का-सा चित्र उपस्थित कर रही थीं। किसी-किसी बेंच पर कई जरीदार पट्टीवाले चपरासी बैठे सिगरेट का धुआँ उड़ा रहे थे। विश्वनाथ को महसूस हुआ उन दो-चार चपरासियों की सिगरेटों के धुएँ से पूरी गैलरी घुटी जा रही है। उसे खांसी आने लगी। बीच-बीच में मंत्रियों और वैयक्तिक सहायकों के कमरों में घंटियाँ बज रही थीं। उन घंटियों की टन-टन उसके दिमाग पर कुछ ऐसा प्रभाव उत्पन्न करती थी, जैसे किसी रोते हुए बच्चे को खुश करने के लिए खड़ी हुई कई साइकिलों की घंटियाँ एक साथ टन-ई जा रही हैं।

विश्वनाथ बाईं ओर घूम गया। जिस गैलरी में वह था, उसकी

चौदाई रेल के डिब्बों से कुछ अधिक थी। दिन का प्रकाश भी कुछ अधिक मात्रा में आ रहा था। उसे नकारने के लिए बत्तियाँ भी जली हुई थी। उसका मन बत्तियों पर बेला चढ़ाने को हुआ। उसने अपनी इस भावना को मुरन्त दबा दिया। विधान भवन में घुसते हुए सीता बाबू ने उसे बताया था, “यही है विधान भवन, जहाँ हम लोग बैठकर पूरे प्रदेश का शासन चलाते हैं। जरा-सी गलती मुरन्त पकड़ ली जाती है। दीवारों में जानिशी दीशे लगे हुए हैं जिनमें जरा-सा भी मूराख कुएँ के समान दिखाई पड़ता है।” उसका मन हो रहा था, कोई ऐसा ही शीशा उसे भी दीख जाए जिसमें वह सीता बाबू को बृहत्तर रूप में देख सके। गैलरी में चलने-फिरते लोग उसे ठीक वैसे ही लगते हैं, दोनों आँखों को बन्द करके उँगली से दबाने पर अनेक अनपहचाने राग-विरागे कण हिलने लगते हैं।

एक कमरे के सामने बहुत-से लोगों को चपरामियों वाली बेंचों पर बैठे देख, उसे लगा, भीरे की मूँद पर चीटे इकट्ठे हो गए हैं। याद में मुख्यमन्त्री के नाम की तखती पढ़कर वह थोड़ा-सा भयभीत हो गया। मुख्यमन्त्री की भक्तियों के सम्बन्ध में बताते हुए सीता बाबू ने बचीर के बोहे की एक पक्ति पढ़ी थी, ‘राई से पर्वत करे और पर्वत राई माहि।’ वह उन सय लोगों के बारे में आश्चर्य और करुणा से भर उठा, सोचने लगा, न जाने इनमें से कौन पर्वत होने के लिए बैठा है और कौन राई।

सीता बाबू के बारे में वह सोचने लगा शायद वे भी अन्दर मौजूद हों। उसने कस्बे के कई लोगों में सुन रखा था, मुख्यमन्त्री ने अनेक बार सीता बाबू से मन्त्रीपद संभालने का आग्रह किया है। वह एक बेंच पर बैठकर सीता बाबू के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने चाहा कि इस बीच बराबर में बैठे लोगों से दो-चार बातें करे। लेकिन उसे वहाँ बैठे हुए सब लोग घोखा देने के लिए बनाये गए हकीम लुबमान के समरूप पुनले-से लगे। वहाँ से उठकर वह मुख्यमन्त्री के वैयक्तिक सहायक के कमरे के सामने जा खड़ा हुआ और पहने की तरह ही इस-बार भी अन्दर झाँकने का प्रयत्न करने लगा। दरवाजा बन्द

जब उसने अन्दर का कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। बाहर ही महा-  
 वह मोचला गया। अन्दर ही आवाज किसी भारी दरवाजे के नीचे दबी है।  
 ठीक ऐसा ही लगान उस बाहर के बंद हुए दरवाजे को देखकर हो रहा  
 था। उस गवती गरदन उठाकर नई गरदन लगा दी गई है। शिक्षा-  
 मन्त्री के कमरे के नामने बंदे सीता बाबू की प्रतीक्षा करने हुए भी उसे  
 अपने बारे में उस बात का बराबर गवाना बना रहा था। वह स्वयं भी  
 विश्वनाथ के स्थान पर बाईं ओर है, जिसे मिले सीता बाबू के बाहर  
 निकलकर आने का इन्तजार है। उनके आ जाने पर वह ओर में बंधा  
 हुआ-ना पीछे-पीछे हो जेगा। जब उसे उस बात का विश्वास हो गया कि  
 सीता बाबू और उसके बीच दैवी ओर दृढ़ गई है, वह पुनः विश्वनाथ हो  
 गया था। उसी समय में सीता बाबू की तन्त्राज कर रहा था।

उसने मुख्यमन्त्री के वैयक्तिक महायात्रा के दरवाजे को हल्ला-ना  
 धक्का देकर मोलना चाहा। वह इस गर्मी पर पहुँचा, कम-से-कम यह  
 दरवाजा शिक्षामन्त्री के दरवाजे की तरह भावुक नहीं है। उसने तनिक  
 और जोर लगाया। दरवाजा हिला, पुनः अपने स्थान पर आ गया।  
 दरवाजे की इस हरकत पर उसे हँसी आ गई, वह मोच गया कि गहाँ  
 लकड़ी के दरवाजे तक सीने-पड़े हैं।

विश्वनाथ ने अधिक जोर लगाकर तनिक-सा दरवाजा खोल लिया।  
 झाँककर देखा कमरे में लोग शतरज के बिखरे हुए मोहरों की तरह इधर-  
 उधर खड़े और बैठे हैं। उनका पी० ए० भी उसी तरह गरदन झुकाए  
 फाइलों में व्यस्त है। उसे आश्चर्य था, लोग पी० ए० के पास जाते ही  
 क्यों हैं, जबकि उसके मन में फाइलों की क्रूर ज्यादा है। बाद में उसने  
 एक पढ़े-लिखे 'जंटलमैन'-से लगने वाले आदमी से इसी बात को पूछा भी।  
 उसने बताया, "मन्त्रियों से मिलने से पहले पी० ए० से अनुमति लेनी  
 जरूरी होती है।" इस बात पर उसे हँसी आ गई। वह सोचने लगा  
 पी० ए० हनुमानजी होता है।

उसने विधायक-भवन चलकर ही सीता बाबू से मिलने

का फैसला किया।

लौटते हुए जब वह लिफ्ट के घाम में मुड़ा तो उसे कुछ ऐसा लगा, सीता बाबू लिफ्ट से नीचे चले जा रहे हैं। दौड़कर वह नीचे नहीं गया। उसे जीने से ही उतरना था। लिफ्ट सीता बाबू को लेकर स्वयं उतरता चला जा रहा था। वह संगमरमर की सीड़ियों से धीरे-धीरे उतरता रहा। उतरते समय उसे लगना रहा वह अनधिकृत रूप में किसी राज-भवन में घुस आया है। सीड़ियों से उतरकर जब वह नीचे आया तो उसने एक नजर उठाकर वहाँ के सम्पूर्ण वातावरण का जायजा लेना चाहा। उसकी दृष्टि दो मेहराबों के आकार में बने जीनों पर टिक गई। ये दोनों जीने उसे किसी उबड़-धूँटे बिनाल राक्षस की लम्बी भुजाओं की तरह पृथ्वी पर टिके-से लगे। जब लोग उन दोनों बाँटों पर लीनीपुट-बागियों की तरह चड़-उतर रहे थे। ऊपर का रोगला घुम्बड़ उस राक्षस के सीपले शिमाग का आभास दे रहा था, उस गोमलेपन में उसे अनेक सीता बाबू और वह स्वयं बूढ़े-बिन्दो का गेल गेलने-से प्रतीत होने लगे।

उसकी नजर सामने वाली गैलरी पर चली गई। विद्वनाथ की वह पूरा दृश्य किसी अँधियारे सुरंग में होकर बहती नहर की याद दिलाने लगा। उसे अनुभव हुआ कि अनेक गपाट बेहरे बाते लोग उग नहर की सतह पर नाचते हुए चले जा रहे हैं। उन में लगे बन्बों की रोगनियों के घेरे उसे संगमरमरी सतह पर हिलने हुए पानी का-या आभास दे रहे थे। उसके बंदम उन रोगनियों के घेरे की नाचने के लिए उठी और बढ़ गए। विद्वनाथ एक रोगनी के घेरे के बीचों-बीच आकर गड़ा हो गया। वहाँ से उसने देखा, अँधेरे बोनो में लोग की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ रहस्यात्मक ढंग से घुमपुना रही हैं। उन सबकी लकड़ें विषादक सीता बाबू से हू-ब-हू मिल रही हैं।

उसने सीता बाबू का नाम मे-मेहर जोर-जोर से बिम्बाना चाहा, लेकिन उसे ध्यान आया कि यह विधानमन्त्र भ्रमन है, यही सीता बाबू अपने नाचियों के साथ बँडहर पुरे प्रदेश के सामन का संघातन करने हैं।

## संगत

लक्ष्मी रेड्डी के साथ संगत करने का आग्रह मेरे पास पहुँचा तो कुछ अजीब-मा लगा। मैं जानता था, एक जाने-माने उस्ताद के द्वारा संगत की जानी ही उसे पसन्द है। किसी कारण वे नहीं आ पाए थे। शायद इसीलिए संगीत भवन से सम्बद्ध व्यक्तियों में मुझे ही इस योग्य समझ लिया गया था। एक अनजान व्यक्ति से कहा जाना शायद उसे भी पसन्द न आया हो। उसके चेहरे पर अनिच्छा का भाव झलक आया था। वह कुछ कहे, इससे पहले ही मैंने प्रतिक्रियास्वरूप 'हां' कर दी थी। उसके चेहरे पर एका-एक विजली चले जाने के बाद वाला ठहराव-सा आया था, तुरन्त बाद ही एक मुस्कान भी।

मंच पर हम दोनों साथ-ही-चढ़े। लक्ष्मी रेड्डी के सम्मान

में लोगों ने तालियाँ बजाईं। उसके होंठों पर सफेद दाँतों और चेहरे के बीच वाला विरोधामाम अधिक सजीला होकर ठहर गया। जब वह तानपूरा उठा रहो भी तो आँखों से ही उसने मुझे तैयार हो जाने का संकेत किया। पहले से चिपकी हुई वह मुसकराहट भरे दूध के कटोरे की तरह तिरछी हो गई थी।

सहमी रेड्डी ने देस में टुमरी गई। शुरू में आँखें धन्द कान्के जब वह गुनगुना रहो भी तो लग रहा था, बात मन-ही-मन में घूम रही है। फिर वह अपने से मुक्त होती गई। उसके पास अनेक कण्ठ थे। कभी वह किमी दूरस्थ बण्ठ से गाने लगती थी और कभी सब कण्ठ एक साथ। एक-दो बार उसने मान मेरे लिए ही गाया, फिर दूर जाती हुई आहूति की तरह बिलीन हो गई। पूरा वातावरण एक साल धन गया था। कभी सहरो के वृत्त एक-एक व्यक्ति के इतने निकट आ जाते थे कि उनका स्पर्श भूत हो उठता था और कभी पूरा साल एक ही वृत्त में समा जाता था। स्वर के साथ-साथ वह अपने आकर्षण का संयोजन भी कर रही थी। छोटे-बड़े कन्वों के प्रकाश की तरह ही वह घट-बढ़ रहा था।

प्रोशम समाप्त होते ही लोगों ने उसे घेर लिया। उसके व्यवहार के बारे में भी इसी नतीजे पर पहुँचा कि वह भी स्वर की भाँति ही सधा हुआ है। जब वह चाहती थी उत्तर देने का उपक्रम करते-करते पुपनी फाइन-सी मयालों के नीचे दब जाती थी, और बाहने परही सब बातें बागड के कन्नुरों की तरह फर-फर उड़ने लगती थी। बाजों के दौरान में दो-चार लोगो ने उससे मेरी प्रशंसा भी की। उत्तर में मान उसकी दोनों आँखें ऊँची-नीची होकर मेरी ओर देखने लगी, हालाँकि मैं अपेक्षा करता था, कुछ नहेगी।

छोड़ने के लिए न्योग लिफ्ट तक गए थे। मैं भी उन्हीं में था। लिफ्ट के पास पहुँचकर जब सराने होंठों पर चिपके उस तिलेपन की ओर अधिक विस्तृत करके आज्ञा लेनी चाही, तो भी वे न्योग सड़े हो रहे थे। केवल मैं ही चलने के लिए घूम गया था। लेकिन उसने सहज ही



पास लेटी रही ।

‘आपका रियाज...’ कहकर वह रुकी, फिर मुस्काने हुए धीरे से उसने वाक्य पूरा किया, ‘अच्छा है ।’ दीवारों के मोंग लिये जाने के बाद भी वे शब्द मुझे कई स्थानों पर छूटे रहे ।

मेरी नजर तानपुरे के पास रहे उसके हाथ पर थी । वह बार-बार जाना या ओर लौट आना था । उगने अनायास ही, गम्भिरान बाग गुरु बनने के लिए कहा—‘बौन-ग्या राम आपकी ज्यादा पसन्द है ?’ शान-भर दोनों के बीच निम्नज्योता टहरी रही । मेरे मुँह में उगी तरह अनायास निकल गया—‘हम तो मान गन करने हैं ।’ उसकी उरगिर्षा में पहली बार मेरे होठों पर मुसकराहट आई थी । लेकिन उसकी गिन्-गिमाहट—फानूम गिरकर टूट गया ।

उने उन्ही कपड़ों में बैठे देवदर मैंने समय जानना चाहा । ‘हो ।’ उसने द्वारा कहा गया ‘हो’ काफी देर तक टिका रहा । मैंने उगमे कहना चाहा, अब आप अपने कपड़े बदलकर आराम करें । लेकिन वह मेरे बिना कुछ बहे उठ नहीं हुई । उसका मिर दो दीवारों के बीच बाले बौने में मुड़े हुए कागज की तरह बिजब गया । फिर दीवार पर से टिकनकर उसके पीछे-पीछे घिसटने लगा ।

दूर के अचानक बुझ जाने पर लगा कि बाहर के अँधेरे में उसी मुरंगों के बन्द दरवाजे लोल दिये गए हैं । लेकिन तुम्हें ही दूसरे बौने में लटकना हुआ कुम्कुमा जन जाने में पूरा बकरा अन्तरात्मा का दर्द में पिघल गया । रीसानी उसके नीचे घेरे में बैठकर अटकन-अटकन मंजरे बगी ।

कुम्कुमा अन्तरात्मा लक्ष्मी रेहरी लेती और ही का रहते दो । मैंने लगे होकर चलने के लिए आज्ञा लेनी चाही, लेकिन मुझे मात्र देवदर पर कुम्कुमा हो—‘आपकी यह देखनी मुझे अच्छे लग रही है ।’ उसकी निरिन्धेय बौनों में तरलता जानी गई और कुम्कुमा के दिग्गज के लक्ष्य पूरा बेहता हब लिया । मुझे उनी तरह लगे देवदर लगे बने



को नई नगा में दोहाया—‘हो ही तीन गन्टे ना और हूँ’... कुछ गहर घड़ी देगने हुए गम कहा, ‘तीन गो बज ही गे है’, तार्कीक उमने अपना तानपूरा बिन्दुल नही लड़ा था, आभास होला मल था उनके तारों को बार-बार लड़ा गया है।

मैं बैठ गया। दान में बंगी गानावरण की नलवार गिर पर लटकने लगी।

लहमी गेड़ो कुछ देर बाद फिर उठी और मेरी कुर्मी के पान आ नड़ी हुई। कान के पान मंड लगाकर धीरे से बोली... ‘आती हूँ।’ इस तरह झुककर यह कहना कोई बहुत महत्वपूर्ण वान नहीं थी, लेकिन पैंरों के पान लेटी मेरी और उनकी पगछाइयां बहुत पास आ गई थी, उसका हटना भी, पगछाइयों का ही एक-दूसरे से अलग होना अधिक था।

वहाँ से उठकर वह वाइरोव के पास जा राड़ी हुई थी, वाइरोव का दाहिना पल्ला सिन्दवाद जहाजी की निद्रिया के पंग-सा फैलता गया। कमरा पालों में बँटा हुआ था। अँधियारे का पाला अधिक बढ़ा था, पर उसमें प्रकाश की भी थोड़ी-थोड़ी मिलावट थी। हम दोनों उसी पाले में थे।

अनायास उसकी साड़ी का पल्ला तिसककर लम्बी बाँह-सा जमीन पर गिर पड़ा। फिर दोनों हाथ पीछे को फैलाकर ब्लाउज उतारने लगे। चोली का बाँध शरीर को अधिक उजागर कर रहा था। पूरा-का-पूरा वातावरण अपनी जगहों पर बैठा-बैठा काँपता-सा महसूस होने लगा। मैंने अपना ध्यान सामने रखे उसी तानपूरे पर केन्द्रित करना चाहा, जो पूरे समय अपनी ही जगह पर बना रहा था। लेकिन नज़रें चक्कर फाटने वाली सर्च लाइट-सी घूम-घूमकर वहीं पहुँचती रहीं। वस्त्रों को वह एक के बाद एक नहीं बदल रही थी। शरीर पर अब अन्तिम वस्त्र रह गया

के दूसरी ओर लटकने वाले कुमकुम के चारों ओर अनेक साथ पंख फड़फड़ाने लगीं। अँधेरा धू-धू करके कमरे में

भर गया। फड़फड़ाती गौरैया और लटकन के नीचे अटकन-बटकन खेलने वाली रोसनी, सब उस सैलाब में डूब गए। उस अंधेरे कैम्पास ही कमरो की सब दीवारें भी एक-दूसरे से सटती महसूस हुईं।

आखें खुली, तो कमरे का भरा-भरापन नहीं था, रोसनी के कारण खाली-पन नजर आ रहा था। तानपूरा रात-भर संगत करने के बाद, अपने शौल में बन्द होकर दीवार के सहारे खड़ा था। लक्ष्मी रेड्डी सफेद साड़ी में थी, उसका चेहरा मिट्टी में खेलने के बाद धुले-धुंछे बच्चों का-मा लग रहा था।

मेरे समय पूछने पर उसने बताया, 'साढ़े पाँच।'

'रात...?' मेरे वाक्य को बीच में ही काटकर कहा—'गुडर गई।' फिर वह सधे हुए कदमों से मेरे पास आकर बोली—'अब मुझे जाना है।' हैं-हैं करता हुआ मैं उठ खड़ा हुआ। वह कमरे से बाहर चली गई।

बायस्कम से निकला, तो चौकीदार सामान लेकर बाहर आ रहा था। वह दरवाजे के पास सड़ी मेरे आने का इन्तजार कर रही थी। मैं उसके पीछे पीछे चल दिया। लिफ्ट अभी नहीं चला था। हम लोग मोड़ियों से उतरने लगे। जब रोसनी सामने आ जाती थी तो परछाईयाँ पीछे चली जाती थी और रोसनी पीछे हो जाने पर वे हमसे आगे-आगे उतरनी रहती थी।

संगीन भवन की कार पोटिको में लक्ष्मी रेड्डी की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं अभी तक निश्चय नहीं कर पाया था, स्टेशन छोड़ने जाना उचित होगा या नहीं।

मेरे धरावर के सामने पर बड़े मनीफ्लान्ट के चौड़े-चौड़े पत्तों पर ओन की बूँदें कालान्तर से टपक जाती थीं। एक पत्ते में फ़िन-फ़िन दूजरे पत्ते पर जाने वाली बूँद टपकने में पहेले मोटी हो जाती थी। फिर उस बूँद का टपकना निस्तब्धता में बंकर की भाँति बँझा रहता था।

चौकीदार को इनाम देने के बाद लक्ष्मी रेड्डी कार में उतर गई। मेरा एक हाथ उभी दरवाजे की हथौली पर था किन ओर बढ़े

थी। ट्राइवर एक बार मुँह खुला था, अब अपनी नीट पर बँठा आजा की प्रतीक्षा कर रहा था। लक्ष्मी रेड्डी ने शक्कर भरी और देगा— सम्भवतः यह जानने के लिए कि मैं चल रहा हूँ या नहीं। जायद मुझे भी इसी की प्रतीक्षा थी। दरवाजा गोलवर अन्दर चला गया। लक्ष्मी रेड्डी पटले ही दूसरी ओर गिनक गई थी।

अपनी तरफ का शीशा गिराकर मैंने कोहनी गिराती में रग ली। कभी-कभी गरदन बाहर निकालकर भी देग लेता था। बाहर अभी अँधेरा था और हवा नंग निते हुए बर्फ की तरह चेहरे पर लगती थी। नयाल आया, गिराती के मुँह रहने में लक्ष्मी रेड्डी को अमुविधा हो रही होगी। मुझे शीशा चढ़ाने देगकर उमने धीरे में कहा, 'सुली हवा मुझे भी पगन्द है।'।

जैसे-जैसे अँधेरे में प्रकाश की माया बढ़ती जा रही थी, सड़क का एक-एक कण दोड़कर हमारी ओर आता-सा लग रहा था। लेकिन पास आने पर, पूरी सड़क आवाज की तरह फट जानी थी। सड़क पर चलने वाले इक्के-दुक्के लोग दूर से चलने हुए दिगालाई पड़ते थे, लेकिन कार के पास से गुजरते समय वे खड़े-के-खड़े रह जाते थे। स्टेशन पहुँचते-पहुँचते काफी निखार आ गया था। अँधियारे का डेर इधर-उधर कोनों में लग गया था।

प्लेटफार्म पर बहुत लोग नहीं थे, ओछा प्याला नज़र आ रहा था। जब गाड़ी आई तो मुसाफिरों की भी ज्यादा हलचल नहीं मची। वेण्डर्स की आवाजें चीख के स्तर पर उठकर भिनभिनाहट में डूबती गईं।

डिब्बे में सामान लगा दिया गया था। लक्ष्मी रेड्डी दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई थी। सामने से गुजरने वाला हर व्यक्ति उसकी पुतलियों में हल्का-सा अवस छोड़ जाता था। चार-पाँच डिब्बों के आगे खड़ा इंजन तेज़ आवाज के साथ बीच-बीच में भाप भी छोड़ देता था, और आस-पास के डिब्बों को ढक लेती थी। उसका स्वाद आस-हम लोगों के मुँह में भी घुल जाता था।

“...शाम को छः बजे सनातन धर्म कालिज का वार्षिक अधिवेशन । उद्घाटन प्रमुख उद्योगपति लाला रामदीन करेंगे...” मानिकटाला ने पाइप भरते हुए उसकी ओर बिना देसे पूछा, “अंग्रेजी में भी ‘प्रमुख’ ही लिखा है?”

“जी...” कहकर वह अगले समाचार पर आ गया । ‘हैंडिमा महल्ले की समाज कल्याण समिति का चुनाव जिला हरिजन एवं कल्याण अधिकारी की देख-रेख में आज दोपहर को तीन बजे होगा...’

“...एक सभा में कलकटर साहब ने भाषण देते हुए काला-बाजारी बन्द करने की अपील की और उन्होंने साफ-साफ शब्दों में चेतावनी दी, ऐसा न करने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी, सरकार का रुख इस बारे में बड़ा सख्त है ।’ मानिकटाला मुनकर मुस्कराये और शब्दों को खींचते हुए बोले—‘अच्छा’ फिर रुककर पूछा, “और कोई बात...?”

पी० ए० ने पूरे पृष्ठ को जल्दी-जल्दी देखकर बताया, “आज शाम को छः बजे उद्योगमंत्री इंजीनियरिंग कालिज में नई वर्षशोप का उद्घाटन करेंगे ।”

मानिकटाला पाइप को जलाते-जलाने रुक गये, उसकी ओर देखते हुए, बोले, “उद्योग मंत्री...मुम्हारा मतलब इन्डस्ट्री मिनिस्टर...”

“जी...” कहकर पढ़ने के लिए वह अगली पंक्तियाँ खोजने लगा ।

“स्टेट...षा...?” उसने अखबार पर ही गर्दन झुकाने उत्तर दिया, “सेन्ट्रल” । मानिकटाला क्षणिक के साथ कुर्सी से उठ खड़े हुए और ‘ऑफिस चेयर’ पर जा बैठे । पी० ए० सिसककर उनकी भेड़ के पास चला गया । मानिकटाला स्वयं ही बड़बड़ाए, ‘सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ इन्डस्ट्रीज... मिस्टर यमय्या’, लेकिन पी० ए० को अपनी ओर देखते हुए पाकर बोटे, ‘यमय्या अपना दोस्त है...खैर...कम आँखें ?’

वह उद्योगमंत्री का प्रोथाम पढ़ने लगा, “पाँच बजे हवाई अड्डे पर स्वागत...वहाँ से सीधे सफ़्ट हाऊस...आधा घण्टे ठहरकर इंजीनियरिंग

## निमंत्रण

मानिकटाला 'साहब' का पी० ए०  
(यानी वैयक्तिक महामन्त्र) अग्राचार  
पढ़कर मुना रहा था। पहले अंग्रेजी में  
पढ़ता फिर उसका हिन्दी में अनुवाद  
करता था। मानिकटाला ऑफिस में ही  
आरामकुर्सी (रिटायरिंग चेयर) पर  
बैठे समयान्तर से पाइप का धुआँ छोड़  
रहे थे। धुआँ उनके चेहरे पर से  
पारदर्शक कपड़े-सा फिसलकर पी० ए०  
के सिर पर से गुजरते-गुजरते और  
अधिक पारदर्शक हो जाता था।

मानिकटाला ने पाइप हाथ में लेकर  
भीगे हुए कोओं वाली आँखों से उसकी  
ओर देखते हुए कहा, "लोकल न्यूज  
वाला पेज पढ़ो।" पी० ए० धीरे से  
'जी' कहकर स्थानीय-समाचार वाला  
पृष्ठ निकालने लगा। मानिकटाला  
मंन्त्र में पाइप लगाकर पुनः फूँकने लगे,  
वह बुझ गया था। इस बीच  
समाचार वाला पृष्ठ निकाल  
ने पढ़ना शुरू कर दिया था।

कहा, "यमय्या ने मुझे नहीं लिखा। वैसे जब मैं दिल्ली जाता हूँ... कई बार मैं भी उसे सूचित नहीं कर पाता। उसकी भी मुझमें यही शिकायत रहती है।" वह चुपचाप सड़ा मुनवा रहा।

"अच्छा टी० एम० को फोन करो—यमय्या साहब से भेंट हो सकेंगे।" वह फिर फोन करने के लिए चल दिया, लेकिन मानिकटाला साहब ने बीच ही में से बुलाकर कहा, "डी० एम० को नहीं...। सेतान के बारे में पूछो—जब आये मुझसे फौरन बात करे..." पी० ए० सेतान के बारे में मालूम करने चला गया। मानिकटाला ने जल्दरग फोन का बक्कर दबाकर पुनः कहा, "सेतान न आया हो तो पोद्दार में बात कराओ।"

जब पोद्दार फोन पर आये तो मानिकटाला ने पहले ही पूछा, "सेतान वहाँ है?" और बिना उसका जवाब मुने कहते गये, "मीटिंग में तुम नहीं जा सकते थे। जब देखो गायब, आये तो मुझमें फौरन बात करे।" रिसीवर रख दिया। रखने के तुरन्त बाद ही उन्होंने फिर पोद्दार से बात कराने के लिए पी० ए० को कहा। लेकिन बात करने समय पी० ए० का वहाँ खड़ा रहना उन्हें सममतः ठीक नहीं लगा। उन्होंने कुछ इसी तरह उनकी ओर देखा था। वह चुपचाप अपने कमरे में चला गया और मेन फोन का रिसीवर उठाकर उनकी बातें सुनने लगा। मानिकटाला ने छूटते ही पोद्दार को डाँटना शुरू कर दिया था, "तुम लोग क्या करते हो... हजार दो-शे हजार इसीलिए मिलता है। कुमियाँ तोड़ो और गाड़ियों पर दौड़ो। इंजीनियरिंग कालिज तक ने सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ़ इण्डस्ट्रीज को बुला लिया... तुम लोग उन्हें फैक्ट्री में बुलाकर चाय भी नहीं पिला सकते..." कुछ रुककर उन्होंने फिर कहना शुरू किया—

"...सेतान को इसी समय मीटिंग में जाना था? तुम जाओ डी० एम० के पास। मिनिस्टर 'एयरोड्राम' से आकर सीधे हमारी फैक्ट्री में चाम पी सकते हैं... हमारा गेस्ट हाऊस उनके सर्विट हाऊस से 'फार बेटर' होगा। वैसे यमय्या मेरे दोस्त हैं। मैं बिना किसीसे कहे-मुने भी उन्हें एयरोड्राम से सीधे पकड़कर ला सकता हूँ। लेकिन फैक्ट्री का मामला है

कालिज । रात की कहीं अस्पष्टप्रियता में गापसी ।”

“टिपानर पिन समय ?” पी० ए० ने मानिकटाला की ओर देखा, अपनी बात पीरे में दोहरा दी, ‘अगर प्रियता में गापसी ...?’ अन्त में ‘यानी टिपानर’ और जोड़ दिया ।

मानिकटाला ने ऊपर-ऊपर देखा । उन्हात पादप आगामकुर्सी के हथिये पर रखा गया । उसने झट में उठकर उनके सामने रखा दिया । वे उसे पिन में कुंरेदने लगे । दियागलाई जलाई और तन्वाकू जलाने के लिए छोटे-छोटे कम रीनने लगे । दियागलाई की रोजनी में उन्हात चहुरा बोझा विकृत हो गया, उनकी नाक के नयने तक गिनकर लम्बे हो गए । इतनी देर तक की सामोजी के बाद, कमरे में गिनार का धुआं हिलता हुआ नजर आया ।

पादप में दम लगाकर उन्होंने फिर ‘हैं’ की ओर पी० ए० से पूछा, “इंजीनियरिंग कालिज से कोई ‘इनवीटेशन’ आया ?”

“जी नहीं ।”

“आया जरूर होगा । तुम लोगों को कुछ पता नहीं रहता...खेतान को टेलीफोन करो ।” मानिकटाला ये सब एक सांस में कह गए थे ।

“जनरल मैनेजर साहब को ?”

“हाँ भई और क्या मालिक साहब को ! तुम बात को जल्दी क्यों नहीं समझते ?”

टेलीफोन पी० ए० के कमरे में था और ‘एक्सटेंशन’ मानिकटाला साहब की मेज पर । मात्र वे बात करते थे । फोन करने के लिए पी० ए० अपने कमरे में चला गया । मानिकटाला ने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे चारों तरफ घूमना शुरू कर दिया । सामने की रोशनी दीवार पर उनके भिन्न-भिन्न पोज बनाने लगी । जब ‘साइड पोज’ आता था, व्यक्ति का आभास न लगता था । पीठ आते ही आकृति सपाट हो जाती थी ।

पी० ए० ने आकर बताया, “खेतान साहब उद्योग-निदेशालय किसी टिम में गए हैं ।” मानिकटाला ने कुर्सी का आधा चक्कर पूरा करते हुए

बहा, "धमय्या ने मुझे नहीं लिखा। वैसे जब मैं दिल्ली जाता हूँ—कई बार मैं भी उसे मुक्ति नहीं कर पाता। उसकी भी मुझसे यही गिकायत रहती है।" वह धुपचाप गाड़ा मुनता रहा।

"अच्छा हो० एम० को फोन करो—धमय्या माहव से भेंट हो मरेगी।" वह फिर फोन करने के लिए चल दिया, लेकिन मानिकटाला माहव ने बीच ही में मे बुलाकर कहा, "डी० एम० को नहीं...। सेनान के बारे में पूछो—जब आये मुझसे फौरन बात करे..." पी० ए० सेनान के बारे में माहव करने चला गया। मानिकटाला ने अन्तरंग फोन का बज्रर दबाने पर पुनः कहा, "सेनान न आया हो तो पोद्दार से बात कराओ।"

जब पोद्दार फोन पर आए तो मानिकटाला ने पहले ही पूछा, "सेनान कहाँ है?" और बिना उमका जवाब मुने कहते गये, "मीटिंग में तुम नहीं जा सकते थे। जब देवी शायब, आये तो मुझसे फौरन बात करे।" रितीवर रम दिया। रमने के तुरन्त बाद ही उन्होंने फिर पोद्दार से बात कराने के लिए पी० ए० को कहा। लेकिन बात करते समय पी० ए० का बहो बड़ा रहना उन्हें संभवतः ठीक नहीं लगा। उन्होंने कुछ इसी तरह उमकी ओर देखा था। वह धुपचाप अपने कमरे में चला गया और सेनान फोन का रितीवर उठाकर उनकी बातें सुनने लगा। मानिकटाला ने छूटने ही पोद्दार को डाँटना शुरू कर दिया था, "तुम लोग क्या करते हो... हज़ार दो-दो हज़ार इमीलिए मिलता है। कुसियाँ लोडो और गाड़ियों पर दौड़ो। इंजीनियरिंग वालिज तक ने सेन्ट्रल मिनिस्टर ऑफ इण्डस्ट्रीज को बुला दिया... तुम लोग उन्हें फैक्ट्री में बुलाकर चाय भी नहीं पिला मने..." कुछ रुककर उन्होंने फिर कहना शुरू किया—

"...सेनान की इसी समय मीटिंग में जाना था? तुम जाओ डी० एम० के पास। मिनिस्टर 'एयरोड्राम' ने आकर मोचे हमारी फैक्टरी में चाय पी सकते हैं... हमारा गेस्ट हाऊस उनके अकिट हाऊस से 'गार बेटर' होगा। वैसे धमय्या मेरे दोस्त हैं। मैं बिना किसी कहे-मुने भी उन्हें एयरोड्राम में सीधे पकड़कर ला सकता हूँ। लेकिन फैक्ट्री का



कालिज । ना तो नहीं अत्यन्तियता में गागी ।”

“विपानर किम समय ?” पी० ए० ने मानिकटाला की ओर देगा, अपनी वान धीरे में दोहरा दी, ‘अत्यन्तियता में गागी ...?’ अन्त में ‘यानी विपानर’ और जोर दिया ।

मानिकटाला ने उगद-उगद देगा । उनका पादप आगमकुर्सी के हृथे पर रत्ता गया । उमने शर में उद्याह्य उनके सामने रग दिया । वे उसे पिल से कुंरदने लगे । श्यामलार्ड जल्दी और गम्भाकू जल्दने के लिए छोटे-छोटे कय वीचने लगे । श्यामलार्ड की गंजनी में उनका चेहरा योड़ा विवृत हो गया, उनकी नाक के नथने तक गिनकर लम्बे हो गए । इतनी देर तक की सामोजी के बाद, कमरे में शिगार का गुआं हिलता हुआ नजर आया ।

पादप में दम लगाकर उन्होंने फिर ‘हूँ’ की और पी० ए० से पूछा, “इंजीनियरिंग कालिज से कोई ‘इनवीटेशन’ आया ?”

“जी नहीं ।”

“आया जरूर होगा । तुम लोगों की कुछ पता नहीं रहता...खेतान को टेलीफोन करो ।” मानिकटाला ये सब एक सांस में कह गए थे ।

“जनरल मैनेजर साहब को ?”

“हाँ भई और क्या मालिक साहब को ! तुम बात को जल्दी क्यों नहीं समझते ?”

टेलीफोन पी० ए० के कमरे में था और ‘एक्सटेंशन’ मानिकटाला साहब की मेज पर । मात्र वे बात करते थे । फोन करने के लिए पी० ए० अपने कमरे में चला गया । मानिकटाला ने अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे चारों तरफ घूमना शुरू कर दिया । सामने की रोशनी दीवार पर उनके भिन्न-  
 २ -पोज बनाने लगे । जब ‘साइड पोज’ आता था, व्यक्ति का आभास था । पीठ आते ही आकृति सपाट हो जाती थी ।

ए० ने आकर बताया, “खेतान साहब उद्योग-निदेशालय किसी ए हैं ।” मानिकटाला ने कुर्सी का आधा चक्कर पूरा करते हुए

"नहीं, मैंने तो माफ़ी माँग ली। बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स की मीटिंग है।"

.....

"हाँ-आँ अगर कंसिल हो गई तो शायद आ जाऊँ... सुबह प्रिंसिपल भी कह रहे थे।"

.....

"देखिए ! अच्छा नमस्कार !"

फोन रखकर मानिकटाला साहब का चेहरा खिंची प्रत्यक्षा-सा हो गया था। उन्होंने केडिया प्लोर मिल्स ने भी बात की, "कहिए क्या हाल-चाल है केडियाजी... मुलाकात ही नहीं होती ?"

.....

"क्या बताऊँ, आजकल इन मिनिस्ट्रों के सारे भी नाको दम है। रोज़ कोई-न-कोई आया रहता है। आने से पहले फोन कर देते हैं, आज बर्बाद आ रहे हैं, उनसे पहले साहब बहादुर का फोन आ गया..."

.....

"वहाँ पर भेंट होनी तो मुश्किल है। शाम को हमारे वहाँ भी बोर्ड की मीटिंग है... फिर भी कोशिश करेंगे।"

.....

"अच्छा।" मानिकटाला ने जल्दी से रिसीवर रख दिया।

इन दोनों से बात करने के बाद उन्होंने फिर खेतान को दिखवाया। उस समय उनका चेहरा टूटे प्याले-सा लग रहा था। खेतान तब तक भी नहीं लौटे थे। मानिकटाला ने नाराज होकर अपने पी० ए० ने कहा, "वही पर टेलीफोन करो और कहो फौरन चला आए... भाठ में गई मीटिंग-मीटिंग !"

लेकिन उसने आकर बताया, "बे वहाँ से घटा-भर पहले चल दिये।" मानिकटाला साहब एकाएक नाराज हो उठे, "अपनी बीबी के पास गया होगा... दफ्तर में मन नहीं लगता। तनखाह बम्पनी देजी है, नौकरों अपनी बीबियों की करते हैं... स्ता..." पी० ए० को सामने देखकर

मानिहः

। यानी

पट्टनः

पट्टना

वग्ना

आगा

वैठे र

गहे छे

पागद

के ।

अधि

भीरे

ओ

वा

‘उ

पृ

र

रे

देना कि हम इस तरह नहीं जाते । चक्कीवालों तक को तो इन्वीटेशन गया है । तुम लोग कुछ नहीं कर सकते...बस बातें बनाना जानते हो । प्रिमिपल को यह भी बताना देना, थमय्या मेरे 'पर्यन्त' दोस्त हैं ।" मानिक-टाला सड़के के साथ उठ खड़े हुए । उनके उठने के बाद कुर्मी लगभग चौथाई वृत्त घूमकर रुक गई । उन्होंने कमर पर हाथ रगड़कर कमरे की लम्बाई के दो चक्कर लगाये और स्वेच पी० ए० के कमरे में जा कर प्रिमिपल का नम्बर मिलाया ।

.....

"गुड मॉर्निंग प्रिमिपल साहब ! मानिकटाला मानिकटाला का चैयरमैन । सुबह थमय्या ने फोन किया था, मैंने सोचा आपने पूछ लूँ । सब ठीक है न ?"

.....

"पहले तो यही सोचा था थमय्या मे कहें, प्रिमिपल साहब ने मुझे तो याद किया ही नहीं, लेकिन फिर यही ध्यान आया, आपसे बाद में निबट लेंगे, एक शहर का मामला है...बाहर बागों को क्यों बनाया जाए ?"

.....

"कोई बात नहीं...यह तो होता ही रहना है । मैं बुग मानना तो आपको फोन क्यों करना ?"

.....

"आपने तो मेरे भाष एक और सलाह दी है । मैं बच्चों के लिए इन्वेन्शन देना चाहता था, मैंने इन्कार कर दिया ..."

.....

"समझता हूँ, समझता हूँ । इसीलिए तो चुप हो गया । लेकिन थमय्या से आपसे कहना होगा, इन्वेन्शन के लिए आपने ही बना दिया है...नहीं तो मैं उनसे झूठा बनूँगा, दोस्ती का मामला है ।"

.....

मुकाम्त तैय आवाज में कहा, "निर्माण का फोन करो...कहना, आने मानिकटाला दूध के पैक करने का करना आते है..."

कुछ रनकर फिर कहा, "मन ठीक नम्र बात देना ।"

उन्होंने फिर उसे वापस चुप किया, "अच्छा रहने दो, मेतान गुद बात कर लेना ।"

पी० ए० अपने आदेश की प्रतीक्षा में गड़ा रहा । मानिकटाला पहले तो चुप रहे, फिर एकदम दौड़ने हुए बोले, "जाओ...अरे भाई जाओ भी !" उसने धीरे से पूछा, "नर फाइलें ?"

"फाइलें..." उन्होंने अर्धहीनता के साथ दोहराया, फिर कहा, "अच्छा फाइलें...हैं...ले जाओ ।" लेकिन उसे फाइलें लेते जाते हुए देखकर आप-ही-आप कहने लगे, "किसने कहा फाइलें लाने की, तुम्हें गुद नहीं सूझता...मैं कितना चिन्नी हूँ ?...मेतान को फोन करो ।"

पी० ए० के कमरे में पहुँचने के पहले से ही घंटी बज रही थी । उसने रिसीवर उठाया, "ओह मेतान साहब, साहब को बताइए...मैं देता हूँ, होल्ड कीजिए ।"

रिसीवर हाथ में लेते ही मानिकटाला साहब ने कई सवाल कर दिए, "कितना डोनेशन तय हुआ...एनाउन्स करेंगे या मेरे हाथ से दिलवायेंगे ?"

.....

"सरकारी इन्टीट्यूशन (इन्स्टीट्यूशन) होने से डोनेशन क्यों नहीं लेते ? इलेक्शन के दिनों में सरकार वाले चन्दा खुद नहीं माँगने जाते । मैं यमय्या से ही बात करूँगा...इन्वीटेशन का क्या हुआ ?"

.....

"निमंत्रण-निमंत्रण क्या लगा रखा है, सीधा 'इन्वीटेशन' कहो ।"

.....

"क्या खत्म हो गए...कम छपवाए थे ?"

.....

न्वीटेशन भी कोई इन्वीटेशन होता है ? प्रिंसपिल से कह

देना कि हम इस तरह नहीं जाते। चक्कीवालों तक को तो इन्वीटेशन गया है। तुम लोग कुछ नहीं कर सकते... वस बातें बनाना जानने हो। प्रिंसिपल को यह भी बताना, थमय्या मेरे 'पर्सनल' दोस्त हैं।" मानिक-टाला झटके के साथ उठ खड़े हुए। उनके उठने के बाद कुर्सी लगभग चौथाई घुस धूमकर रुक गई। उन्होंने कमर पर हाथ रखकर कमरे की लम्बाई के दो चक्कर लगाये और स्वयं पी० ए० के कमरे में जा कर प्रिंसिपल का नम्बर मिलाया।

.....

"गुड मॉर्निंग प्रिंसिपल साहब! मानिकटाला मानिकटाला का चेयरमैन। मुबह थमय्या ने फोन किया था, मैंने सोचा आपसे पूछ लूँ। सब ठीक है न?"

.....

"पहले तो यही सोचा था थमय्या ने कह दूँ, प्रिंसिपल साहब ने मुझे तो याद किया ही नहीं, लेकिन फिर यही ध्यान आया, आपसे बाद में निबट लेंगे, एक शहर का मामला है... बाहर बागों को क्यों बताया जाए?"

.....

"कोई बात नहीं... यह तो होता ही रहता है। मैं बुरा मानता तो आपको फोन क्यों करता?"

.....

"आपने तो मेरे साथ एक और बरादरी की है। मैं बच्चों के लिए डोनेशन देना चाहता था, आपने इन्कार कर दिया..."

.....

"नमजता हैं, नमजना हैं। इमोटिए तो चुप हो गया। लेकिन थमय्या से आपको कहना होगा, डोनेशन के लिए आपने ही मना दिया है... नहीं तो मैं उनमें झूठा बनेगा, दोस्ती का मामला है।"

.....

"एकदम... एकदम सच है। आज्ञाओं के मुझे खोले की भीड़ों के लिए  
 आसानी पड़ेगी, लेकिन मेरे 'आप' अपना जवाब माद नहीं देता।"

.....

"देवदत्त," लम्बा-सा कहा।

गिरिजा के समस्त मानविकता की नज़रों में ० ए० की नज़रों में  
 एकदम, उसकी आंखों में एक नुपुनितता उभर आई थी। उसे देखा  
 मानविकता की नज़रें अनिमित्त जानकर की तरह मोता लगा गई।

फ्रॉक वाला घोड़ा,  
निकर वाला साईस



"उरं..."

"उरं..."

"डट...डट..."

"बच के...! बाएँ से...!"

नजर उठ जाती है। दो बच्चे घोड़े का खेल, खेल रहे हैं। फ्रॉक वाला घोड़ा है निकर वाला साईस। घोड़े की बगल में से रस्ती निकालकर भाईस ने रात बना ली है।

मुझे यह दृश्य कुछ विचित्र-भा लगता है... शायद विदोष मानसिक स्थिति के कारण। मैं रेलिंग पर झर खड़ा हो जाता हूँ।

"वैसे यह खेल हमने भी खेला है। अब बच्चे भोज रहे हैं। शायद बुढ़ाई में भी खेला होगा..."

"भय या भुरा?" कुछ निश्चित नहीं कर पाता। अचानक चीता को दिगाने के लिए आहूत हो



मुझे सुनाने के लिए वह इस पटना से भी कुछ-न-कुछ खोज निकालेगी। मुक्तान्ते-मुक्तान्ते एक जाना है।

●

चाल के घोड़े के पुनरुद्भव... राजा की मजदूरी में राजा की चाल चलता है।" यह पताची ठीक नहीं चाल पाता।

फिर 'उरं... उरं...' और टिटकावियां।

फाँकवाले घोड़े पर इस गवका कोई अगर नहीं। वह बिना ध्यान दिए उसी चाल से चलता रहता है। जायद निकरवाले सार्डम को यह पसन्द नहीं आता। वह राम पटककर देता है। मुनना उनको भी पसन्द नहीं। दरअसल तेज और अच्छे घोड़े की पहचान भी यही है 'गैरत'। कहते हैं अच्छे आदमी और अच्छे घोड़े में एक यह भी अन्तर होता है।

घोड़ा दोनों हाथ ऊपर उठाकर अलिफ होने की मुद्रा में खड़ा हो जाता है। घोड़ा बने बच्चे की यह मुद्रा असली घोड़े की उसी अनाहिष्णुता की प्रतीक है।

उसके इस अभिमान से मुझे प्रसन्नता होती है। लेकिन पुनर्विचार इस प्रसन्नता का सर्वथा विरोधी है। जिस बात से मैं प्रसन्न हूँ, वह गम्भीरतापूर्वक सोचने का विषय अधिक है। मैं सोचने लगता हूँ। 'सार्डम घोड़े से चाल बदलने के लिए कह रहा है तो इसमें अलिफ होने की क्या बात है? यह खुल्लमखुल्ला साथ-साथ न चलने की धमकी नहीं तो और क्या है?"

'असहयोग... अनुशासनहीनता।' जोर से गाली की तरह बकने लगता हूँ। लेकिन बक लेने के बाद भी मेरा आक्रोश खत्म नहीं होता।

"जानवर, आदमी थोड़े ही है! सहयोग और असहयोग क्या जाने? और फिर यह तो बच्चों का खेल है।" मेरा दिमाग बच्चों की बातें सोचने लगता है—'बच्चे क्राविल-ए-तारीफ होते हैं, कितना सूक्ष्म अध्ययन होता है! जब अभिनय करते हैं तो समझते रहते हैं सब-कुछ अभिनय मात्र ही है! लेकिन हम लोग...' और तारीफ करते-करते फिर गस्सा आ

जाना है—“यह भी कोई बात है ! नकल करने के लिए और कुछ नहीं”  
घोड़ा ही रह गया । मनुष्य जाति में ही हीन भावना है ।”

“लेकिन यह तो बच्चे खेल रहे हैं, इसमें नाराज होने की ऐसी क्या बात ?” मेरी कुछ आदत है बच्चों के खेल को भी गम्भीर ममला समझ बैठता हूँ । फिर उसे न्यायसंगत ठहराने का प्रयत्न करता हूँ ।

सौतू और नीतू मेरे ही बेटा-बेटी हैं । बड़े सैतान । मेरी इस अमहन-शीलता के निकार वे भी हो चुके हैं । रीता का और मेरा ऑफिस अलग-अलग है । दिशाएँ भी । नहीं तो मैं उसके साथ ही कार में जा सकता था । साथ-साथ इसलिए नहीं जाते । हम लोगों में सेक्स की भिन्नता है, हाज़ाकि यह कोई ऐसा कारण नहीं, आखिरकार वह मेरी पत्नी है । वैसे उस रोज़ साथ गये ही थे (हम लोगों के एक-दो कॉमन सम्बन्ध भी हैं, जहाँ साथ-ही-साथ जाना पड़ता है) । लौटने पर देखा नीतू और सौतू एक खेल खेल रहे हैं । उन्होंने उसे खेल ही बताया था । दरअसल वे हम लोगों की नकल कर रहे थे ।

रीता की भूमिका में नीतू और मेरी भूमिका में सौतू ।

नीतू यानी रीता ने डायलाग बोला, “आप यह कैसे समझते हैं कि मैं दिन-भर आपसे बेंधी-बेंधी डोजूँ ! मेरी सोसाइटी में आप फिट नहीं हो पाते और आपकी सोसाइटी में...मेरा तो कोई सवाल ही नहीं उठता । आप चाहते हैं अन्य कलकों की पत्नियों की तरह मैं भी आपकी सेवा में हाथ बाँधे खड़ी रहूँ ।...पति के दृष्ट हो जाने पर मुझे नरक मिलेगा, इसका मुझे कोई डर नहीं...” नीतू ने ठीक उसी तरह नयन फुलाए और शब्दों के साथ ‘हूँ’ किया, जैसे रीता किया करती है ।

अब मैं, यानी सौतू बोला, “लेकिन यह तो तुम्हें पढ़ने-सोचना चाहिए था...। तुम...तुम...दु आर ऑन ए हायर पोइन्टन...” अन्तिम वाक्य को उसने ठीक उसी तरह तोड़-तोड़कर बोला जैसे नावावेश में बोला जाता है ।

“मैं कोई कतनी करती हूँ तो सुधारना भी जानती हूँ ।...पछतायी-

सीतू सीता की तरह धारों को पीछे पीछी हुई कमरे में जाती गई। मुझे में सीता दीक इसी तरह बाल पीछे पीछा करती है।

सीतू हाथ मलना पड़ा रह गया। मुझे क्षण-भर की लम्हा सीतू को ऐसे नहीं करना चाहिए।

सीता जोर में हँस पड़ी और सीतू को गोंद में उठाकर प्यार से बोली—‘हाय, मेरी एनट्रेस!’ जोर की आवाज के साथ उसे चुम लिया। लेकिन मुझे इसी जोर का गुस्सा आ गया था कि सीतू के चपत रसीद जिसे बिना नहीं रह सता। उसका निगियाकर सीता भी मुझे पसन्द नहीं आया। एक और चपत रसीद कर दिया। मेरे चपतों और सीता के चूमने की निम्न आवाजों में कहीं समानता-सी लगी।

मैंने सीता की आँखों में देखना चाहा, क्योंकि शरीर में एकमात्र आँखें ही पारदशंक (ट्रांसपेरेंट) होती हैं। उस समय मैं नहीं समझ सका, सीता यह कहने के बजाय ‘तुम दिन-दिन पूरी तरह कलकं बनते जा रहे हो’ अपने दोनों बच्चों को उँगली पकड़कर वहाँ से चुपचाप कैंसे चली गई। लेकिन मैं वरुणा नहीं गया। शाम को उससे भी ज्यादा सुनना पड़ा, “तुम बिल्कुल गेंवारों की तरह व्यवहार करते हो। सीतू को इस तरह पीटकर तुमने उसका एक ‘टेलेन्ट’ हमेशा के लिए दबा दिया। इन बच्चों को पीटने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।”

मैंने कहना चाहा—“यह सब तो मैं उसी समय सुनना चाहता था, बारह घण्टे देर क्यों कर दी?” लेकिन मैं जानता था उसकी बातें अक्षरशः सत्य हैं, इसलिए चुप लगा गया।



“वस...वस।”

मेरा ध्यान सड़क पर दौड़ते हुए उस फ्रॉक वाले घोड़े और निकर वाले साईंस पर फिर चला गया। मुझे आश्चर्य होता है वह अभी भी उसी तरह दौड़ रहा है—मैं कितनी बड़ी-बड़ी बातें सोच गया।

साईंस घोड़े की खुशामद में लगा है...“मेरे शेर...अपने सिकन्दर को

बने का रातव दूंगा।”

घोड़ा पाँव पटककर सिर हिलाता है। सार्स उसकी कमर और गर्दन पर हाथ फेरने लगता है। घोड़ा घुड़घुड़ी लेकर अपनी रजामन्दी प्रकट कर देता है। सार्स भी ‘वाह राजा, हव मेरे शेरा...’ कहकर उसकी एल टी लगाने की कोशिश करता है। मैं मुस्करा देता हूँ। मुझे अचानक एक बात याद आ जाती है, हम अपने सुपरिन्टेन्डेन्ट को ‘प्वाइट फाइव’ (हास-पावर) कहते हैं। भला जब प्वाइट फाइव को एल टी लगाने की खुरत पड़ती है वह तो पूरे हासपावर का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

मेरी नज़र सामने ताँगा स्टैंड पर खड़े एक तगि पर चली जाती है। तगिवाला जुते घोड़े के पाँवों को मल रहा है। मैं सोचने लगता हूँ, चलते घोड़े के पाँव सय मलते हैं।

● वह फॉकवाला घोड़ा, और निकरवाला सार्स एक गली में मुड़ गए हैं। मेरा मन हो आता है मैं रीता के पास जाकर कुछ देर बैठूँ और प्यार के साथ यह सब किस्सा सुनाऊँ। मैं भी तो उससे बचता फिरता हूँ। रेलिंग से हटकर अन्दर की ओर चले देता हूँ। लेकिन... नहीं जाता। साधारण-तया हम लोग अनुपयुक्त क्षणों (ऑड ऑवर्स) में एक-दूसरे को डिस्टर्ब नहीं करते। यह बात हम लोग किसीसे कहते-बहने नहीं। लोग-बाग इस बात को समझ तो पाते नहीं, पूछने लगते हैं—“पति-पत्नी के लिए क्या ‘आड आवर्स’?”

हमारे यहाँ बड़ी जनतवात्मकता है। सब अपना-अपना पथ चलते हैं। बीसे रीता दफ्तर का काम घर भी लाती है। हालाँकि हम लोगो को नोटिंग-ड्राफ्टिंग भी करनी होती है। अफसरान तो दस बिड़िया मात्र बीठाते हैं। फाइलें, बिना अफसर की बिड़िया के अर्बेहीन वाक्यों-भो रहती हैं। यद्यपि उन लोगो के पास हमसे अधिक समय होना चाहिए, लेकिन वे लोग हर समय व्यस्त दिखते हैं। फिर रीता तो बड़ी ‘कॉन्सिडरेशन’ है। डरती है, वही उमने हस्ताक्षर कर देने से अर्थ का अनर्थ न हो जाए।

इमरजन्सी भी उमरा नाम बड़ा रहता है ।

शादी के बाद की ही बात है, मेरे इमरजन्सी का, "तुम इमरा नाम करली हो, दो मिनट साथ बैठने का भी समय नहीं मिलता..." मैं मदद कर दिया क्योंकि ।" रोता की यह बात समझ नहीं आई । हालाँकि उमरा यह जवाब नहीं था, इमरजन्सी का कया मदद करेंगे—नोटिन्-ड्रायिन्ग का काम तो है नहीं । लेकिन ठीक मुझे उगी तरह अमरजन्सी का, किसी जगन्प्रसिद्ध अमरजन्सी को पर गाँवों के मुग में अमरजन्सी मुनना बुरा लगता है ।

जब यह काम करली होनी है, मैं उसके कमरे में नहीं जाना । व्यवधान पड़ता है । नोटिन्-गम्बन्धी मगले (पॉलिमी मैटर्स) होते हैं । ऐसे मामले सबके सामने तय करना ठीक नहीं होता । किसीके सामने मुँह से ही निकल जाए । ऐसे मामलों में वह नागरथ से मदद लेती है । वह भी डिप्टी सेक्रेटरी है । किसी और विभाग में । शुरू दिन से ही उसको रीता की मदद करते देखा है ।

शादी के बाद जब नागरथ से परिचय कराया था, तो रीता ने कहा था—“ये मेरे बड़े भाई की तरह हैं । आज तक जितने अहसान इन्होंने मुझ पर किये हैं शायद हम दोनों भी मिलकर न उतार सकें ।” बात इतने भाव-भरे ढंग से कही गई थी, मेरे पास सिवाय कृतकृत्य हो जाने के और दूसरा रास्ता ही नहीं था ।

उसके बाद नागरथ ने मुझे भी अपने अहसानों से लाद दिया । संकटकालीन स्थिति (इमरजन्सी) के समय छूटनी होने लगी तो लिस्ट में मेरा भी नाम आ गया था । लेकिन उसका ही दम था कि आज मैं उसी पोस्ट पर बरकरार हूँ । अब तो स्थायी हो गया, हालाँकि रीता की मर्जी नहीं थी । नागरथ ने भी मुझे यही राय दी थी, “आपके डेढ़ सौ, दो सौ से तो घर में कोई विशेष सहारा लगता नहीं, आप आराम से रहें । आखिर रीता किसके लिए कमाती है !” जब नागरथ समझा रहे थे, रीता मुस्कुरा रही थी ।

‘एक नौजवान पट्टे-लिखे आदमी को आराम करने की सलाह देना...’ उन दोनों का यह मुझाव आज तक मेरे गले नहीं उतरा। जब मैंने उन्हें समझाना चाहा—“महत्त्व इस बात का नहीं, मैं कितना कमाता हूँ—कमाता तो मेरे समय के उपयोग की रायल्टी-मात्र है। मुख्य प्रश्न समय के उपयोग का है। अपने जहर को भी नाली में बहाकर वैसे ही समाप्त नहीं कर देता—यह तो मेरी इतनी बड़ी जिन्दगी की बात है।” नागरण मुझे समझदार आदमी मालूम पड़ा। मेरे रत्न को देखकर न चाहते हुए भी, उसने अपनी बात तुरन्त बदल दी। रीता नाराज हो गई, “आप पुरुष लोग समझते हैं, जो कुछ आप कमाकर लाते हैं उसका कारण हम लोग आप लोगों का सम्मान करते हैं और इसी कारण आप लोग अपने-आपको स्वतन्त्र रख पाने में समर्थ हैं। लेकिन आज व्यक्तिगत सम्बन्धों का भी आर्थिक महत्त्व अधिक है। अगर मैं आपसे छ गुना कमाती हूँ, तो छः गुना ही बड़ी भी हूँ...”

मेरे अन्दर उस पर बिगड़ उठने वाली प्रतिक्रिया हुई, लेकिन नागरण ने पहले ही डाँटकर परिस्थिति संभाल ली, “रीता, मुझे मालूम है—बया कह रही हों? भारतीय सम्यता यही है, घर का पुरख चाहे एक आना कमाकर लाए, उससे परिवार का एक धर्म बनता है, परंपराएँ और संस्कार बनते हैं। स्त्री का कमाया धन अप्रसूय है। उससे परिवार में कुसंस्कार जन्म लेते हैं, जीवन दूषित हो जाता है और सन्तान...” पुरख भीनिक शक्ति और सत्ता का प्रतीक है, इसलिए स्त्री उसमें विबाह करती है। शारीरिक आवश्यकता तो दामो में पूर्ण हो सकती है। “बिगड़ उठने के बजाय रीता की गर्दन परचात्ताप से लटक गई।

●  
मैं रीता को फॉकवाले घोड़े और निकरवाले साईस का विस्वा मुनाने के उतावलेपन को बरा रोक लेता हूँ। मेरा दिमाग अपने अन्दर दौड़ते हुए किमी काल्पनिक घोड़े की टापो की महसूस करने लगता है। न... मन में संशय होने लगता है। वहीं फॉकवाले घोड़े ने

कुल्लियाँ न आसानी भुग कर ही हों, क्योंकि निम्ने छोटे और जिन्हें पत्नी को एक ही रति होती है। फिर मोक्षता है निरुपमाता मार्गम सुशामर करना जानता है।

०

कहता है...

“शायद नागरथ आ गया है।”

छुट्टी के रोज दोपहर को वह यही आ जाता है। मैं मोक्षता है चौड़ेवाली बात नागरथ को ही सुनाई जाए, वह अधिक ममतादार है। मैं गैलरी पार करके रीता के कमरे तक पहुँच जाता हूँ। लेकिन अन्दर नहीं जाता। जब कोई अन्दर होता है—विशेषकर नागरथ—तो मैं टाल जाता हूँ। जाता हूँ तो नाँक करके। रीत यह तो माधारण शिष्टाचार की बात है।

मैं नाँक नहीं करता। सड़ा-गड़ा सोचने लगता हूँ, नाँक किया जाए या नहीं। अन्दर नागरथ रीता को मगझा रहा है, देगो, तुम अफसर चाहे जितनी काबिल हो, लेकिन वैसे ही निरीह बुद्धि। छुट्टी के दिन वह अकेला बाहर बैठा है। आतिर तुम्हारा बंध पति है। इस तरह से तो तुम सब चीपट कर दोगी। लोग उस पेड़ तक को सींचते हैं, जिसकी छाँह में बैठते हैं।”

“ठीक है, लेकिन तुम मुझसे क्या चाहते हो? तुम्हारे कहने से मैंने इस व्यक्ति से शादी की। रात-रात-भर उस आदमी के साथ पड़ी रहती हूँ, उसके शरीर की दम घोटने वाली गन्ध सिर्फ तुम्हारे लिए बर्दाश्त करती हूँ। हीन है, हीनता उसमें कूट-कूटकर भरी है। मुझे उससे घृणा है।”

मुझे हट जाना चाहिए। हट नहीं पाता।

किसीकी व्यक्तिगत बातें सुनना ठीक नहीं होता। लेकिन मैं भी उन बातों में का ही व्यक्ति हूँ।

नागरथ ने शायद उसको निकट खींच लिया। हल्का-सा विरोध सुनाई पड़ा, “दरवाजा खुला है।”

दरवाजे में हट जाता हूँ । दरवाजा बन्द हो जाता है । मुझे लगता है, यह दरवाजा न आने कब से इसी तरह बन्द है । मैं मुरास से झाँक-कर देखता हूँ । साय-साय नागरव ज़मे समयमाना जा रहा है, “मैंने तो पाहा था कि यह बिल्कुल तुम्हारा नीकर बनकर रहे, लेकिन हमने नौकरी नहीं छोड़ी । हाथ-पाँव वाले आदमी में घोड़ा-बहुत स्वाभिमान तो रहता ही है ।”

सायद वे लोग बोल पाने की स्थिति में नहीं रहे । रीता के टूटते हुए सन्द सुनाई पड़े, “दरवाजा बन्द है...न !”

उत्तर में अलसामा-मा ‘हूँ’ बस !

रेलिंग के पास वापस आ गया हूँ । ‘जरे...जरे...’ फिर सुनाई पड़ता है । इस बार आवाज बदली हुई है ।

घोड़ा गली से निकल रहा है ।

सायद घोड़े और साईस ने स्थान परिवर्तन कर लिए । इस बार फौकवाला साईस है । घोड़ा छूटने के लिए बड़ा जोर लगा रहा है ।



## पेपरवेट

भेड़ों के रंगड़ के पीछे गड़रिये को लाठी लिए चलते देगकर मृणाल बाबू को हमी आ रही थी। गड़रिया उनको इकट्ठा करने के लिए मुंह से अजीब-अजीब बोलियाँ निकाल रहा था। कभी अपनी लाठी को जमीन पर दे मारता था, भेड़ें बेचारी डर के मारे एक-दूसरे से सट जाती थीं।

जमादार (चपरासी) ने आकर बताया, “हुजूर, साहब दफ्तर आ गए हैं।” हालाँकि वे शिवनाथ बाबू से ही मिलने आये थे, लेकिन इस सूचना ने उन्हें क्षण-भर के लिए अव्यवस्थित कर दिया। तुरन्त ही ध्यान आ गया, ‘जमादार’ उनके चेहरे के बदलते रँगों को बराबर देख रहा है। वे शिवनाथ बाबू के कमरे की तरफ तेजी से बढ़ गए। कमरे के बाहर ‘लुकिंग-ग्लास’ लगा

हुआ था। एक नजर उधर डालने पर उन्हें मालूम हुआ, कि वे सामन्ताह परेशान थे कि उनके चेहरे पर धवराहट है। धीरे से पर्दा हटाकर पायदान पर पाँव रगड़े, और सँसारते हुए मे अन्दर चले गए।

शिवनाथ बाबू फाइलें देखने में व्यस्त थे। उनके काम में व्यवधान न डालने के लिये हाथ जोड़कर धुपचाप कुर्सी पर बँध गए। बैठने के बीसवार क्षण बाद ही उन्हें खयाल हुआ, आराम से न बैठकर उठने बैठे हैं। इस तरह बैठना धवराहट का द्योतक है। मृणाल बाबू ने पीठ कुर्सी के तख्तों से लगा ली और पाँव फैला दिए। उनके पाँव आफिस-टेबल के नीचे रखे लकड़ी के खोसने पायदान से टकराए। चेहरा एकदम उतर गया और नजरें शिवनाथ बाबू के चेहरे की ओर चली गईं। शिवनाथ बाबू पर पायदान से पाँव टकराने की उम आबाज का कोई असर नहीं हुआ था। वे घबराहट अपनी फाइलें देख रहे थे। मृणाल बाबू उनकी कार्य-कुशलता की गौर से देखने का अभिनय करने लगे, जैसे कुछ सीखने का प्रयत्न कर रहे हों।

शिवनाथ बाबू फाइल उठाते छान्द फीता खोलते, फिर 'फ्लेम' लगे स्थान पर से उलटकर पढ़ने लगते थे। बीच-बीच में पीछे के पृष्ठ भी उलटने की आवश्यकता पड़ जाती थी। पढ़ते समय उनके होंठ भी व्यस्त नजर आते थे। फिर या तो उस पर नोट लिखकर या प्रश्नचिह्न बनाकर फाइल नीचे डाल देते थे। बहुत ही कम ऐसी फाइलें थी जिन पर उन्होंने उसी रूप में हस्ताक्षर किए हों। इस क्रिया को देखते रहने के कारण मृणाल बाबू को ऊब आने लगी। अतः इधर-उधर ताक-साँक करने लगे। चारों तरफ से बन्द वह कमरा, जलता हुआ लैंप और लैंप के प्रकाश का फाइलों पर पड़ता घेरा—“किसी दार्शनिक के अन्तस्त्वल-सा महसूस हुआ। बाकी कमरे में उस प्रकाश का आभास-भाव था। बैठे-बैठे मृणाल बाबू को एक पृष्ठ में दुसरा महसूस होने लगी है, दूसरी पृष्ठ बदल सी।

शिवनाथ बाबू ने फाइलों पर से जब गर्दन उठाई तो मृणाल बाबू सक-पका-से गए। शायद उनका खयाल था शिवनाथ बाबू गर्दन उठाने से पूर्व

कोई तो आभास देंगे। तबखुशी उन्हें अपने हाँथों पर मुस्कान मानी पड़ी, उनके मूँगे होंठ बोनीश खड़की शरारत बिना गए। शिवनाथ बाबू ने मूँगों की गपनता में किसी स्वाभाविक मुस्कान के साथ पूछा, "नहिए, विभाग का काम ठीक चल रहा है?"

मृणाल बाबू नहीं गव बताने के लिए आये थे। दरअसल शिवनाथ बाबू के विदेश से लौटने के बाद से उन्होंने कई बार उनसे मिलने का प्रयत्न किया था, लेकिन अत्यधिक व्यस्तता के कारण समय नहीं दे पाए थे। विदेश जाते समय शिवनाथ बाबू उन्हें मन्त्री-मंड की शपथ दिलवाकर गए थे। उस समय उनसे यह भी कहा था, "मैं चाहता हूँ आप अपनी उसी तेजी और अवलमन्दी का यहाँ भी परिचय दें, आपकी अतिरिक्त तत्परता के कारण ही तो शान्तिनगरण को त्याग-भ्रम देना पड़ा था। मैं समझता हूँ... आप उन सब परिस्थितियों को भली प्रकार समझ सकेंगे।" फिर धीरे से मुस्कुराकर पुनः कहा था, "मैं इस बारे में सचेत हूँ... आप जैसे मेहनती और ईमानदार व्यक्ति कम ही हैं..." ये हवाई जहाज में बैठ गए थे। लगभग सभी लोग हवाई जहाज के उड़ने तक सड़े देखते रहे थे। शिवनाथ बाबू के चले जाने के कई दिन बाद तक उन्हें लगता रहा, पिता जैसे बच्चे को स्कूल में भरती कराकर चला गया है।

मृणाल बाबू ने उनकी उस बात की गिरह बाँध ली और इस बात की पूरी कोशिश की थी कि शिवनाथ बाबू के लौटकर आने तक विभाग को पूरी तरह बदल डालें। हर फ़ाइल को वह स्वयं देखते थे। कोई भी फ़ाइल पन्द्रह दिन से अधिक न रुके, इस बात के लिए विभाग को सख्त आदेश थे।

शिवनाथ बाबू के विदेश से लौटने के बाद उन्होंने इस बात को महसूस किया, कैबिनेट की मीटिंग में उन्होंने सब मंत्रियों के काम की किसी-न-किसी रूप में सराहना की है। मृणाल बाबू के विभाग के बारे में उन्होंने एक शब्द नहीं कहा था। विभाग के काम में भी एक अजीब तरह का परिवर्तन आ रहा था। जो भी फ़ाइल विभाग से भाँगी जाती थी, पता चलता था मुख्यमंत्री के पास है। सचिव को पूछते थे, वह भी

मुख्यमंत्री के यहाँ गया हुआ होता था। मृणाल बाबू के मन में यह निश्चय हो गया था, सचिव की बदमाशी है। मुख्यमंत्री को बात करनी होगी, तो विभाग के मंत्री को बुलाकर बात करेंगे। वे यह भी गुन धुने थे, कि वह व्यक्ति मुख्यमंत्री के मुँह लगा है।

सिवनाथ बाबू ने गर्दन उठाकर कॉल-बेल बजाते हुए उनकी ओर मुखातिब होकर कहा, "आपने कुछ बताया नहीं... क्या बात थी?" थोड़ी मुनकर वही जमादार आ गया, उसने एक नज़र मृणाल बाबू पर भी डाली। सिवनाथ बाबू ने मृणाल बाबू की ओर इशारा करते हुए जमादार से कहा, "उरा आपके सचिव... मिस्टर राय से टेलीफोन मिलाओ... हम बात करेंगे।"

उनके बैठे हुए, विभाग के सचिव को बुझाया जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। लेकिन चुप रहे। सिवनाथ बाबू के अपनी तरफ़ धीमा-धीमा इशारा करने, हँसने पर मृणाल बाबू ने पूछा, "मिस्टर राय ने... कोई विभाग का काम है?" सिवनाथ बाबू कुछ इस तरह अपनी आँखें देखते रहे, जैसे उन्होंने गुनाही न हो। क्षण-भर के लिए मृणाल बाबू का चेहरा सिसियाना-सा हो गया। कुछ देर के बाद फिर हिम्मत करके बोले, "इधर मैंने अपने विभाग में... यानी विभाग को काज़ी समझने की कोशिश की है... कई स्कीमों में मेरे विभाग में हैं..."

उनका वाक्य समाप्त होने के बाद सिवनाथ बाबू ने बड़ी-सी 'हूँ' की। मृणाल बाबू समझ नहीं पाए यह 'हूँ' उनकी बात पर की गई है, या फ़ाइल देगकर मुँह से निकल गई। फ़ाइल बाँपते हुए वे दूसरे-दूसरे ओर बोले, "अच्छा..."

'अच्छा' मुनकर मृणाल बाबू उठ उठारिह हो गए, बहने लगे, "मिस्टर राय बिजुल रहस्य नहीं दे रहे। कोई भी फ़ाइल मेरे सामने नहीं आती। मैंने पर वही जमादर निष्ठा है मुख्यमंत्री के यहाँ कई हूँ...  
...क्या फ़ाइलें सेंगर कर रहे? अखिर बताने ही तो मुझे  
...आपका विभाग... है। लेकिन मिस्टर राय... बात

तो जानते ही है गड़े धक्को हुए व्यक्ति है...." फिर एकतरफ मुकुनो हुए फला, "मिस्टर राय गमझते है, मुझे यह सब आगम कहते हर लगेमा... नया-नया आरम्भो है...."

जिवनाथ बाबू को पुनः फाइनों में व्यस्त देखाकर मृणाल बाबू को अपने प्रति क्यादस्ती-सी होनी महसूस हुई। जब जमादार ने आकर बताया कि राय साहब कोठी पर नहीं है... मन्दिर गए है, जिवनाथ बाबू बिना कुछ कहे कुर्सी पर से उठ गड़े हुए। मृणाल बाबू की ओर हाथ जोड़कर बोले, "अच्छा....।"

मृणाल बाबू को लगा, कि उन्हें कोठी से धक्के देकर निकलवा दिया गया है। तैची के साथ कमरे से बाहर निकल आए। बाहर निकलते ही उनकी नजर जमादार पर गई। वह बड़े हाव-भाव के साथ उनके ड्राइवर को कुछ बता रहा था। उसके चेहरे पर कुछ इस प्रकार की हँसी थी, जैसे किसीकी नपल उतार कर मजा ले रहा हो। उसका इस तरह करना मृणाल बाबू को अच्छा नहीं लगा। कार में बैठने पर ड्राइवर से पूछा, "जमादार क्या कह रहा था?"

ड्राइवर इस प्रश्न के लिए तैयार नहीं था। वह घबरा-सा गया और उसके मुँह से यही निकला, "जी, कुछ नहीं।"

"कुछ कैसे नहीं...." मृणाल बाबू ने ज़रा सख्त आवाज़ से उसी का वाक्य दोहराया।

ड्राइवर ने यह कहकर जान बचानी चाही, "कुछ आपस की ही बातें थीं।"

मृणाल बाबू को इस सबसे सन्तोष नहीं हुआ, ज़रा खुलकर पूछा, "हमारे बारे में कुछ कह रहा था!"

ड्राइवर ने उनकी तरफ़ देखने के लिए ज़रा-सी गर्दन घुमाई, वे पिछली सीट पर बाएँ कोने में थे। सामने ऊपर का शीशा भी दूसरे कोण पर था। ड्राइवर को सामने की तरफ़ ही देखते हुए कहना पड़ा, "हज़ूर, और तो कुछ नहीं... बस यही पूछ रहा था, मुख्यमंत्री जी तुम्हारे

साहब से क्या नाराज हैं...अभी-अभी तो तुम्हारे साहब मंत्री बने हैं।”

मृणाल बाबू को बड़े जोर से गुस्सा आया। उन्होंने कहना चाहा, 'शिवनाथ बाबू, मुझसे क्या नाराज होगा...मैं ही उससे नाराज हूँ...' उन्होंने कहा नहीं। केवल आँखें बन्द करके पीछे की ओर लुढ़क गए। बाँधें बन्द कर लेने पर भी उनके मन का आक्रोश कम नहीं हुआ, नाफ के तबने फूल गए और यह सोचने का प्रयत्न करने लगे, धर जाकर त्यागपत्र दे देंगे। मंत्री बनने से पूर्व शिवनाथ बाबू का जो उनके साथ व्यवहार था, अब एकदम उससे भिन्न है। उन्हें एकाएक आनाम हुआ वे आप-ही-आप कुछ बोल रहे हैं। सीधे बैठ गए और कुर्सी की तरफ देखने लगे, उसने देख तो नहीं लिया। लेकिन जब उनकी नज़र सामने वाले पीछे पर पड़ी, तो पीछे का कोण बदलता हुआ था। सब स्थितिगर्भ उन्हें ऐसी लगीं, जैसे बन्दी बता दिये गए हो।

आज की परिस्थिति पहले से एकदम भिन्न हो गई थी। जब शिवनाथ बाबू उन्हें मंत्री-पद के लिए आमंत्रित करने गए थे, तो कितने मधुर, स्नेहपूर्ण नज़र आ रहे थे। मृणाल बाबू को उनका वह स्वाभाविक व्यवहार याद हो आया, उस समय उनसे कहा गया था, “मैं जानता हूँ आप स्पष्टवादी और ईमानदार हैं...पार्टी-नाथेतर के होते हुए भी आपने मेरी सरकार का विरोध किया। शान्तिधारण की आपसे ही कारण माग-पत्र देना पड़ गया...” वह कहते हुए वह स्वाभाविक-ता हँस दिये थे। फिर गम्भीर होकर कहा था, “यदि मैं चाहता तो आदमी पार्टी और मन्त्र से निष्पत्ति निकाल सकता था। लेकिन मैं जानता हूँ, अपने विचारकों में आप-जैसी मूल-मूल वाला व्यक्ति कोई भी नहीं...” राफ बाजे दिन की राजस्वपत्र से परिचय बनाने समय उन्होंने उनकी अति-भूरि प्रशंसा की थी। राफ बाजे दिन राजस्वपत्र एक से जते के लिए मन्त्र-मन्त्र के अपनी दाढ़ी धेड़ी थी। मृणाल बाबू मोचने लगे, “उन समय उनके चेहरे पर आप-जैसी सरलता और निष्कलता थी, लेकिन आज का चेहरा...”

कुर्सी ने उनकी ओर ने बड़े लट्ठारा कि मृणाल बाबू को पड़ा—

एकसीघंटे हो गया है। कोई बकरी का बच्चा कार के नीचे से बन गया था। मृणाल बाबू को बकरी के बच्चे पर बड़ी दया आई।

ॐ

उनकी कार पोटिकों में जाकर गयी, बरांडे में बहुत-से लोग जमा थे। उनका मन हुआ, कार से उतरकर वापस लौट चला जाए। वे लोग पहले रोज भी मिल चुके थे। मृणाल बाबू ने उन्हें अगले दिन उत्तर देने का आश्वासन दिया था। उनका गायल था कि वे सरकार को उन लोगों की शर्त मानने के लिए राजामन्द कर लेगे। एक औद्योगिक वस्ती का मसला था। सरकार जिन शोपडियाँ को लेना चाहती थी, उनमें रहने वाले मुआवजे में फ्रैक्टरी की पक्की नौकरी और रहने के लिए औद्योगिक वस्ती में कम किराये पर घर मांगते थे। सरकार को इस बात पर आपत्ति थी। मान मुआवजा देकर पीछा छुड़ा लेना चाहती थी। यही मसला शान्तिशरण के जमाने में उठा था, आज भी उसी रूप में मौजूद था। इसी मामले पर बातचीत करने के लिए वे मुख्यमंत्री के पास गए भी थे। प्रतिनिधि-मंडल के चले जाने पर भी उन्होंने सचिव को फोन किया था कि उस मामले की फाइल लेकर चले आएँ। सचिव ने यह कहकर पीछा छुड़ा लिया था, फाइल मुख्यमंत्री के पास है। मृणाल बाबू को उत्तर सुनकर इतने जोर का गुस्सा आ गया था कि सचिव को फोन पर ही डाँटने लगे थे। कोई भी फाइल बिना उनकी मर्जी के मुख्यमंत्री के पास न भेजी जाए। उनकी इस बात का कोई भी उत्तर देना सचिव ने उचित नहीं समझा था।

लेकिन मुख्यमंत्री के व्यवहार से मृणाल बाबू काफी असंत थे। औद्योगिक वस्ती के बारे में बात न कर पाने से वे अपने-आपको एक बड़ी अजीब स्थिति में फँसा महसूस कर रहे थे। उन्होंने यही निश्चय किया कि उन लोगों को मुख्यमंत्री के पास भेज देना उचित होगा। बिना शिवनाथ बाबू से संलाह किए किसी बात का आश्वासन देने का अर्थ यही था, कि वे अपने को भी शान्तिशरण वाली उलझन (कॉन्ट्रावर्सी) में डाल लें।

मृणाल बाबू ने जब उन लोगों को मुख्यमंत्री से मिलने का सुझाव दिया तो उनमें से एक विरोधी पार्टी के विधायक और हेप्टेसन के नेता बिगड़ उठे, "आप भी धान्तिशरण-जैसी ही बातें कर रहे हैं। आखिर विभाग आपके पास है या मुख्यमंत्री के! मुख्यमंत्री कहते हैं, आप लोग धान्तिशरण को तो बेईमान और कमजोर समझते थे। अब तो मैंने विधानमंडल के सबसे ईमानदार और आप लोगों के विश्वासपात्र को उसी विभाग का मंत्री बना दिया। अब भी आप मेरे पास ही दौड़ते हैं..." मृणाल बाबू खामोश-मे राहें रह गए। उनको लगा दरवाजा खोलते हुए किवाड़ की झूल निकल गई है। मन हुआ साफ कह दें, 'मैं तो नाम का मिनिस्टर हूँ...' लेकिन सबके सामने अपने मुँह से यह स्वीकार करना उन्हें अपमानजनक-सा लगा। अतः यही उत्तर देना उचित समझा, "अच्छा, आप निश्चित रहें... अगर मैं कुछ भी कर सकूँगा तो जरूर कहूँगा..." नमस्कार करके अन्दर चले गए।

मृणाल बाबू को ऐसा अनुभव हो रहा था कि उन्हें किसी खासतौर से तैयार की गई स्थिति में फिट कर दिया गया है। एक बार फिर त्यागपत्र देने की बात दिमाग में आई। 'लेकिन...' यह लेकिन उन्हें पहाड़ की जैबाई-जैमा लगा। वह उस सम्पूर्ण स्थिति की कल्पना कर गए जो त्यागपत्र देने में उत्पन्न हो सकती है। अगर शिवनाथ बाबू ने उनके लिए किसी भी स्थिति-निरोध का निर्माण किया है तो भी त्यागपत्र देना उन्हींके पक्ष में होगा। लोग कहेंगे विधान-भवन में तो बड़ा शोर मचाता था... काम करने का वक्त आया तो दुम कटाकर लांश खेर बन गया। इस बात का प्रचार इस रूप में भी किया जा सकता है... 'त्यागपत्र मांगा गया है।'।

उन्होंने मेज पर रखे पेपरवेट को उठा लिया और जोर से घूमने लगे। अपनी जैजियों के जरा-से 'ट्रिबल' पर पेपरवेट का घूमते रहना देखकर वे समझ नहीं पाए कि इस क्रिया को क्या सजा दी जाए।

टेलीफोन-एक्सटेंशन मधुमक्खो की तरह भिनभिनाने लगा। उन्हें



अपने पी० ए० पर गुस्सा आया, क्यों नहीं उगमे मना कर दिया। मुझे सूचित करने की क्या जरूरत थी? अब देगिए 'बजर' दवा देना है। लोग समझते हैं 'मिनिस्टर' हैं... भरो मिनिस्टर में न जाने क्या में क्या हो सकता है।' उनका मन हुआ वे रिमीवर को उठाकर बिना गुने ही रग दें। लेकिन चपरासी ने आकर बताया, "मरगाद, पी० ए० साहब ने कहलयाया है, मुख्यमंत्रीजी बात करना चाहते हैं..." रिमीवर उठाना मृणाल बाबू को मनीं बजनी वस्तु उठाने के समान लगा। उगर से शिवनाथ बाबू स्वयं बोल रहे थे। उन्होंने दो ही वाक्य कहे, "जरा चले आइए, जरूरी बातें करनी हैं..." रिमीवर रग दिया। स्वर अवेक्षाकृत नरम था।

मृणाल बाबू ने आक्रोश के साथ दोहराया, 'जरूरी काम है...'

❦

कमरे से बाहर आए। सामने पी० ए० वाले कमरे में ड्राइवर, चपरासी, शौडो (सुरक्षा-अधिकारी) सब जमा थे, कहकहे लगा-लगाकर बातें कर रहे थे। मृणाल बाबू गुस्से से कांप उठे, सीधे पी० ए० के कमरे में पहुँचकर पी० ए० पर विगड़ने लगे, "आपको शर्म नहीं आती..." इन लोगों के साथ बैठकर हँसी-ठट्ठा करते हैं। अपनी पोलीशन का खयाल रखना चाहिए।" पी० ए० साहब पर डांट पड़ती देखकर सब लोग दूसरे दरवाजे से निकलकर अपनी-अपनी जगह पर पहुँचकर मुस्तैदी से खड़े हो गए। ड्राइवर कार पोंछने लगा, शौडो बैच पर जा बैठा, चपरासी अन्दर चला गया।

कार चलाते हुए ड्राइवर को बराबर लग रहा था कि अब मृणाल बाबू की डांट पड़ी। ड्राइवर के बराबर में बैठा शौडो भी थोड़ा आतंकित था। लेकिन मृणाल बाबू का मन शिवनाथ बाबू के कुछ देर पहले वाले व्यवहार को लेकर अत्यधिक वसित था। वे सोच रहे थे, अगर शिवनाथ बाबू इस समय ठीक मूड में होंगे तो वे जरूर इस बात को कहेंगे।

मुख्यमंत्री की कोठी पर पहुँचकर वे बरांडे में ही ठिठक गए। पी० ए० तुरन्त दौड़ा हुआ आया और बड़े सम्मान के साथ ड्राइंग

गया। सणभर की मृणाल बाबू ने इस आवभगत का और मुबह आधा घण्टे तक लॉन में टहलने वाली स्थिति के साथ मिलाज किया। लेकिन तामने हो दीवान पर शिवनाथ बाबू बायीं कोहनी गाब-सक्रिये से टिकाए तिरछे बैठे हुए थे। बायीं घुटना पट लेटा हुआ था और दाहिना घुटना नब्बे डिग्री के कोण पर खड़ा था। उन्होंने विस्तृत-सी मुस्कान के साथ कहा, "आइए।" दायें हाथ से मोफे की तरफ इशारा कर दिया। मृणाल बाबू चुपचाप बैठ गए।

"आपने अभी भोजन तो नहीं किया होगा?" शिवनाथ बाबू ने मुस्कराते हुए स्नेहपूर्वक पूछा।

"जी नहीं, लौटकर ही करूँगा।"

"आज मेरे साथ ही भोजन कीजिए—जब मे विदेश से लौटा हूँ, पल-भर की फुरसत नहीं मिली। मुबह भी आपने बात नहीं कर पाया। बाद में मुझे बहुत बुरा लगा। दरअसल एक फाइल देखकर मेरा दिमाग इनना खराब हो गया कि—आप बुरा न मानें। कभी-कभी मानसिक तनाव भी स्थिति में बड़ी अजीब-अजीब हरकतें कर बैठता हूँ।" अन्तिम वाक्य पर उन्होंने अधिक जोर दिया और मुस्कराए भी।

मृणाल बाबू को उस समय उनके माथ भोजन करना उचित नहीं लगा। बहाना बना दिया। "मैंने कुछ लोगों को घर पर आमन्त्रित किया है—"

शिवनाथ बाबू ने और भी सरल होकर कहा, "ठीक है, आगामी रात हम पर इम्न रही।" उस समय उनके चेहरे पर टोक बैठा ही भाव आ गया था जैसा उस समय था, जब वे उन्हें मर्जी-मद के लिए आमन्त्रित करते उनके फुर्लट पर ही गए थे।

"हाँ, शायद आप राय के बारे में कुछ कह रहे थे—मुबह। मैं उसे मूब जानता हूँ—" शिवनाथ बाबू बड़ी जोर से हँस दिए।

"आपने एक बहानी सुनी है—एक खानाबे मेहिया नदी के किनारे बैठा अपनी जीभ मार रहा था—मैंने गरदूबे का कुछ भोजन खाया।

मगरमच्छ को यह बात निहायत बेईमानी की लगी। जब भेड़िया पानी पीने के लिए झुका तो मगरमच्छ ने चट भेड़िये का मुँह पकड़ लिया और बोला, “निकाल खरबूजे का सेत, अकेला रा गया ?”

“भेड़िया जोर से हँस दिया और बोला, निकल वे खरबूजे के सेत ! पीछे के रास्ते से। मगरमच्छ पीछे की तरफ लपका तो भेड़िया गायब था।”

शिवनाथ बाबू द्वारा सुनाई गई इस कहानी पर मृणाल बाबू को हँसी आ गई। लेकिन शिवनाथ बाबू गम्भीर होकर बोले, “आप नए-नए आदमी हैं, धीरे-धीरे समझने की कोशिश कीजिए... आप इन अफसरों के रास्ते नहीं जानते...”

अपने लिए ‘नए-नए’ विशेषण का प्रयोग उन्हें पसन्द नहीं आया। दबी आवाज में बोले, “बाबूजी, आखिर मेरा नयापन कब तक बना रहेगा। आपके अफसर भी मुझे नोसिखिया ही समझते हैं।” कहकर मृणाल बाबू को लगा उन्होंने अपनी विसात से ज्यादा बात कह दी है। अतः मुस्कराकर बात को हल्का करने का प्रयत्न किया।

शिवनाथ बाबू के चेहरे पर सुबह वाली कठोरता फिर उद्भासित हो गई।

“मृणाल बाबू, आपको मैं राजनीतिज्ञ मान बैठा था। लेकिन आप तो भावुक बालक निकले, मिठाई पाकर हँस देते हैं ज़रा-सी चाट खाकर रोने लगते हैं। राजनीतिज्ञ लोहे के समानधर्मा होते हैं।...लोहा जब तक ठंडा रहता है चोट करने की स्थिति में रहता है...”

शिवनाथ बाबू कुछ और भी कहते, परन्तु मिस्टर राय के एकाएक अन्दर चले आने के कारण खामोश हो गए। मृणाल बाबू को अपने-आपको उस तनाव की स्थिति से वापस लाने में कुछ समय लगा लेकिन वे सोचने लगे, ‘मंत्री होकर भी शिवनाथ बाबू से मिलने के लिए मुझे आज्ञा लेनी पड़ती है। मिस्टर राय सचिव होकर भी, अपने मन्त्री के बैठे हुए, बेहिचक चले आते हैं...’

शिवनाथ बाबू मिस्टर राय से डाँटते हुए बोले, “मिस्टर राय, मैं आदेशों के पालन को अधिक महत्व देता हूँ। मेरे द्वारा नियुक्त किया गया सभा-सचिव भी मुख्यमंत्री है। जनता का प्रत्येक प्रतिनिधि सरकार का अभिन्न अंग है। जो शिकायतें मैंने सुनी हैं, मविप्य में उनको दोहराया जाना मुझे पसन्द नहीं होगा। शासन के मामले में भी किसी तरह का हस्तक्षेप मेरे लिए असहनीय है....”

अन्तिम वाक्य कहते समय मुख्यमंत्री ने मृणाल बाबू की ओर देख लिया था। कुछ रुककर पुनः कहा, “जनता के अधिकारों का दायित्व मुख्यमंत्री पर है—वह अपने अधिकारों को ही मन्त्रियों, सचिवों यानी पूरी सरकार के अंगों में आवश्यकतानुसार बाँटता है। लेकिन किसी की भी ज़रा-सी चूक की जवाबदेही मुख्यमंत्री से होती है....”

शिवनाथ बाबू बोझते-बोझते रुक गए। मृणाल बाबू और मिस्टर राय पर बारी-बारी से मञ्जर डाली। दोनों नज़रों में अन्तर शरार था, परन्तु मृणाल बाबू को लगा जैसे मिस्टर राय पर पड़ने वाली उस डाँट में उनका भी बराबर का हिस्सा है। अन्तर उतना ही था कि मिस्टर राय गर्दन झुकाए खड़े थे और मृणाल बाबू उनके बराबर वाले मोर्के पर बैठे थे।

शिवनाथ बाबू ने मिस्टर राय से उसी टोन में पूछा “आप फाइल लाए ?”

मिस्टर राय ने अपनी बगल से फाइल निकालकर उनकी ओर सादर बढ़ा दी। हाथ में लेते हुए बिना उसकी ओर देखे मुख्यमंत्री ने कहा “अब आप जा सकते हैं, लेकिन मेरी बात का ध्यान रखिए।”

मृणाल बाबू ने देखा, मिस्टर राय ड्राइंगरूम के दरवाज़े से निकलते हुए हल्का-सा मुस्कराए हैं। उनके बाहर चले जाने पर शिवनाथ बाबू ने वही फाइल मृणाल बाबू की ओर बढ़ा दी और कहा, “कल आपको ही विधान सभा में उत्तर देना है।” उनके कथन में आशा का स्वर भी था।

मृणाल बाबू गर्दन नीची करके फाइल को उलट-पुलट कर देखने

लगे । उनको लग रहा था कि शिवनाथ बाबू उनके चेहरे तर होने वाली हर प्रतिभिया को नोट कर रहे हैं । लेकिन जब शिवनाथ बाबू बोले, "यैसे तो घर भी जाकर इन फ्राइल को देगा जा सकता है पर आप मेरे नामने ही देगा लें । मैं अभी बाहर जा रहा हूँ कल मुक्त सोभा विधान-सभा पहुँचूँगा—आप भावुक और आस्थावादी व्यक्ति हैं । कभी बाद में फ्राइल देनाकर आपकी लगे, आपके आदर्श दृढ़ रहे हैं—यदि नव में पमन्द नहीं करूँगा ।"

मृणाल बाबू को लगा कि दूसरे मन्दों में उनसे भी यह कहा जा रहा है—“मैं आदेशों के पालन को अधिक महत्त्व देता हूँ....।”

शिवनाथ बाबू उठ गए, अन्दर जाते हुए पूछा, “आप नमज गए ?”

मृणाल बाबू को नमस्कार करने का अवसर भी नहीं मिल सका ।

मृणाल बाबू ने कार में बैठते हुए सोचा—‘तनार की स्थिति में शिवनाथ बाबू अजीब-अजीब हरकतें कर बैठते हैं....।’

घर जाकर जब उन्होंने फ्राइल गोली, वही औद्योगिक यस्ती वाला मामला था । शब्दों में थोड़े से परिवर्तन के साथ वही उत्तर लिखा था जो शान्तिशरणजी ने विधान-भवन में दिया था ।

मृणाल बाबू को लगा, विधान सभा का प्रत्येक सदस्य वही वाक्य दोहरा रहा है जो उन्होंने शान्तिशरण के लिए कहा था कि ‘हड्डी चिचो-डने वाले कुत्ते हमें नहीं चाहिए ।’

शिवनाथ बाबू मुस्कराते हुए कह रहे हैं, “शान्तिशरण तो कमजोर और वेईमान थे—अब तो विधान सभा का सबसे ईमानदार और आपका विश्वासपात्र मिनिस्टर भी वही बात कह रहा है....।”





